सूची पत्र।

शुद्धाशुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	१३	अनस्वार	अनुसार
२०,	१	अङ्गीकार	अनङ्गीकार
२२	१९	युग	युज्
२४	११	उन्मत	उन्मत्त
२६	१७	ΣΤΕΑ	ΣΤΕΛ
"	१९	खींच	खींच
२७	८	ΤΙΔ	ΤΙΛ
४१	६	ΟΙΚ	ΟΙΧ
४६	४	α	α से
..	१०	πλὺ	πλυθ
४७	५	में	में अभ्यास
५२	२	῾ΡΓ	῾ΡΑΓ
५४	११	γνυ	γνυ
५७	२	ΚΑΑΤ	ΚΛΑΥ
५८	१०	σ	α
६२	१	तीन	च्यार
७२	८	κεκρῦφων	κεκρύφθων
७७	८	के	के वास्ते
७९	१२	εμιγινυτην	εμιγνύτην
८१	१५	διδοσον	διδοσθον

८६	१३	न्यनाधिक	न्यूनाधिक
९५	१०	ζῆν	ζῆν
९६	१५	θανετ	θανεῖ
९८	४	ΒΛΑ	ΒΑΛ
१०१	५	ποιήσσται	ποιήσεται
१०६	१२	σπερησομ-ενο	σπαρησομε-νο
११२	१५	γεγοναν	γεγονοτ
११९	१३	λελουμενο	λελυμενο
१२३	१०	εληλυθοντ	εληλυθοτ
१२८	४	ἔχτον	ἔχετον
१४४	६	ενεχειη	ενεχθείη
१५४	१२	θνε	θνα
"	१३	παρθ	πραθ
१५६	१	ἐδειται ई-	ἐδειται ईत्या-
१६०	७	βασνο	βασανο
१६१	२	διχο	διχα
..	३	कर्य्य	कर्म्म
१६२	४	घमएड	घमण्ड
१६५	६	πενεθες	πενθες
"	७	घटान्	चटान
१६६	३	σχευος	σχευες

"	१२	στηθος	στηθες
"	२०	σφε अपना(त्व)-	कुछ नहीं
१६७	९	मक्षत	तक्षन
१६८	२१	गाहिरा	गहिरा
१७२	१	न वरन	वरन
१७३	२	मतवान	मत वा न
"	११	आधिक्य	आधिक्य
१७८	५	की	को
१८१	२	βασιλεσ-	βασιλισσα
१८२		यह आप से	(वह आप)से
१८३	१२	σωματιχ	σωματιχο
१८६	३	से	में
१८७	१०	बूह	इह
१८८	१६	χλλιον	χαλλιον
१८९	१५	वरिष्ठ	वरिष्ठ
१९१	९	αγδοηχον-	ογδοηχοντα
१९५	१५	अल्प प्राणान्वित	अल्पप्राणान्वित
२०५	१	समाव	अभाव
२१३	७	के	को ८
"	५	होता	होना
"	६	अवश्यक	आवश्यक

२१६	५	तव	सब
२२३	१५	ὁ (सो)	ὁ
२२६	१५	ὄδατ	ὕδατ
२३०	१३	χρείτους	χρείττους
२३५	२	ἁπλόη } ἁπλῆ	ἁπλόην } ἁπλῆν
२५४	१	सम्पूर्णातां	सम्पूर्णता
"	१०	और	ओर
२५८	१०	विरारित	विचारित
२६०	१३	और	ओर
"	१५	प्रत्येके	प्रत्येक
२६१	२	τα κατ' εμε	कुछ नहीं
"	१७	और	ओर
२७०	१४	आन्त	आता
२७६	१५	साथ नहीं	साथ
२७७	३	γένεται	γένηται
२८१	८	दारिद्र	दरिद्र

यवनभाषा
का
व्याकरण

प्रथम अध्याय । अक्षरों का वर्णन

१। यवनभाषा में २४ अक्षर हैं।यथा।

मूर्त्ति।		नाम।	उच्चारण।
A	α	ऑल्फॉ	आ वा ऑ
B	β	बेतॉ	व
Γ	γ	गॉम्मॉ	ग वा ङ
Δ	δ	देल्तॉ	द
E	ε	एप्सीलॉन	ऍ
Z	ζ	ज़ेतॉ	ज़
H	η	एतॉ	ए
Θ	θ	थेतॉ	थ
I	ι	योतॉ	इ वा ई वा य
K	κ	कॉप्पॉ	क

Λ λ	लॉम्ब्डॉ	ल
M μ	न्यू	म
N ν	न्यु	न
Ξ ξ	क्सी	क्स
O ο	ऑमीक्रॉन्	ऑ
Π π	पी	प
P ρ	ह्रों	र
Σ σ ς	सिग्मॉ	स
T τ	तॉउ	त
Υ υ	उप्सीलोन्	उ वा ऊ
Φ φ	फी	फ
X χ	खी	ख
Ψ ψ	प्सी	प्स
Ω ω	ओमेगॉ	ओ

२। पहिली पंक्ति में जो प्रथम २ मूर्ति लिखी हुई हैं सो वाक्य के पहिले शब्द के आदि में और मनुष्य वा स्थान के विशेष

नाम के आदि में आती हैं द्वितीय २ मूर्ति और सब कहीं आती हैं और ग्यारहवें अक्षर की द्वितीय और तृतीय मूर्तिमें य-ह अन्तर है कि तृतीय जो है सो शब्द के अन्तही मे और द्वितीय मूर्ति और स-ब कहीं आती है जहां प्रथम मूर्ति के आने का नियम नहीं है।

३। हिन्दी में ओ ए ओ इन तीन स्वरों का ह्रस्वत्व नहीं होता है परन्तु यवनभाषा में होताहै और इस ह्रस्वत्व का चिह्न हम ने ॅ स्वर के ऊपर लिख दिया। यथा ऑ ऍ ऑ। यदि कोई कहे कि आ का ह्रस्वत्व अ है तो यह ठीक नहीं है क्योंकि अ का उच्चारण आ के उच्चारण से भिन्नहै और A का उच्चारण अ नहीं है वरन् ह्रस्व ऑ है।

४। फिर Y का उच्चारण हिन्दी में कभी नहीं होता है पर गुरुके मुख से सीखना आवश्यक है। यह यू वा उ के उच्चारण से कुछ थोड़ा सा मिलताहै। हमने नीचे के

चिह्न से उस को बताया । यथा उ ऊ ।

५ । Γ का उच्चारण χ वा γ वा दूसरे γ के पहिले ङ होता है और सब कहीं ग ।

६ । I का उच्चारण शब्द के आदि में दूसरे स्वरके पहिले य होता है और सब कहीं इ वा ई ।

७ । Z का ठीक उच्चारण महाराष्ट्रों से होता है उत्तरदेशीयों से नहीं ।

८ । इन २४ अक्षरों से अधिक पुराने समय में और एक था जो छठवां था और उस की मूर्त्ति F Ϝ था । उस का उच्चारण व से मिलता था । परन्तु पीछे से उस का उच्चारण और तब उसका लेखन भी छोड़ दिया गया और अब केवल ६ छः का अंक समझा जाता है ।

९ । फिर और दो मूर्त्ति हैं जो अक्षर नहीं कहलाते हैं पर उच्चारण के लिये आवश्यक है सो अल्पप्राण और महाप्राण कहलातेहैं । महाप्राण का उच्चारण ह है और

अल्पप्राण केवल गले के खोलने को बनाता है। अल्पप्राण की मूर्ति ' और महाप्राण की ' है। वे स्वरकी बड़ी मूर्ति की बाईं ओर और उसकी छोटी मूर्ति के ऊपर लिखे जाते हैं पर संयुक्त स्वर में दूसरे स्वरके ऊ· पर लिखे जाते हैं। यथा Ἀ Ἁ ἀ ἁ εὐ εὑ केवल शब्द के आदिही में ये आते हैं।

१०। महाप्राण की मूर्ति ρ के साथ भी आता है जब कि वह शब्द के आदि में अथवा दूसरे ρ के पीछे आताहै। यथा ῥω πυῤῥο। इस दशा में ρ का उच्चारण अधिक बलसे होताहै।

११। इन से अधिक और तीन मूर्ति है जो बल कहलाते हैं इस लिये कि शब्द के जिस अङ्क को बलके साथ पढ़ना है उसी अङ्क के स्वरके ऊपर लिखेजाते हैं सो ये हैं तीक्ष्ण ´ गुरु ` लघु ~। इन का सकल भेद हम यहां नहीं लिखसकते हैं

केवल इतनाही कहते हैं कि प्रश्नवाचक शब्दों में तीक्ष्ण बल और जहां दो स्वर आपस में मिल गये तहां प्राय ब्रूतबल आताहै। यथा ἄνθρωπος πότε καὶ δὲ τῶν ἧς।

१२। इनसे अधिक स्थितिसूचक प्रश्नसूचक और विस्मयसूचक भी मूर्ति हैं। स्थितिसूचक मूर्ति तीन हैं अर्थात् . जो περιοδο कहलाताहै और · जो κωλο कहलाताहै और , जो κομματ कहलाताहै। Περιοδο अधिक विलम्बकी स्थिति κωλο उस से न्यून और κομματ सब से थोड़े विलम्ब की स्थिति को बताता हैं। प्रश्नसूचक मूर्ति ; और विस्मयसूचक मूर्ति ! है।

१३। फिर और एक मूर्ति है सो शब्द के अन्तिम स्वर के लोप को बताताहै। यथा ἐπι के स्थाने ἐπ' और ἀνα के स्थाने ἀν' इस को अस्वशाश की मूर्ति

कभी नहीं समझना चाहिये।

१४। A ι υ ये तीन स्वर कब दीर्घ और कब ह्रस्व हैं यह लेखन से प्रगट नहीं होता है। एक एक शब्दमें उन का दीर्घत्व वा ह्रस्वत्व सीखने होगा।

१५। निरे स्वरों से अधिक यवनभाषा में कई एक संयुक्त स्वर कहलाते हैं सो ये हैं।

मूर्ति।	उच्चारण	मूर्ति।	उच्चारण।
αι	आइ	αυ	आउ
ει	ऐ	ευ	ओ
οι	ओइ	ηυ	एउ
υι	उइ	ου	ऊ

जब किसी स्वर के नीचे ι लिखा जाता तब उसका उच्चारण नहीं होता है।

यथा Aι ᾳ Hι ῃ Ωι ῳ।

जब दो स्वर एक साथ आते हैं परसंयुक्त नहीं बरन् उनका पृथक २ उच्चारण होता है तब दूसरे के ऊपर ·· ऐसे

दो बिन्दु लिखी जाती हैं। यथा αϊ ηϋ।

१८। व्यंजनों के कई एक गण हैं सो निम्नलिखित चक्र से समझ पड़ेंगे।

	अघोष।	घोष।	महाप्राणान्वित।	सानुनासिक।	संयुक्त।
कण्ठस्थ।	κ	γ	χ	γ	ξ
दन्त्य।	τ	δ	θ	ν	ζ
ओष्ठस्थ।	π	β	φ	μ	ψ
तालव्य।	λ ρ ς				

इति अक्षरों का वर्णन।

अभ्यास पत्र।

Δεῦτε πρός με πάντες οἱ κοπιῶντες καὶ πεφορτισμένοι, κἀγὼ ἀναπαύσω ὑμᾶς. Ἄρατε τὸν ζυγόν μου ἐφ' ὑμᾶς, καὶ μάθετε ἀπ' ἐμοῦ, ὅτι πρᾷος εἰμι

καὶ ταπεινὸς τῇ καρδίᾳ· καὶ εὑρήσετε ἀνάπαυσιν ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν. Ὁ γὰρ ζυγός μου χρηστός, καὶ τὸ φορτίον μου ἐλαφρόν ἐστιν.

द्वितीय अध्याय —— संधिका वर्णन।

१७। संस्कृत में जितनी संधि होती है उस से बहुत थोड़ी यवनभाषा में होती है तो भी इस थोड़ी सी संधि को जानना अतिआवश्यक है।

अथ व्यंजनों की संधि।

१८। जब एक शब्द के अन्तमें कोई अघोष आवे और दूसरा शब्द महाप्राण से आरम्भ हो तब उक्त अघोष महाप्राणान्वित होगा। यथा ἀπ' (जो ἀπο से निकला देखो १३) और οὗ मिलके ἀφ' οὗ होगा। वैसाही κατ' (जो κατα

से निकला) और ὁλου मिलके καθ' ὁλου होगा। समासों में भी वैसाही होता है। यथा δεκα और ἡμερα बहुव्रीहि समास होके δεχημερο होगा।

१९। जब धातु दुहराया जाता है (जैसा संस्कृत में लिट् और जुहोत्यादि गण में होता है) तब महाप्राणान्वित अक्षर अघोष में बदला जाता है। यथा ΘE धातु से θιθημι नहीं वरन् τιθημι और ΦΥ धातु से φεφυκα नहीं वरन् πεφυκα होता है।

२०। जब धातु अथवा किसी मूलशब्द के आदि में अघोष है और उस के अन्त में महाप्राणान्वित अक्षर है और किसी कारण से उस का महाप्राण निकल जाता है तब वह आदि का अघोष महाप्राणान्वित होता है। यथा TPEΦ धातु के पीछे जब σ लगे तब φ उस से

मिलके ψ होगा और तब τ θ होजायेगा। यथा $\theta\rho\epsilon\psi$। वैसा ही $\tau\rho\iota\chi$ के पीछे जब σ लगे तब $\theta\rho\iota\xi$ होगा।

२१। समासों को छोड़के और २ शब्दों में तीन व्यंजन एक साथ प्राय नहीं रह सकते हैं वरन् उन में से एक छूट जाता है। यथा $\dot{\epsilon}\sigma\varphi\alpha\lambda$ और $\sigma\theta\alpha\iota$ मिलके $\dot{\epsilon}\sigma\varphi\alpha\lambda\theta\alpha\iota$ होगा।

२२। जब दो असम व्यंजन मिलते हैं तब प्राय पहिला बदलके दूसरे के समान होता है। यथा ΓΡΑΦ धातु τo प्रत्यय से मिलके $\gamma\rho\alpha\pi\tau o$ और $\delta\eta\nu$ प्रत्यय से मिलके $\gamma\rho\alpha\beta\delta\eta\nu$ होता है। वैसाही ΛΕΓ धातु $\theta\epsilon\nu\tau$ प्रत्यय से मिलके $\lambda\epsilon\chi\theta\epsilon\nu\tau$ और $\tau\alpha\iota$ प्रत्यय से मिलके $\lambda\epsilon\kappa\tau\alpha\iota$ होगा। परन्तु $\dot{\epsilon}\kappa$ उपसर्ग का κ कभी नहीं बदलता है।

२३। जब दो अघोषों में दूसरा किसी कारण से बदलता है तब पहिला भी वैसा·

ही बदलता है। यथा ἑπτα से ἑβδομο निकलता है और νυκτ' और ἡμεραν अव्ययीभाव समास होके νυχθημερον होता है।

२४। जब शब्द के निर्माण में निरे स्वर (अर्थात् जो संयुक्त स्वर न हो) के पीछे ρ आता है तब ρ दुहराया जाता है। यथा ἀ और 'PAΦ धातु से ἀῤῥαφο और περι और 'PE धातु से περιῤῥο होगा। देखो १०।

२५। जब β वा φ के पीछे σ आता है तब वह π होके ψ बन जाता है और वैसाही जब γ वा χ के पीछे σ आता है तब वह κ होके ξ बन जाता है। यथा Ἀραβ और σι मिलके Ἀραψι और ὀνυχ और σι मिलके ὀνυξι होता है। देखो २०।

२६। M से पहिले πβφ प्रायः μ और κχ प्रायः γ और τδθζ प्रायः σ होते हैं।

यथा TTΠ धातु से τετυμμενο और TTX धातु से τετυγμαι और AΔ धातु से ᾀσματ और βαπτιζ से βαπτισματ होते हैं।

२७। Tδθζ इनसे τ वा θ के पहिले σ होते हैं और σ के पहिले प्राय छूट जाते हैं। यथा ΠΙΘ धातु से πειστεο और ΦΡΑΔ धातुसे φρασι और σωματ से σωμασι होते हैं।

२८। N कण्ठस्थ अक्षरों के पहिले γ (अर्थात् ङ) और ओष्ठस्थ अक्षरों के पहिले μ और λ μ ν ρ के पहिले इन्हीं के सदृश और प्रत्ययों के σ के पहिले प्राय लुप्त होजाता है। यथा συν और γενες मिलके συγγενες और συν और ΦΕΡ मिलके συμφερ और ἐν और MEN मिलके ἐμμεν और δαιμον और

$\sigma\iota$ मिलके $\delta\alpha\iota\mu o\sigma\iota$ होते हैं। प-
रन्तु $\varepsilon\nu$ उपसर्ग ρ और σ के पहिले
भाव नहीं बदलता है।

२४। जब $\nu\tau$ $\nu\delta$ $\nu\theta$ के पीछे σ
आताहै तब इनका लोप होता है औ-
र अवश्य ह्रस्व α ι υ दीर्घ और
अवश्य ε वा o यथाक्रम $\varepsilon\iota$ वा $o\upsilon$
हो जाता है। यथा $\pi\alpha\nu\tau$ से $\pi\alpha\sigma\iota$
और $\zeta\varepsilon\upsilon\gamma\nu\upsilon\nu\tau$ से $\zeta\varepsilon\upsilon\gamma\nu\upsilon\sigma\iota$
और $\tau\upsilon\pi\tau o\nu\tau$ से $\tau\upsilon\pi\tau o\upsilon\sigma\iota$
और $\lambda\varepsilon\chi\theta\varepsilon\nu\tau$ से $\lambda\varepsilon\chi\theta\varepsilon\iota\sigma\iota$ और
$\Pi EN\Theta$ से $\pi\varepsilon\iota\sigma o\mu\alpha\iota$. होते
हैं।

अथ स्वरों की संधि।

२०। बहुत ह्रस्वस्वरान्त शब्द ऐसे हैं कि

जब दूसरे शब्द के आदि में कोई स्वर आता है तब वह अन्तिम स्वर लुप्त होता है। देखो १३ और १८ ॥

३१। थोड़े शब्द ऐसे हैं कि इन का अन्तिम स्वर वा संयुक्त स्वर अगिले शब्द के आदिम स्वर से मिल जाता है। यथा και ἐγω मिलके κἀγω और το ἐναντιον मिलके τοὐναντιον होते हैं।

३२। जब एक शब्द के निर्माण में दो स्वर वा संयुक्त स्वर एक साथ आते हैं तब निम्नलिखित चक्र के अनुस्वार मिल जाते हैं। यथा।

	आदिम स्वर									
अन्तिम स्वर	α	ε	η	ι	ο	ω	αι	ει	οι	ου
α	α	α	α	ᾳ	ω	ω	αι	ᾳ	ῳ	ω
ε	η वा ει	ει वा η	η	ει	ου	ω	ῃ	ει	οι	ου
η		η		ῃ						
ι	ι	ι		ι						
ο	ω वा ου	ου	ω	οι	ου	ω		ου	οι	ου
υ	υ	υ								
ω				ῳ						

जानना चाहिये कि ६ α मिलके प्राय ७ होताहै केवल थोड़े रूपों में ६ । और ६ ६ मिलके प्राय ६ । केवल कभी २ ७ होता है और ० α मिलके प्राय ω पर थोड़े ही रूपों में ० ʋ होता है। ऊपर के चक्र में जहां जहां कुछ नहीं लिखा गया तहां जानना चाहिये कि संधि नहीं होती है।

इति संधि का वर्णन।

अथ क्रियाओं का वर्णन।

तृतीय अध्याय   धातु पाद।

१ क्रियाओं के विषय में तीन बातें समझनी आवश्यक है अर्थात् १म धातु २य प्रत्यय ३य प्रत्ययों के लगाने के पहिले धातु

के कौन से रूप होते हैं। धातु तो घर की नेव के सदृश है प्रत्ययों के लगाने के निमित्त धातु में जो कुछ लगता है सो घरकी भित्तियों से मिलता है और प्रत्ययों को छप्पर से मिलान कर सकते हैं।

३३। अब मुख्य २ धातु अर्थ समेत नीचे लिखते हैं।

'AΓ ले आ वा ले जा
'AF जोड़
'AΓEP एकट्ठा कर
'AEIΔ गा
'AIPE ले
'AIΣΘ जानले
'AITE मांग
'AKOY सुन
'AΛ कूद
'AΛEΞ बचा
'AΛIΦ लेप (लिप)
'AΛΛAΓ बदलदे
'AΛO पकड़ा जा
'AMAPT चूक
'AMEIB बदल
'ANY पूराकर
'AΠ लगा (आप)
'AP उठा
'AP जोड़
'APE प्रसन्न कर
'APKE रक्षा कर वा बड़न हो

ἈΡΝΕ	अङ्गीकार कर	ἈΣΚΕ	अभ्यास कर
ἈΡΠΑΓ	छीन	ἈΥ	बढ़ा
ἈΡΧ	पहिला हो वा आरम्भ कर		
ΒΑ	जा (गा)	ΒΛΕΠ	देख
ΒΑΛ	डाल	ΒΟΣΚ	चरा
ΒΑΠ	डुबो	ΒΟΥΛ	चाह
ΒΑΣΤΑΓ	उठा	ΒΡΕΧ	भिंगा
ΒΑΣΤΑΔ	उठा	ΒΡΟ	खा
ΒΛΑΒ	हानि कर	ΒΛΑΣΤ	उग
ΓΑΜ	विवाह कर	ΓΕΝ	हो (जन)
ΓΕΛΑ	हंस	ΓΝΟ	जान (ज्ञा)
ΓΕΜ	भर जा	ΓΡΑΦ	लिख
ΔΑΚ	दान्तसे काट (दंश)	ΔΕΜ	घर बना
ΔΑΜ	वशीभूत कर (दम)	ΔΕΡ	चर्म निकाल
ΔΕ	बान्ध	ΔΕΧ	ग्रहण कर
ΔΕ	अभाव हो	ΔΙ	डर
ΔΕΙΚ	दिखा (दिश)	ΔΙΔΑΧ	सिखा

ΔΟ दे (दा)
ΔΟΚ ज्ञान पड़
ΔΡΑ भाग (द्रु)

‘Ε डाल
‘Ε पहिन
’ΕΑ रहन दे
’ΕΓΕΡ जगा
‘ΕΔ बैठ (सद)
’ΕΔ खा (अद)
’ΕΘ रीतिकी भान्तिसे कर
’ΕΙΚ समान हो
’ΕΙΚ वशीभूत हो
’ΕΙΡΓ बन्द कर
‘ΕΛ ले
’ΕΛΑ हांक
’ΕΛΕΓΧ खण्डन कर
‘ΕΛΚ घसीट

ΖΑ जी (जीव)
ΖΕ उबल

ΔΡΑ कर
ΔΥ प्रवेश कर
ΔΥΝΑ सक

’ΕΛΠ आशा कर
’ΕΛΥΘ जा वा आ
’ΕΜ पेटमेंसे फेंकदे (वम)
’ΕΝΕΚ उठा
’ΕΠ कह (वच)
‘ΕΠ पीछे होले
’ΕΡ कह
’ΕΡ पूछ
’ΕΡΧ जा वा आ
’ΕΣ हो रह (अस)
‘ΕΥΔ सो
‘ΕΥΡ ढूंढके पा
’ΕΥΧ प्रार्थना कर
’ΕΧΘ बैर कर
ΖΗΤΕ ढूंढ
ΖΥΓ जोड़ (युग)
ΖΩ कटि बांध

'HΔ आनन्द कर (स्वाद)	'HΣ बैठ (आस)
'HK आ झुक	
	ΘEΛΘ 'EΘEΛ चाह
ΘAN मर	ΘEΥ दौड़ (धाव)
ΘAΥ आश्चर्य कर	ΘIΓ छू
ΘE रख (धा)	ΘPAΥ तोड़ डाल
ΘEA ध्यान से देख	ΘΥ यज्ञ कर (हु)
'I जा (इ)	'IK पहुंच
'IA चंगा कर	'IΛA प्रसन्न कर
'IΔ देख वा जान (विद)	
KAΛE बुला वा नाम रख	KΛAΥ रो
KAΛΥΠ ढांप	KΛEI बन्द कर
KAM थक (श्रम)	KΛIN झुका
KAMΠ झुका	KΛΥ सुन (श्रु)
KAΥ जला	KOIMA सुला
KEI पड़ा रह	KOΠ काट
KEP मूंड	KOPE तृप्त कर
KINE चला	KOMIZ ले आ वा प्राप्त कर
KΛA तोड़	KPA मिला

KPAΓ चिल्ला
KPEMΛ लटका
KPIN विचार कर
KPΥB छिपा (गुप)
KTA पा
KTEN वध कर
KΥ गर्भिणी हो
KΥΦ झुक

ΛAB पा (लभ)
ΛAΘ छिप
ΛAΛE बोल
ΛAMΠ चमक
ΛAX भाग्य से पा
ΛEΓ कह
ΛIΠ छोड़
ΛOΥ स्नान कर
ΛΥ गांठ आदि खोल

MAN उन्मत हो (मद)
MAΘ सीख
MAX लड़
MEΘΥ मतवाला हो
MEΛ चिन्तायमान हो
MEΛΛ करने पर हो
MEN रह (UP)
MEP भाग पा
MHNΥ बता
MIΓ मिला (मिश्र)
MIME नकल कर
MNA स्मरण कर (म्ना)
MΥ आंख [illegible]

NE कात (नह)
NEM बांट
NEΥ पैर
NEΥ सिर झुकाके स्वीकार
NIΠ हाथ आदि धो

'OΔ	गन्धित हो	'ONA	लाभदायक हो
'OI	समझ	'OΠ	देख
'OI	उठा	'OPA	देख
'OIΓ	द्वार आदि खोल	'OPEΓ	आगे की ओर बढ़
'OIK	चला जा	'OPYΓ	खोद
'OΛ	नाश हो वा कर	'OPXE	नाच
'OM	किरिया खा	'OΦEΛ	धार

ΠAΓ	दृढ़ता से लगा	ΠIΘ	मना
ΠAΘ	सुखदुःख भोग	ΠΛA	भरदे (पृ)
ΠAI	मार	ΠΛAΓ	मार
ΠAIΓ	ठट्ठा कर	ΠΛAΔ	सांचे मे ढाल
ΠAY	करने को छोड़	ΠΛEK	मरोड़
ΠEMΠ	भेज	ΠΛEY	नाव पर चल (प्लु)
ΠEΠ	पका (पच)	ΠNEY	वायु बह
ΠEPΘ	भूमि आदि नाश कर	ΠNIΓ	गला घोट
ΠET	गिर (पत)	ΠO	पी (पा)
ΠET	उड़	ΠOIE	कर वा बना
ΠETA	फैला	ΠOP	चल
ΠI	पी (पा)	ΠPA	जला

ΠΡΑ बेच
ΠΡΑΓ काम कर
ΠΡΙΑ कीन
ΠΤΥ थूक
ΠΤΥΧ लपेट
ΠΥΘ बूझ
ΠΩΛΕ बेच

ʽΡΑ छिड़क
ʽΡΑΓ तोड़
ʽΡΑΦ सी
ʽΡΕ बह
ʽΡΕΠ शुरुतर हो
ʽΡΙΦ फेंक (तिप)
ʽΡΥ बह
ʽΡΥ छुड़ा
ʽΡΩ बलवान कर

ΣΑΠ सड़
ΣΒΕ बुझा
ΣΕΒ पूज
ΣΕΙ हिला
ΣΕΧ लिये रह
ΣΚΕΔΑ बिथरा
ΣΚΕΠ ध्यानसे देख
ΣΚΗΠ टेक
ΣΜΑ पोंछ
ΣΠΑ खींच
ΣΠΕΝΔ नपावन कर
ΣΠΕΡ बो
ΣΠΕΥΔ शीघ्र कर
ΣΤΑ खड़ा हो
ΣΤΑΓ बून्द२ होके गिर
ΣΤΕΓ ढांपके जल्ला गम्य कर
ΣΤΕΑ मेज वा ठीक करके रख
ΣΤΕΝ आह मार (स्तन)

ΣΤΕΡΓ	प्रेम कर	ΣΥΡ	घसीट
ΣΤΕΡΕ	हीन कर	ΣΦΑΓ	वध कर
ΣΤΙΓ	गोद	ΣΦΑΛ	ठोकर खिला
ΣΤΡΕΦ	घूमा	ΣΦΙΓΓ	गला घोंट
ΣΤΡΟ	बिछा (स्तृ)	ΣΧΙΔ	छेद (छिद्)
ΣΤΥΓ	वैर कर	ΣΩ	बचा
ΤΑΓ	क्रमसे रख	ΤΙ	बदला दे
ΤΑΡΑΧ	घबरा	ΤΙΔ	नोच
ΤΑΦ	क़ब्र दे	ΤΛΑ	डरख उठा
ΤΕΓΓ	भिगो	ΤΡΑΓ	खा
ΤΕΚ	जन	ΤΡΕΠ	फेर
ΤΕΜ	काट	ΤΡΕΦ	पोस
ΤΕΝ	तान (तन)	ΤΡΕΧ	दौड़
ΤΕΡ	घिस (तृ)	ΤΡΩΓ	खा
ΤΕΡΠ	आनन्द दे(तृप)	ΤΥΠ	मार
ΤΗΡΕ	रक्षा कर(त्रा)	ΤΥΧ	अदृष्टसे हो
Υ	बरस	ΥΦΑΝ	बिन
ΦΑ	कह (भा)	ΦΑΓ	खा (भक्ष)

ΦAN	चमक	ΦPAΓ	रोक
ΦEN	वधकर(हन)	ΦPAΔ	कह
ΦEP	उठा (भृ)	ΦPIK	रोमाञ्चित हो
ΦΘA	पहिले कर वा हो	ΦΥ	हो (भू)
ΦΘEΓΓ	शब्द कर	ΦΥΓ	भाग
ΦΘEP	विगड़	ΦΥΛAK	पहरा दे
ΦΘI	घट वा क्षय हो	ΦΥP	सान
ΦΛEΓ	जल		
XAN	जभा	XPI	तेल मल
XAP	आनन्द कर(हृष)	XPA	काम में ले आ
XAPAK	पत्थर आदि में खोद	XPE	आवश्यक हो
		XPΩ	रंग दे
XPA	ईश्वरवाणी कह	XΥ	उण्डेल
ΨA	मल	ΨEΓ	निन्दा कर
ΨAΛ	वीणा आदि वजा	ΨEΥΔ	झूठ कह
ΨAΥ	छू	ΨΥX	ठण्डा कर
ΩΘ	ढकेल		

१४। इन पातओं से अधिक और बहुत क्रियाएं हैं जो पातओं वा नामों से प्राय α. ε ο ευ αδ ιδ υδ αν. υν लगाने से बनाये हुए हैं। इन का विभेद दिखाने के लिये हम पातओं को बड़े २ अक्षरों से लिखेंगे और अन्यान्य क्रियाओं को छोटे २ अक्षरों से।

चतुर्थ अध्याय — क्रियाओं के रूप।

१५। पहिले जानना चाहिये कि क्रिया की भावना जो मन में होती है सो बहुत प्रकारों से हो सकती है परन्तु किसी भाषा में एक २ प्रकार की भावना एक २ रूपसे प्रगट नहीं किई जाती है। क्रिया की भावना विशेष छः भानि के प्रकारों से होती है अर्थात् कर्तृत्व-भाव काल पुरुष वचन लिङ्ग

२९। कर्तृत्व तीन प्रकार का है अर्थात् सकर्तृक परकर्तृक आत्मकर्तृक। सकर्तृक क्रिया वह है जो कर्ता के अधीन है यथा मैं बनाऊंगा सिंह आताहै। परकर्तृक क्रिया वह है जो कर्ता के अधीन नहीं हैं चाहे कर्ता गुप्त चाहे प्रगट हो यथा रोटी खोई गई पिता से पुत्र मारा जावे। आत्मकर्तृक क्रिया वह है जिसका कर्ता और कर्म दोनों एकही है यथा वे आप को भुलातेहैं अपने लिये मंगवा लो। सकर्तृक क्रिया भी दो प्रकार की है अर्थात् सकर्मक और अकर्मक।

३०। भाव बहुत प्रकार का है जैसा वार्ता इच्छा शक्ति आज्ञा प्रार्थना अभिप्राय पुनः पुनःकरण हेतुत्व नियम संज्ञा विशेषण इत्यादि।

३१। काल मुख्य जो तीन हैं अर्थात भूत भ-

विष्यत् वर्तमान परन्तु इन तीनों के तीन २ प्रकार हैं क्योंकि प्रत्येक काल में तीनों काल का सम्बन्ध और अपेक्षा हो सकती है। और वर्तमान दो और प्रकार का है अर्थात् व्यवहार-वर्तमान और विशेष-वर्तमान ॥ सो सब मिलाके बारह प्रकार के काल हैं। यथा ।

भूतकाभूत	वर्त॰काभूत	भवि॰काभूत
भूतका व्यव॰ वर्त॰ / वि॰ वर्त॰	वर्त॰का व्यव॰वर्त॰ / वि॰ वर्त॰	भवि॰का व्यव॰वर्त॰ / वि॰ वर्त॰
भूतका भविष्यत्	वर्त॰ का भविष्यत्	भवि॰का भविष्यत्

९। पुरुष तीन हैं अर्थात् प्रथम मध्यम उत्तम ।

१०। वचन तीनहैं अर्थात् एकवचन द्विवचन बहुवचन ।

४१। लिङ्ग तीन हैं अर्थात् पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग क्लीव।

४२। अब कहना चाहिये कि इन मानसिक भावनाओं में किस २ का यवनभाषा में पृथक २ रूप है।

लिङ्ग क्रिया के रूप से प्रगट नहीं होताहै। वचन प्राय रूप से प्रगट होता है सदा नहीं। इसकाभेद पीछे जान पडेगा।

पुरुष सर्वदा रूपसे प्रगट होताहै।

४३। क्रिया के जिन रूपों में केवल वचन और २ पुरुष का अन्तरहै और किसी प्रकार का नहीं उन रूपों का समूह लकार कहलाता है। यवन भाषा में सतरह लकार हैं अर्थात् लट लङ् १ लङ् २ लुङ् १ लृट २ ल्टट १ लच २ लच् १ लृच २ लच १लिट २ लिट ३ लिट १ लोङ् २ लोङ् ३ लोङ् लिङ्लट। इन लकारों का अर्थ काल से

कुछ २ सम्बन्ध रखताहै सम्पूर्ण नहीं।
४४। लट् का अर्थ वर्तमान के वर्तमान का है। जैसा वह जाता है।
लङ् का अर्थ भूत के वर्तमान का है। जैसा वह जाता था।
तीनों लिट् का अर्थ वर्तमान के भूत काहै। जैसा वह गया है।
दोनों लट् और दोनों लृच् का अर्थ वर्तमान के भविष्यत् का है। जैसा वह जावेगा।
तीनों लोङ् का अर्थ भूत के भूत का है। जैसा वह गया था।
लिङ्ट् का अर्थ भविष्यत् के भूत का है। जैसावह जा चुकेगा।
दोनों लुङ् और दोनों लृच् का अर्थ किसी विशेष कालका नहीं है वरन् यही बताते हैं कि क्रिया का व्यापार किसी विशेष समय

में हुआ वा होनेवाला है। तथापि वार्त्ता और
२ विशेषण भावों में उन का अर्थ सदा भ
न काल का है।

४५। १ और २ लच् का अर्थ प्राय सदा पर
कर्त्तकहै और १ और २ लट् सकर्त्तक वा
आत्मकर्त्तक है।
३ लिट् और ३ लोङ् का अर्थ प्राय परक
र्त्तक वा आत्मकर्त्तकहै और १ और २ लि
ट् और १ और २ लोङ् सकर्त्तक हैं।
१ और २ लुच् का अर्थ प्राय परकर्त्तक
है और १ और २ लुङ् सकर्त्तक वा आत्म
कर्त्तक है।
लिङ्ट् का अर्थ परकर्त्तक वा आत्मकर्त्त
क है।
लृट् और लृङ् परकर्त्तक सकर्त्तक वा आ
त्मकर्त्तक हैं

४६। यवनभाषा में भावों के केवल छः ही

पृथक रूप हैं अर्थात् वार्त्ता संज्ञा विशेषण लेट् लिङ् लोट् । पहिले तीनों का अर्थ उनके नामों ही से प्रगट है ।

लोट् का अर्थ आज्ञा वा प्रार्थना है ।

लेट् के बहुत अर्थ हैं परन्तु वह प्राय लट् लिट् लुट् लृच् के वार्त्ता भाव के पीछे वाक्य के अधीन अङ्ग में आताहै। यथा मैं आया हूं कि आप से भेंट करूं यहां करूं यवनभाषा में लेट् भावमें होगा ।

लिङ् के भी बहुत अर्थ हैं विशेष कर के आशीर्वाद का परन्तु वह प्राय लङ् लुङ् लृच् लोङ् के वार्त्ता भाव के पीछे वाक्य के अधीन अङ्गमें आता है । यथा मैं गया था कि आपसे भेंट करूं यहां करूं यवनभाषा में लिङ् भाव में होगा।

४७। वाच्ची भाव के सब लकार मिलतेहैं। संज्ञा विशेषण और लिङ्‌ भावों के लङ्‌ और लोङ्‌ को छोड़ के और सब लकार मिलतेहैं।
लेट् और लोट में दोनों ल्टट् और दोनों ल्टच और लिङ्ट नहीं मिलते हैं।

४८। प्रत्यय दो प्रकार के हैं अर्थात् परस्मैपद और आत्मनेपद के प्रत्यय।
लट् लङ्‌ १ लङ्‌ २ लङ्‌ १ ल्टट् २ ल्टट् के प्रत्यय दोनोंपद के होते हैं।
१ लच २ लच १ लिट् २ लिट् १ लोङ्‌ २ लोङ्‌ के प्रत्यय केवल परस्मैपद के होते हैं।
१ ल्टच २ ल्टच ३ लिट् ३ लोङ्‌ लिङ्‌ २ के प्रत्यय केवल आत्मनेपद के

होते हैं ।

४९।१(लृच् २ लृच् को छोड़के और सब लकारों में परस्मैपद का अर्थ सकर्त्तृक है और आत्मनेपद का अर्थ परकर्त्तृक वा आत्मकर्त्तृक है ।

पञ्चम अध्याय—भित्तियों का निर्माण।

५०। हम कह आये हैं कि क्रिया का धातु घरकी नेव के समान है और प्रत्यय उस के छप्पर के समान है और इन प्रत्ययों के लगाने से पहिले जो कुछ धातु में लगता है सो उस की भित्तियों के समान है ।

प्रत्यय जो हैं सो पुरुष वचन भाव पद के अनुसार पृथक २ हैं और प्रत्ययों के लगने से पहिले जो धातु के रूप हो ते हैं सो लकारही के अनुसार पृथक २ हैं।

सो अब हम लकारों के रूप लिखते हैं।

५१ १ लट्

थोड़ीही क्रियाओं में मिलताहै। वह धातु से कुछ भी भिन्न नहीं है।

५२। १ लङ्

का मध्यस्वर बहुत क्रियाओं में धातु के मध्यस्वर से भिन्न है। यथा ΤΡΕΠ से τραπ ΣΤΕΛ से σταλ ΚΤΕΝ से κταν। और इससे अधिक वार्त्ता

भाव में उस के आदि में आगम होता है।

अथ आगम का वर्णन।

५३। आगम लङ् १ लुङ् २ लुङ् १ लृच २ लृच १ लोङ् २ लोङ् ३ लोङ् के वाजी भावमें होताहै।

५४। मूल आगम ε है। उस के लगाने में ये नियम स्मरण रखना चाहिये।

१। जब धातु के आदि में ρ है तब ε के लगाने से वह दुहराया जाता है। यथा 'PAΦ से ἐρρ́αφ।

२। जब धातु के आदि में स्वर वा संयुक्त स्वर है तब संधि के ठीक नियम से नहीं बरन् निम्नलिखित प्रकारों से

इस स्वर का संयुक्त स्वर से ε मिलता है।

यथा।

ε और α मिलके η होते हैं। 'AMAPT से ἤμαρτ।

ε और ε मिलके प्राय η होते हैं। ΕΛΕΓΧ से ἤλεγχ।

परन्तु कितनी क्रियाओं में ει। 'ΕΠ से εἱπ।

ε और η मिलके η होते हैं। 'HK से ἧκ

ε और ι मिलके दीर्घ ι होते हैं। 'IK से ἶκ।

ε और ο मिलके ω होते हैं। ΟΛ से ὠλ

ε और υ मिलके दीर्घ υ होते हैं 'Υ से ὑ।

ε और ω मिलके ω होते हैं। 'ΩΘ से ὠθ

ε और αυ मिलके ηυ होतेहैं ΑΥΞ से ηὔξ।

ε और αι मिलके ῃ होतेहैं ΑΙΣΘ से ᾔσθ।

ε और ει मिलके ει होतेहैं ΕΙΚ से εἴκ

ε और οι मिलके ῳ होतेहैं ΟΙΚ से ᾠχ।

ε और ευ मिलके ευ वा ηυ होतेहैं ΕΥΡ से εὑρ। ΕΥΧ से ηὔχ।

ε और ου मिलके ου होतेहैं। οὐταδ से οὐταδ।

३। इन स्वरादिक धातुओं का आगम ε से होता है। ΑΓ (तोड़) ΑΛΟ ΕΙΚ ΕΛΠ ΟΡΑ ΩΘ। यथा ἑαγ ἑαλο।

४। ΒΟΥΛ ΔΥΝΑ ΜΕΛΛ का आगम ε से हो सकताहै परन्तु प्राय ή से होताहै। यथा ἠβουλ ἠδυναι

५५। 'ΑΓ(लेना) और 'ΑΡ(जोड़) का १ लड़ ἀγαγ ἀραρ हैं।

५६। २ लट्

में धातु के अन्त में σ लगताहै। यथा ΤΥΠ से τυψ ΛΕΓ से λεξ ΤΙ से τισ ΠΕΡΘ से περσ ΦΡΑΔ से φρασ।

१। जब धातु के अन्तमें ह्रस्व स्वर है तब वह प्राय दीर्घ होता है अर्थात् ε η होताहै। यथा ΠΟΙΕ से ποιησ। α प्रायः η होताहै 'ΟΝΑ से ὀνησ। पर कभी २ α रहताहै। 'ΕΑ से ἐασ। ο ω होताहै। ΓΝΟ से γνωσ।

२। इन धातुओं के २ लट् में मध्यस्वर दीर्घ होता है। ΛΑΧ से ληξ ΛΑΒ से ληψ ΛΑΘ से λησ ΠΑΓ

से πηξ ʽPΥ(बह) से ῥευσ ʽPAΓ से ῥηξ ΤΥΧ से τευξ ΦΥΓ से φευξ ΠΙΘ से πειθ ΔΙ से δειθ । ʼΟΦΕΛ ΧΑΡ ।

३। इनधातुओं का२ लूट σ के लगाने के पहिले अपने अन्त में ε लगाता है सो η बन जाता है ।

ΑΙΣΘ ʼΑΛΕΞ ʽΑΜΑΡΤ ʼΑΥΞ ΒΛΑΣΤ ΒΟΣΚ ΒΟΥΛ ʼΕΜ ʽΕΥΔ ʽΕΥΡ ΘΕΛ ΜΑΘ ΜΑΧ ΜΕΛ ΜΕΛΛ ʼΟΔ ʼΟΙΧ ʼΟΙ (समझ) ʼΟΦΕΛ ΧΑΡ ʼΩΘ ΡΟΔ का δ ζ होता है ।

४। ΔΑΜ δαμα होके और ʽΕΛΚ ἑλκυ होके σ लगाते हैं ।

५। कितनी अनेकाक्षरान्वित ω अन्त क्रियाओं

का σ निकलभी सकता है। यथा KOMIΔ से κομι βιβαδ से βιβα।

५७। २ लुङ्

में प्राय वैसाही σ लगता है और ऊपर के ५६।१।२।३।४ में जो अङ्क २ लृट् के विषय में लिखा है सो २ लुङ् में भी घटता है। यथा ΛΕΓ से λεξ ΠΟΙΕ से ποιησ ʽΡΥ से ῥευσ ʼΟΦΕΛ से ὀφειλησ।

१। परन्तु जिनधातुओं के अन्त में λ μ ν ρ हैं उन में σ नहीं लगता है वरन् धातु का मध्यस्वर दीर्घ होताहै। यथा MEN से μειν ΣΤΕΛ से στειλ।

२। ʽΕ (डाल) ΘΕ ΔΟ में σ के स्थाने κ लगताहै। यथा ἡκ ἐθηκ ἐδωκ वाले भाव में होते हैं।

५८। १ लुङ्

में धातु का मध्यस्वर वैसाही बदलताहै जैसा १ लुङ् में और अन्त में कुछ नहीं लगताहै। यथा τραπ

५९। १ लृच

में भी धातु का मध्यस्वर वैसाही बदलता है और अन्तमें ησ लगताहै। यथा τραπησ।

६०। २ लृच्

में क्रिया के अन्त में θ लगता है। यथा ΛΕΓ से λεχθ।

१।५८।१ में जो कुछ २ लृङ् के विषय में लिखाहै सो २ लृच् में भी घटता है। यथा ΠΟΙΕ से ποιηθ। ΠΡΑ (बेच) से πραθ।

२। कितनी स्वरान्त क्रियाओं में σ बीच

में लगता है। यथा τελε से τελεσθ
'AKOY से ἀκουσθ।

३। जिन धातुओं के अन्त में ελ ερ εμ
εν है वे २ लच् में ε को α बदल देते हैं।
यथा ΣΤΕΛ से σταλθ ΣΠΕΡ से
σπαρθ।

४। KPIN KΛIN TEN KTEN
ΠΛΥΝ का ν २ लच् में छूट जाता है।
यथा κριθ κλιθ ταθ κταθ
πλυ।

५। इन धातुओं का २ लच् ε लगाके θ ल
गाते हैं। BOYΛ ΓAM MEΛ NEM
ΟΙ (समझ) यथा βουληθ γαμηθ
οἰηθ।

६१ २लच्

में क्रिया ठीक २ लच् के अनुसार बदल
ता है और अन्त में θησ लगता है यथा

πoιηθησ πραθησ τελεσθησ σπαρθησ χριθησ νεμηθησ।

८२। १ लिट्

के अन्त में κ वा महाप्राण लगता है और आदि में होता है।

अथ अभ्यास का वर्णन।

८३। अभ्यास तीनों लिट् और तीनों लोट् और २ लिड्ट् के सब भावों में होताहै।

८४। उसका अर्थ यह है कि क्रिया का प्रथम अक्षर दुहराया जाता है और जब प्रथम अक्षर व्यंजन है तब दोनों के बीच में ε आ जाता है।

१। जब क्रिया के आदि में ρ है तब ε दोनों ρ के पहिले ही आता है। यथा ῥιφ से ἐρριφ।

२। जब क्रिया के आदि में संयुक्त व्यंजन है तब यह दुहराया नहीं जाता है केवल ε उस के पहिले आता है। यथा ΨΑΛ से ἐψαλχ।

३। जब क्रिया के आदि में दो व्यंजन हैं तब प्राय वैसाही होताहै सदा नहीं यथा ΣΠΕΡ से ἐσπαρ। किन्तु ΓΡΑΦ से γεγραφ।

४। ΛΑΒ ΛΑΧ ΜΕΡ ΨΕ में प्रथम अक्षर नहीं दुहराया जाताहै और ει आदि में लगताहै। यथा ΛΑΒ से εἰληφ।

५। जब क्रिया के आदि में स्वर वा संयुक्त स्वर है तब अभ्यास प्राय ठीक ऊपरिलिखित आगम के समान होता है।

६। इन स्वरादिक धातुओं का अभ्यास पहिले स्वर और पहिले व्यंजन के दुह-

गने से होता है तब दूसरा स्वर दीर्घ होता है।

ΕΓΕΡ से εγηγερχ ΕΛΑ से ελη λαχ ΕΛΥΘ से εληλυθ 'ΟΛ से ὀλωλ ΕΝΕΚ से ενηνοχ 'ΟΜ से ὀμωμοχ 'ΟΔ से ὀδωδ 'ΑΛΙΦ से ἀληλιφ 'ΟΡΥΓ से ὀρωρυγ ϝΙΣΤΑ से ἑστα होता है।

६५। जब क्रिया के अन्तमें दन्त्य अथवा तालव्य व्यंजन अथवा स्वर वा संयुक्त स्वर है तब χ १ लिट में लगता है और जब उसके अन्तमें कण्ठस्थ अथवा ओष्ठस्थ व्यंजन है तब महाप्राण लगता है अर्थात् अन्त्य व्यंजन महाप्राणान्वित होता है। यथा ΨΑΛ से ἐψαλχ ΠΝΕΥ से πεπνευχ ΤΥΠ से τετυφ ΛΕΓ से λελεχ।

१। χ से पहिले δ θ छूट जाते हैं। यथा ΦΡΑΔ से πεφραχ।

२। जो कुछ ५६।१ में २ स्वर के विषय में लिखा है सो १ लिट् में भी चलता है। यथा ΓΝΟ से εγνωχ।

३। इन धातुओं के १ लिट् में मध्यस्वर दीर्घ होता है। ΛΑΧ से εἰληχ ΛΑΘ से λεληθ ΛΑΒ से εἰληφ ΤΥΧ से τετευχ ΠΙΘ से πεπειχ ΔΙ से δεδοιχ।

४। इन धातुओं का १ लिट् ε लगाके χ लगाते हैं। ʼΑΜΑΡΤ से ἡμαρτηχ ΜΑΘ से μεμαθηχ ΜΕΝ से μεμενηχ ΝΕΜ से νενεμηχ ΧΑΡ से κεχαρηχ ʼΟΛ से ὀλωλεχ

५। जो कुछ ६०।३ में २ लुङ् के विषय

में लिखाहै सो १ लिट में भी चटता है। यथा ΣΠΕΡ से ἔσπαρχ।

८। जो कुछ ८०।४ में २ लुच् के विषयमें लिखा है सो १ लिट में भी चटता है। यथा ΚΡΙΝ से κεκριχ।

८८। २लिट

के अन्तमें कुछ नहीं लगता है परन्तु मध्यस्वर प्राय किसी न किसी प्रकार से बदलता है अर्थात् ।

१। जब मध्यस्वर ε है तब ο होताहै। यथा ΦΘΕΡ से ἔφθορ ΓΕΝ से γεγον।

२। जब ι है तब οι होता है। यथा ΛΙΠ से λελοιπ।

३। जब और कोई ह्रस्व स्वर है तब प्राय बढाया जाता है। यथा ΦΥΓ से πεφευγ ΌΔ से ὄδωδ।

४। ΛΑΧ से λελογχ ΠΑΘ से πεπονθ 'ΡΓ से ἐρρωγ।

६७। ३लिट्

के अन्तमें प्राय कुछ नहीं लगताहै परन्तु।

१।५८।१ में जो कुछ लिखाहै सो ३लिट् में भी घटना है यथा πεποιη।

२।८०।२ में जो कुछ लिखाहै सो ३ लिट् में भी घटताहै यथा ΧΡΙ से κεχριο ΓΝΟ से ἐγνωσ।

३।८०।३ में जो कुछ लिखाहै सो ३ लिट् में भी घटना है। यथा ΣΤΕΛ से ἐσταλ।

४।८०।४ में जो कुछ लिखा है सो ३लिट् में भी घटना है। यथा ΤΕΝ से τετα।

५। ΤΡΕΠ ΤΡΕΦ ΣΤΡΕΦ का ε α होता है। यथा ἐστραφ।

६। ΒΟΥΛ ΜΑΧ 'ΟΙΧ ΧΑΡ के

३ लिट में ε लगता है। यथा μεμαχη।

८८। १ २ ३ लोङ्

यथाक्रम १ २ ३ लिट के ठीक समान हैं केवल उनके आदि में आगम लगता है। यथा ἐπεπνευκ ἐλελεχ ἐπεποιηκ ἐπεφευγ ἐλελοιπ ἐκεχρισ ἐμεμαχη।

१। जब लिट का पहिला अक्षर स्वरवा संयुक्त स्वर है तब लोङ् उससे कुछ भी भिन्न नहीं है यथा ἑσταλ ειληφ ἐληλυθ।

८९। लिङ्ट

३लिट के ठीक समान है केवल उसके अन्तमें σ लगता है। यथा πεποιησ ἐστραψ।

७०। लट्

थोड़ी क्रियाओं में धातु के समान है पर

४। ΛΑΧ से λελογχ ΠΑΘ से πεπονθ ῬΓ से ἐῤῥωγ।

६७। ३लिट्

के अन्तमें प्राय कुछ नहीं लगताहै परन्तु।

१। ५८।१ में जो कुछ लिखाहै सो ३लिट् में भी चरता है यथा πεποιη।

२। ६०।२ में जो कुछ लिखाहै सो ३ लिट् में भी चरताहै यथा ΧΡΙ से κεχρισ, ΓΝΟ से ἐγνωσ।

३। ६०।३ में जो कुछ लिखाहै सो ३ लिट् में भी चरता है। यथा ΣΤΕΛ से ἐσταλ।

४। ६०।४ में जो कुछ लिखा है सो ३लिट् में भी चरताहै। यथा ΤΕΝ से τετα।

५। ΤΡΕΠ ΤΡΕΦ ΣΤΡΕΦ का ε α होता है। यथा ἐστραφ।

६। ΒΟΥΛ ΜΑΧ ΟΙΧ ΧΑΡ के

३ लिट में ε लगताहै। यथा μεμαχη।

९८। १ २ ३ लोङ्

यथाक्रम १ २ ३ लिट के ठीक समान हैं केवल उनके आदि में आगम लगता है। यथा ἐπεπνευκ ἐλελεχ ἐπεποιηκ ἐπεφευγ ἐλελοιπ ἐχεχρισ ἐμεμαχη।

१। जब लिट का पहिला अक्षर स्वरवा संयुक्त स्वरहै तब लोङ् उससे कुछ भी भिन्न नहीं है यथा ἐσταλ εἰληφ ἐληλυθ।

९९। लिङ्लट

३लिट के ठीक समान है केवल उसके अन्तमें σ लगता है।यथा πεποιησ ἐστραψ।

७०। लट

थोड़ी क्रियाओं में धातु के समान है पं

न प्राय उसमें धातु किसी न किसी प्र॰
कारसे बढ़ाया जाता है चाहे मध्यमें कुछ
मिला देने से चाहे अन्तमें कुछ लगा देने
से चाहे दोनों प्रकार से। बहुत थोड़ी क्रि॰
याओं में लट् धातु से छोटा भी है।

१। इन धातुओं का लट् अन्तमें νυ लगा-
ता है। 'ΑΓ (तोड़) ΔΕΙΚ 'ΕΙΡΓ
ΖΥΓ ΜΙΓ 'ΟΙΓ 'ΟΜ ΠΑΓ ῬΑΓ।
ΠΑΓ πηγνυ ῬΑΓ ῥηγνυ होते हैं।

२। 'ΟΛ λ को दुहराके ὀλλυ होता है।

३। इनधातुओं का लट् अन्तमें γνυ ल॰
गाता है।

'Ε (पहिन) ΖΩ ΚΡΑ ΚΟΡΕ ΚΡΕΜΑ
ΠΕΤΑ ῬΩ ΣΒΕ ΣΚΕΔΑ
ΣΤΡΟ ΧΡΩ।

ΚΡΑ κεραννυ और ΣΤΡΟ
στορεννυ वा στρωννυ होते हैं।

४। इन धातुओं का लट् अन्त में αν लगता है। 'ΑΙΣΘ 'ΑΜΑΡΤ ΒΛΑΣΤ 'ΕΧΘ 'ΑΤΞ ΘΙΓ ΛΑΧ ΛΙΠ ΛΑΒ ΛΑΘ ΜΑΘ ΠΤΘ ΤΥΧ।

ΘΙΓ से लेके ΤΥΧ तक इन सभों के मध्यस्वर के पीछे सानुनासिक व्यंजन लगता है। यथा θιγγαν λαμβαν λανθαν τυγχαν।

५। इन धातुओं का लट् अन्त में ιν लगता है।

ΒΑ 'ΡΑ। यथा βαιν ῥαιν।

६। इन धातुओं का लट् अन्त में σκ लगता है।

'ΑΡΕ ΒΡΟ ΓΝΟ ΔΙΔΑΧ ΔΡΑ(भाग) ΘΑΝ ΊΛΑ ΜΕΘΥ ΜΝΑ ΠΡΑ(बेच)।

ΘΑΝ θνα होता है और वह और ΒΡΟ ΓΝΟ ΜΝΑ के स्वर दीर्घ होते हैं। यथा

φυλασσ वा φυλαττ ΠΤΥΧ से πτυσσ वा πτυττ ΦΡΑΓ से φρασσ वा φραττ।

१६। ΘΕΥ ΝΕΥ ΠΛΕΥ ΠΝΕΥ ῬΥ (बह) ΧΥ लट में अपना २ स्वर वा संयुक्त स्वर ε बनाते हैं अर्थात् θε νε πλε πνε ῥε χε होतेहैं।

१७। ΓΑΜ ΔΟΚ ἘΜ ῼΘ ΣΤΥΓ का लट अन्तमें ε लगाता है।

१८। ΔΑΜ का लट अन्तमें σ लगाता है।

१९। ἘΛΚ का लट अन्तमें υ लगाता है।

२०। इनधातुओं का लट आदि में अभ्यास पाता है और उसके साथ ι पड़ता है। ΓΕΝ से γιγν· ΓΝΟ से γιγνωσκ ΔΟ से διδο ΔΡΑ(भाग)से διδρασκ

'Ε (डाल) से ἱε ΘΕ से τιθε 'ΟΝΑ से ὀνινα ΠΛΑ से πιμπλα ΠΡΑ (जला) से πιμπρα ΠΡΑ (वेच) से πιπρασκ ΠΕΤ (गिर) से πιπτ ΤΕΚ से τικτ ΜΝΑ से μιμνησκ ΣΤΑ से ἱστα। जब ΓΕΝ और ΓΝΟ का मूल γ निकल भी सकताहै। यथा γιν γινωσκ।

२१। बहुत ν-अन्त और ρ-अन्त क्रियाओं का लट् मध्यस्वर को संयुक्त स्वर कर देते हैं। यथा ΚΤΕΝ से κτειν ΜΑΝ से μαιν। सब बनाई हुई αν-अन्त क्रियाओं का लट् वैसाही होताहै।

२२। प्राय λ-अन्त क्रियाओं का लट् λ को दुहरानाहै। यथा ΣΤΕΛ से στελλ। किन्तु 'ΟΦΕΛ ὀφειλ होताहै।

२३। 'ΕΔ का लट् ἐσθι है।

२४ ΠΑΘ का लट् πασχ है।

२५। NE का लट $\nu\eta\theta$ है।

७१। लङ्

ठीक लट के समान होता है। यथा

ἔδακν ἔλειπ।

इति भित्तियों का निर्माण।

षष्ठ अध्याय—क्रिया का लगन।

७२। पहिले हम शब्दों को लिखेंगे वे· से नहीं जैसे यवनभाषा में मिलते हैं वरन् ऐसे जैसे प्रथम काल में थे जहां तक अनुमान से जाना जाता है।

रूप	पुरुष	परस्मै पद			आत्मने पद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम रूप	प्र॰	τι	τον	ντι	ται	σθον	νται
	म॰	σι	τον	τε	σαι	σθον	σθε
	उ॰	μι		μεν	μαι	μεθον	μεθα
द्वितीय रूप	प्र॰	τ	την	ντ	το	σθην	ντο
	म॰	σ	τον	τε	σο	σθον	σθε
	उ॰	μ		μεν	μην	μεθον	μεθα
लोट्	प्र॰	τω	των	ντων	σθω	σθων	σθων
	म॰	θι	τον	τε	σο	σθον	σθε
संज्ञा		ναι			σθαι		
विशेषण		ντ			μενο		

७३। इस चक्र के विषय में पाठक लोग नीन बातें देखेंगे ।

१। लोट् में उत्तम पुरुष नहीं है ।

२। परस्मैपद में उत्तम पुरुष का द्विवचन नहीं है।

३। संज्ञा भाव और विशेषण भावमें पुरुष नहीं और संज्ञाभावमें वचन भी नहीं होता है । क्रिया के विशेषण में नो और २ विशेषणों की नाईं लिङ् वचन कारक होते हैं पर इसका वर्णन पीछे होगा ।

४। ऊपरि लिखित प्रत्ययों के देखने से जान पड़ेगा किउनमें बड़त सम्बन्ध है। उत्तम पुरुष सदा µ से आरम्भ होता है ।

प्रथम पुरुष के एकवचन से उसका बड़ वचन प्राय ν के आदिमें लगाने से बनाहै ।

आत्मनेपद का प्राय प्रत्येक रूप परस्मैपद के उसी रूप से उसे कुछ बढ़ाने से बना है। यथा τι से ται μεν से μεθα τω से σθω।

५। पण्डितों को स्पष्ट देख पड़ेगा कि यवन क्रिया संस्कृत क्रिया से कितना मिलता है।

७४। ये प्रत्यय इसी प्रकार से सब क्रियाओं के ३ लिट् और ३ लोड् में और थोड़ी क्रियाओं के थोड़े और लकारो में भी लगते हैं। अवशिष्ट सब लकारों में प्रत्यय के पहिले कोई सम्बन्धी स्वर आ जाता है।

७५। अब बतावेंगे कि ऊपरिलिखित चक्र के किस २ रूप के प्रत्यय किस २ लकार में लगते हैं।

७६। जिसको हम ने प्रथम रूप कहा है उस रूप के दोनों पद के प्रत्यय इन ल-

कारों में लगने हैं।
लट के वार्त्ता और लेट भावमें।
१ और २ लट के वार्त्ता भावमें।
१ और २ लङ् के लेट भाव में।
७७। उसी रूप के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।
१ और २ लिट के वार्त्ता और लेट भावमें।
१ और २ लुङ् के लेट भावमें।
७८। उसी रूप के आत्मनेपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।
३ लिट के वार्त्ता भाव में।
१ और २ लुङ् के वार्त्ता भावमें।
लिट्ट के वार्त्ता भावमें।
७९। जिसको हमने द्वितीय रूप कहा है उस रूप के दोनों पद इन लकारों में लगते हैं।

लङ् में।

लट् के लिङ् मे।

१ और २ लङ् के वार्त्ता और लिङ् भावमें।

८०। उसी रूप के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

१ और २ लिट् के लिङ् में।

१ और २ लङ् के वार्त्ता और लिङ् में।

१ और २ लट् के लिङ् में।

१ और २ लोङ् में।

८१। उसी रूप के आत्मने पदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

३ लोङ् में।

लिट् के लिङ् भावमें।

१ और २ लृङ् के लिङ् भावमें।

८२। लोट् के दोनों पद के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

लट् के लोट् भावमें।

१ और २ लुङ् के लोट् भावमें।

८३। उस के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

१ और २ लिट् के लोट् भावमें।

१ और २ लृच् के लोट् भावमें।

८४। उस के आत्मने पदही के प्रत्यय इन लकारों में लगतेहैं।

१ लिट् के लोट् भावमें।

लिङ्लृट् के लोट् भावमें।

८५। संज्ञा और विशेषण के दोनों पदके प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

लट् के स और वि भावों में।

१ और २ लुङ् के स और वि भावों में।

१ और २ लृट् के स और वि भावों में।

८६। उन के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

१ और २ लिट् के स और वि भावों में।

१ और २ लुच् के स· और वि· भावों में ।

८७। उनके आत्मने पदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

३ लिङ्के स· और वि· भावों में ।

लिङ्ट के स· और वि· भावों में ।

१ और २ लुच् के स· और वि· भावों में ।

अथ ३ लिट और ३ लोङ्-का वर्णन।

८८। ऊपरिलिखित चक्र के अनुसार आत्मनेपदही के प्रत्यय लगते हैं। केवल बहुवचन का σθων σθωσαν भी हो सकता है। और प्रत्ययों के पहिले इनदो लकारों का अन्तभाग संधि के नियमों से बदलता है। यथा τετυπ और μαι मिलके τέτυμμαι और ἐλελεγ और

σο मिलके ἐλέλεξο और ἐπεφραδ
और μην मिलके ἐπεφράσμην
और πεπλεχ और μενο मिलके
πεπλεγμενο होतेहैं। और मंजनान्त
क्रियाओं में प्रत्ययके σθ का σ लुप्त हो
ताहै। यथा τετυπ और σθω मि
लके τετύφθω और πεπειθ और
σθαι मिलके πεπεῖσθαι होतेहैं।
इस से अधिक इन ३ बातों को जानरखो।
१। प्रत्ययके μ के पहिले दो γ में से एक
निकल जाताहै। यथा ΣΦΙΓΓ से
ἐσφιγμην।
२। प्रत्ययके μ के पहिले दो μ में से एक
निकलताहै। यथा ΚΑΜΠ का π सं
धि के नियम के अनुसार μ होजाताहै
पर μεθα से मिलके κεκαμμεθα
होताहै।

३। व्यंजनान्त क्रियाओं में और उन स्वरान्त क्रियाओं में भी जो σ लगाते हैं प्रथम और द्वितीय रूप के प्रथम पुरुष का बहुवचन नहीं होताहै और किसी क्रियाके लेट् और लिङ् का कोई रूप नहीं होताहै। इन का अर्थ अन्यप्रकार से प्रगट किया जाता है।

८५। अब इन दो लकारों के उदाहरण देते हैं।

१। स्वरान्त धातु ΠΟΙΕ।

इ लिट्

वाच्य भाव।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र·	πεποίηται	πεποίησθον	πεποίηνται
म·	πεποίησαι	πεποίησθον	πεποίησθε
उ·	πεποίημαι	πεποιήμεθον	πεποιήμεθα

लोट् भाव।

प्र·πεποιήσθω	πεποιήσθων	πέποιήσθὼν वा σθωσαν
म·πεποίησο	πεποίησθον	πεποίησθε

संज्ञा भाव।

πεποιῆσθαι

विशेषण भाव।

πεποιημενο

३ लोङ्

प्र·ἐπεποίητο	ἐπεποιήσθην	ἐπεποίηντο
म·ἐπεποίησο	ἐπεποίησθον	ἐπεποίησθ
उ·ἐπεποιήμην	ἐπεποιήμεθον	ἐπεποιήμεθ

२। σ लगाने वाला स्वरान्त धातु ΣΕΙ

इलिट्।

सार्वा भाव।

प्र॰ σέσεισται	σέσεισθον	
म॰ σέσεισαι	σέσεισθον	σέσεισθε
उ॰ σέσεισμαι	σεσείσμεθον	σεσείσμεθα

लोट् भाव।

प्र॰ σεσείσθω	σεσείσθων	σεσείσθων- वा σθωσαν
म॰ σέσεισο	σέσεισθον	σέσεισθε

संज्ञा भाव।

σεσεῖσθαι

विशेषण भाव।

σεσεισμενο

इलोङ्।

प्र॰ ἐσέσειστο	ἐσεσείσθην	
म॰ ἐσέσεισο	ἐσέσεισθον	ἐσέσεισθε
उ॰ ἐσεσείσμην	ἐσεσείσμεθον	ἐσεσείσμεθα

३। सोलहवां जनाक्त धातु KPTB

१ लिट्

वार्त्ता भाव।

प्र· κέκρυπται	κέκρυφθον	
म· κέκρυψαι	κέκρυφθον	κέκρυφθε
उ· κέκρυμμαι	κεκρύμμεθον	κεκρύμμεθα

लोट् भाव।

प्र· κεκρύφθω	κεκρύφθων	κεκρύφθων वा φθωσαν
म· κέκρυψο	κέκρυφθον	κέκρυφθε

संज्ञा भाव।

κεκρῦφθαι

विशेषण भाव।

κεκρυμμένο

२ लोङ्

प्र· ἐκέκρυπτο	ἐκεκρύφθην	
म· ἐκέκρυψο	ἐκέκρυφθον	ἐκέκρυφθε
उ· ἐκεκρυμμην	ἐκεκρύμμεθον	ἐκεκρύμμεθα

४ कारस्थव्यंजनान्त धातु ἈΛΛΑΓ।

३ लिट्

वार्त्ता भाव।

प्र॰ ἤλλακται	ἤλλαχθον	
म॰ ἤλλαξαι	ἤλλαχθον	ἤλλαχθε
उ॰ ἤλλαγμαι	ἠλλάγμεθον	ἠλλάγμεθα

लोट् भाव।

प्र॰ ἠλλάχθω	ἠλλάχθων	ἠλλάχθων वा χθωσαν
म॰ ἤλλαξο	ἤλλαχθον	ἤλλαχθε

संज्ञा भाव।

ἠλλᾶχθαι

विशेषण भाव।

ἠλλαγμενο

३ लोङ्

प्र॰ ἤλλακτο	ἠλλάχθην	
म॰ ἤλλαξο	ἤλλαχθον	ἤλλαχθε
उ॰ ἠλλάγμην	ἠλλάγμεθον	ἠλλάγμεθα

५। दन्त्यव्यंजनान्त क्रिया σκευαδ।

३ लिट्

वाची भाव।

प्र॰ ἐσκεύασται	ἐσκεύασθον	
म॰ ἐσκεύασαι	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε
उ॰ ἐσκεύασμαι	ἐσκευάσμεθον	ἐσκευάσμεθα.

लोट् भाव।

प्र॰ ἐσκευάσθω	ἐσκευάσθων	ἐσκευάσθων वा σθωσαν
म॰ ἐσκεύασο	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε

संज्ञा भाव।

ἐσκευάσθαι

विशेषण भाव।

ἐσκευασμενο

३ लोङ्.

प्र॰ ἐσκεύαστο	ἐσκευάσθην	
म॰ ἐσκεύασο	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε
उ॰ ἐσκευάσμην	ἐσκευάσμεθον	ἐσκευάσμεθα

इति ३ लिट् और ३ लोङ् का वर्णन।

अथ सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन।

५०। हम कह आये हैं कि १ लिट् और १ लोङ् को छोड़के और २ लकार भी कितनी क्रियाओं में विना सम्बन्धी स्वर के अपने प्रत्यय लगाते हैं। ये लकार लट् लङ् १ लङ् २ लिट् हैं परन्तु केवल वार्त्ता लोट् संज्ञा विशेषण भावों मे सम्बन्धी स्वर नहीं आता हो लेट् और लिङ् में आता है।

५१। इन धातुओं का १ लङ् विना सम्बन्धी स्वर के होता है। 'E (डाल) 'AΛO BA ΓNO ΔO TΛA ΘE ΔPA (भाग) ΔΥ ΣBE ΣTA ΦΘA ΦΥ और बनाई हुई क्रिया βιo भी। और केवल लोट् भाव में ΠΙ धातु की भी यही दशा है।

५२। इन धातुओं के लट् और लङ् विना सम्बन्धी स्वरके होते हैं।

अथ सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन।

५०। हम कह आये हैं कि १ लिट् और १ लोङ् को छोड़के और २ लकार भी कितनी क्रियाओं में विना सम्बन्धी स्वर के अपने प्रत्यय लगाते हैं। ये लकार लट् लङ् १ लङ् २ लिट् हैं परन्तु केवल वार्त्ता लोट् संज्ञा विशेषण भावों में सम्बन्धी स्वर नहीं आता हो लेट् और लिङ् में आता है।

५१। इन धातुओं का १ लङ् विना सम्बन्धी स्वर के होता है। 'Ε (ज्ञाल) 'ΑΛΟ ΒΑ ΓΝΟ ΔΟ ΤΛΑ ΘΕ ΔΡΑ (भाग) ΔΥ ΣΒΕ ΣΤΑ ΦΘΑ ΦΥ और बनाई हुई क्रिया βιο भी। और केवल लोट् भाव में ΠΙ धातु की भी यही दशा है।

५२। इन धातुओं के लट् और लङ् विना सम्बन्धी स्वरके होते हैं।

५। दन्त्यव्यंजनान्त क्रिया σκευαδ।

३ लिट्

वार्त्ता भाव।

प्र·	ἐσκεύασται	ἐσκεύασθον	
म·	ἐσκεύασαι	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε
उ·	ἐσκεύασμαι	ἐσκευάσμεθον	ἐσκευάσμεθα

लोट् भाव।

प्र·	ἐσκευάσθω	ἐσκευάσθων	ἐσκευάσθων वा σθωσαν
म·	ἐσκεύασο	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε

सँज्ञा भाव।

ἐσκευάσθαι

विशेषण भाव।

ἐσκευασμενο

३ लोङ्.

प्र·	ἐσκεύαστο	ἐσκευάσθην	
म·	ἐσκεύασο	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε
उ·	ἐσκευάσμην	ἐσκευάσμεθον	ἐσκευάσμεθα

इति ३ लिट् और ३ लोङ् का वर्णन।

अथ सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन।

५०। हम कह आये हैं कि ३ लिट् और ३ लोड़् को छोड़के और २ लकार भी कितनी क्रियाओं में विना सम्बन्धी स्वर के अपने प्रत्यय लगाते हैं। ये लकार लट् लङ् १ लङ् २ लिट् हैं परन्तु केवल वार्त्ती लोट् संज्ञा विशेषण भावों में सम्बन्धी स्वर नहीं आता हो लेट् और लिङ् में आता है।

५१। इन धातुओं का १ लङ् विना सम्बन्धी स्वर के होता है। 'E (डाल) 'ΑΛΟ ΒΑ ΓΝΟ ΔΟ ΤΛΑ ΘΕ ΔΡΑ (भाग) ΔΥ ΣΒΕ ΣΤΑ ΦΘΑ ΦΥ और बनाई हुई क्रिया βιο भी। और केवल लोट् भाव में ΠΙ धातु की भी यही दशा है।

५२। इन धातुओं के लट् और लङ् विना सम्बन्धी स्वरके होते हैं।

५८ **उदाहरण।**

१। νυ लगाने वाला धातु MIΓ।

लट्

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र·	μίγνυσι	μίγνυτον	μιγνῦσι वा νύασι
म·	μίγνυς	μίγνυτον	μίγνυτε
उ·	μίγνυμι		μίγνυμεν

आत्मनेपद।

प्र·	μίγνυται	μίγνυσθον	μίγνυνται
म·	μίγνυσαι	μίγνυσθον	μίγνυσθε
उ·	μίγνυμαι	μιγνύμεθον	μιγνύμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र·	μιγνύτω	μιγνύτων	μίγνυντων वा νύτωσαν
म·	μίγνυθι	μίγνυτον	μίγνυτε

आत्मनेपद ।

प्र· μιγνύσθω	μιγνύσθων	μιγνύσθων वा σθωσαν
म· μίγνυσο	μίγνυσθον	μίγνυσθε

संज्ञाभाव ।

पर· μιγνύναι
आ· μίγνυσθαι

विशेषण भाव ।

पर· μιγνύντ
आ· μιγνυμενο

लङ्

परस्मैपद ।

प्र· ἐμίγνυ	ἐμιγνύτην	ἐμίγνυσαν
म· ἐμίγνυς	ἐμίγνυτον	ἐμίγνυτε
उ· ἐμίγνυν		ἐμίγνυμεν

आत्मनेपद ।

प्र· ἐμίγνυτο	ἐμιγνύσθην	ἐμίγνυντο
म· ἐμίγνυσο	ἐμίγνυσθον	ἐμίγνυσθε
उ· ἐμιγνύμην	ἐμιγνύμεθον	ἐμιγνύμεθα

प्र· διδότω	διδότων	διδόντων वा διδότωσαν
म· δίδοθι	δίδοτον	δίδοτε

आत्मनेपद।

प्र· διδόσθω	διδόσθων	διδόσθων वा διδόσθωσαν
म· δίδοσο	δίδοσθον	δίδοσθε

संज्ञाभाव।

पर· διδόναι
आ· δίδοσθαι

विशेषणभाव।

पर· διδοντ
आ· διδομενο

लङ्

परस्मैपद।

प्र· ἐδίδω	ἐδιδότην	ἐδίδοσαν
म· ἐδίδως	ἐδίδοτον	ἐδίδοτε
उ· ἐδίδων		ἐδίδομεν

आत्मनेपद।

प्र· ἐδίδοτο	ἐδιδόσθην	ἐδίδοντο
म· ἐδίδοσο	ἐδίδοσθον	ἐδίδοσθε
उ· ἐδιδόμην	ἐδιδόμεθον	ἐδιδόμεθα

३। ΣΤΑ

१ लङ्

वाची भाव।

परस्मैपद।

प्र·	ἔστη	ἐστήτην	ἔστησαν
म·	ἔστης	ἔστητον	ἔστητε
उ·	ἔστην		ἔστημεν

आत्मनेपद।

प्र·	ἔστατο	ἐστάσθην	ἔσταντο
म·	ἔστασο	ἔστασθον	ἔστασθε
उ·	ἐστάμην	ἐστάμεθον	ἐστάμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र·	στήτω	στῆτων	στάντων वा στῆτωσαν
म·	στῆθι	στῆτον	στῆτε

आत्मनेपद।

प्र·	στάσθω	στάσθων	στάσθων वा σθωσαν
म·	στάσο	στάσθον	στάσθε

प्र·διδότω	διδότων	διδόντων वा διδότωσαν
म·δίδοθι	δίδοτον	δίδοτε

आत्मनेपद।

प्र·διδόσθω	διδόσθων	διδόσθων वा διδόσθωσαν
म·δίδοσο	δίδοσθον	δίδοσθε

संज्ञाभाव।

पर· διδόναι
आ· δίδοσθαι

विशेषणभाव।

पर· διδοντ
आ· διδομενο

लङ्

परस्मैपद।

प्र· ἐδίδω	ἐδιδότην	ἐδίδοσαν
म· ἐδίδως	ἐδίδοτον	ἐδίδοτε
उ· ἐδίδων		ἐδίδομεν

आत्मनेपद।

प्र· ἐδίδοτο	ἐδιδόσθην	ἐδίδοντο
म· ἐδίδοσο	ἐδίδοσθον	ἐδίδοσθε
उ· ἐδιδόμην	ἐδιδόμεθον	ἐδιδόμεθα

१। लट लङ् १ लृङ् २ लृट १ लृट २ लृट के प्रथम पुरुष के बहुवचन और उत्तम पुरुष के तीनों वचन में ० लगता है और उत्तम पुरुष के एकवचन के परस्मैपद में यह० ω होता है ।
२। इन्हीं लकारों के अवशिष्ट रूपों में ε लगता है ।
३। १ लृट में वैसेही ० ω ε लगते हैं और इन के पहिले ε भी लगता है और संधि से ε० ०υ और εω ω और εε ε८ होते हैं ।
४। २ लृङ् और १ और २ लिट के सब रूपों मे पूर्वकालमें α लगता था परन्तु अब प्रथम पुरुष के एकवचन के परस्मैपद में ε लगता है और सब रूपों में α
५। १ और २ लोङ् के सब रूपों मे ε८ लगता है ।

इतिसम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं कावर्णन ।

अथ सम्बन्धी स्वर का वर्णन ।

८७। पूर्व्वोक्त क्रियाओं को छोड़के और सब क्रियाओं के १ लिट् और १ लोड़् को छोड़के और सब लकारों मे प्रत्ययों के पहिले कोई न कोई सम्बन्धी स्वर लग जाताहै। कहीं α कहीं ε कहीं η कहीं ο कहीं ω कहीं αι कहीं ει कहीं οι और कहीं २ इन में से दो साथ २ लगतेहैं अर्थात् οιε οιη ειη εε εο εω αιε αιη ειε ειω εοιε εοι। और इन से अधिक इन लकारों में ऊपरि लिखित चक्र में के प्रत्यय न्यूनाधिक बदलके लगतेहैं।

८८। अब बतावेंगे कि किस २ प्रत्यय के पहिले कौन् २ सम्बन्धी स्वर लगता है।

वार्त्ता भावमें

१। लट् लङ् १ लङ् २ ल्ट् १ ल्ट् २ ल्ट् लिङ्ट् के प्रथम पुरुष के बहुवचन और उत्तम पुरुष के तीनों वचन में ० लगता है और उत्तम पुरुष के एकवचन के परस्मैपद में यह० ω होता है ।
२। उन्हीं लकारों के अवशिष्ट रूपों में ε लगता है ।
३। १ ल्ट में वैसेही ० ω ε लगते है और इन के पहिले ε भी लगता है और संधि से ε० .०υ और εω ω और εε ε८ होते हैं ।
४।२ लङ् और १ और २ लिट् के सब रूपों मे पूर्वकालमें ८ लगता था परन्तु अब प्रथम पुरुष के एकवचन के परस्मैपद में ε लगता है और सब रूपों में α
५। १ और २ लोङ् के सब रूपों मे ε८ लगता है ।

२। १ और २ लङ् के सब रूपों में ११ लगताहै ।

९९ । लेट् भाव में

१। वार्त्ती भाव का ० ७ और उस का ६ ११ हो जाताहै और उसका ५ ओ का त्यों रहताहै ।

१०० । लिङ् भावमें

१। जिन क्रियाओं के वार्त्ती भाव में सम्बन्धी स्वर नहीं लगता है उन में से ५-अन्त क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ५।११ लगताहै और ६- अन्त क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपदमें ६।११ लगता है और ०- अन्त क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ०।११ लगताहै परन्तु एकवचनमें और बहुवचन के मध्यम और उत्तम पुरुषों में इन का ११ छूट भी सकताहै और उन के बहुवचन के प्रथम पुरुष में ११ ६ होसकता है ।

यथा ।

φA के लट् के लिङ् का परस्मैपद ।

प्र· φαίη	φαιήτην	φαίησαν
म· φαίης	φαίητον	φαίητε
उ· φαίην		φαίημεν

अथवा

प्र· φαίη	φαῖτην	φαῖεν
म· φαίης	φαῖτον	φαῖτε
उ· φαίην		φαῖμεν

इस क्रम को छोड़के और सब क्रियाओं और इन के आत्मनेपद को भी जानने ।

१। लट् २ लोट् १ लृट् २ लङ् लिङ्लट् १ लिट् २ लिङ् के परस्मैपद के प्रथम पुरुष के बहुवचन में οιε परन्तु और सब रूपों के दोनों पद में οι लगता है ।

२। १ लृट् में εοι और εοιε लगते हैं परन्तु संधिसे ये οι और οιε होते हैं।

८।१ और २ लुङ् के सब रूपों में ग ल-
गता है।

९९। लोट भावमें

१। कर्त्ता भाव का ० ८ और उस का ६
ग हो जाता है और उसका ७ ओं का त्यों
रहता है।

१००। लिङ् भावमें

१। जिन क्रियाओं के कर्त्ता भाव में सम्ब-
न्धी स्वर नहीं लगता है उन में से ८-
अन्त क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ८।ग
लगता है और ६-अन्त क्रियाओं के लिङ्
के परस्मैपद में ६।ग लगता है और ०-अन्त
क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ०।ग लग-
ता है परन्तु एकवचन और बहुवचन के
प्रथम और उत्तम पुरुषों में इन का ग
छूट भी सकता है और उन के बहुवचन
के प्रथम पुरुष में ग ६ हो सकता है।

किन्तु अथेना नगर की भाषा में ०८ सब रूपों में लगता है ।

४। २ लङ् के प्रथम पुरुष के बहुवचन के परस्मैपद में ∝ιε परन्तु और सब रूपों में ∝ι लगता है । किन्तु अथेना नगरवासियों की भाषा में प्रथम पुरुष के एकवचन में ειε लगता है और प्रथम पुरुष के बहुवचन और मध्यम पुरुष के एकवचन में ει∝ लगता है ।

५। १ और २ लट् और IΔ के २ लिङ् के सब रूपों में ειη लगता है परन्तु प्रथम पुरुष के बहुवचन में ειε भी और मध्यम और उत्तम पुरुषों के बहुवचन में ει भी लग सकता है ।

२०१। लोट् भाव में

१। लट् १ लङ् १ लिट् २ लिट् लिङ्ट् के ντων प्रत्यय के पहिले ० और सब रूपों में ε लगता है ।

२। २ लुङ् के सब रूपों में ८ लगता है।

३। १ लृच् २ लृच् के सब रूपों में ७ लगता है।

१०२। संज्ञा भावमें

१। लट् १ लुङ् २ लृट् १ लिट् २ लिट् १ लृच् २ लृच् लिङ्लट् के प्रत्ययों के पहिले ६ लगता है।

२। १ लृट् में ६६ लगता है सो ६१ होताहै।

३। २ लुङ् में ८ लगता है।

४। १ और २ लृच् में ७ लगताहै।

१०३। विशेषण भावमें

१। लट् १ लुङ् २ लृट् १ लिट् २ लिट् लिङ्लट् १ लृच् २ लृच् में ० लगताहै।

२। १ लृट् के प्रत्ययों के पहिले ६० लगताहै सो ०८ होताहै।

३। २ लुङ् मे ८ लगता है

४। १ और २ लृच् में ६ लगता है।

१०४। अब बतावेंगे कि इन सम्बन्धी स्वरों से मिलके ऊपरिलिखित चक्र में के प्रत्यय किस प्रकार से बदलतेहैं।

१। १ और २ लिङ्ग के ετι में का τι लुप्त होताहै और अवशिष्ट सब लकारों के ετι और ητι में का τ छूटके ει और ῃ होतेहैं।

२। οντι ουσι और ωντι ωσι और αντι ασι होतेहैं। पर कभी २ αντι αν भी हो सकताहै।

३। εσι εις और ησι ῃς और ασι ας होते हैं। पर कभी २ १ और २ लिङ्ग में यह ας αοθα वा σθα होताहै।

४। εσαι और ησαι का σ छूटके εαι ει वा ῃ होताहै और

५। μι प्रत्यय लुप्त

६। ετ τ ητ

οιητ का τ लुप्त होताहै।

७। ειϛ का ϛ कभी २ σθα होताहै।

८। ντ का τ सदा लुप्तहोताहै और ν के पहिले σα भी १ लृ० २ लृ० १ लोट्. २ लो० ट्. में लगताहै और कभी २ और लकारों में भी।

९। εσο ασο οισο αισο εισο का σ छूटताहै और तब εο ου और αο ω संधि से होते हैं

१०। ομ αμ ειμ ημ ειημ οιημ का μ सदा ν होताहै पर οιμ αιμ के अन्त में ι लगता है।

११। εθι का θι सदा लुप्त होताहै पर αθι ον से बदलजाताहै और ηθι ητι होजाता है।

१२। ντων τωσαν से बदल सकता है और η के उपरान्त सदा ऐसा बदलता

οιητ का τ लुप्त होताहै।

७। ειϛ का ϛ कभी २ σθα होताहै।

८। ντ का τ सदा लुप्तहोताहै और ν के पहिले σα भी १ लच २ लच १ लोट्. २ लोट्. में लगताहै और कभी २ और लकारों में भी।

९। εσο ασο οισο αισο εισο का σ छूटताहै और तब εο ου और αο ω संधि से होते हैं

१०। ομ αμ ειμ ημ ειημ οιημ का μ सदा ν होताहै पर οιμ αιμ के अन्त में ι लगता है।

११। εθι का θι सदा लुप्त होताहै पर αθι ον से बदलजाताहै और ηθι ητι होजाता है।

१२। ντων τωσαν से बदल सकता है और η के उपरान्त सदा ऐसा बदलता

है । परन्तु इस $\tau \omega \sigma \alpha \nu$ के पहिले
ο नहीं वरन् उस के स्थाने ε लगताहै।
१३। बहुवचन का $\sigma\theta\omega\nu$ $\sigma\theta\omega\sigma\alpha\nu$ भी
हो सकता है।
१४। १ और २ लिङ्ग का $\epsilon\nu\alpha\iota$ वैसा ही रह
ताहै पर और सबलकारों का $\epsilon\nu\alpha\iota$ $\epsilon\iota\nu$
से बदल जाताहै और $\alpha\nu\alpha\iota$ $\alpha\iota$ हो जा
ता है।
१५। १ और २ लिङ्ग के $o\nu\tau$ का ν छूट
जाता है।
१६। जिन क्रियाओं के अन्तमें α ε ο है
उनमें यह स्वर सम्बन्धी स्वर से संधि के
नियमानुसार मिलताहै। परन्तु इन चार बा
तों को जान रखो।
१। ο और $\epsilon\iota\nu$ मिलके $o\iota\nu$ नहीं वरन्
$o\upsilon\nu$ होता है। यथा $\mu\iota\sigma\theta\acute{o}\epsilon\iota\nu$ से
$\mu\iota\sigma\theta o\tilde{\upsilon}\nu$ ।

२। इन क्रियाओं के लट के लिङ् के परस्मैपद में प्राय οιη सम्बन्धी स्वर लगताहै। यथा τιμα से τιμῴη τιμῴητην τιμῴησαν इत्यादि और φιλε से φιλοίη φιλοίητην φιλοίησαν इत्यादि।

३। ΖΑ ΧΡΑ(काममें लेना)ΣΜΑ ΨΑ πεινα διψα का α ε और ει से मिलके α ᾳ नहीं बरन η ῃ होताहै यथा χράεται से χρῆται और ζαειν से ζῆν।

४। एकाक्षरान्वित धातुओं में केवल ει प्रत्यय के साथ संधि होताहै और किसी प्रत्यय के साथ नहीं होताहै। यथा πνέει से πνεῖ परन्तु πνέουσι πνοῦσι नहीं होताहै।

५। जहां २ प्रथम पुरुष के अन्तमें ε वा ι स्वरादिकशब्दके पहिले आता है तहां २ प्रत्यय के अन्तमें ν लगताहै। यथा

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· μενοῖ	μενοίτην	μενοῖεν
म· μενοῖς	μενοῖτον	μενοῖτε
उ· μενοῖμι		μενοῖμεν

अथवा

प्र· μενοίη	μενοιήτην	μενοίησαν
म· μενοίης	μενοίητον	μενοίητε
उ· μενοίην		μενοίημεν

आत्मनेपद।

प्र· θανοῖτο	θανοίσθην	θανοῖντο
म· θανοῖο	θανοῖσθον	θανοῖσθε
उ· θανοίμην	θανοίμεθον	θανοίμεθα

संज्ञाभाव।

पर· μενεῖν

आ· θανεῖσθαι

विशेषण भाव।

प्र· βαλέτω	βαλέτων	βαλόντων वाβαλέτωσαν
म· βάλε	βάλετον	βάλετε

आत्मनेपद।

प्र· λαβέσθω	λαβέσθων	λαβέσθων वा σθωσαν
म· λαβοῦ	λάβεσθον	λάβεσθε

संज्ञाभाव।

पर βαλεῖν

आ· λαβέσθαι

विशेषणभाव।

पर βαλοντ

आ· λαβομενο

---

२ लट्

ФΥΛΑΚ और ΠΟΙΕ।

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र· φύλαξει	φυλάξετον	φυλάξουσι
म· φυλάξεις	φυλάξετον	φυλάξετε
उ· φυλάξω		φυλάξομεν

आत्मनेपद।

प्र· ποιήσοται	ποιήσεσθον	ποιήσονται
म· ποιήσῃ वा σει	ποιήσεσθον	ποιήσεσθε
उ· ποιήσομαι	ποιησόμεθον	ποιησόμεθα

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· φυλάξοι	φυλαξοίτην	φυλάξοιεν
म· φυλάξοις	φυλάξοιτον	φυλάξοιτε
उ· φυλάξοιμι		φυλάξοιμεν

आत्मनेपद।

प्र· ποιήσοιτο	ποιησοίσθην	ποιήσοιντο
म· ποιήσοιο	ποιήσοισθον	ποιήσοισθε
उ· ποιησοίμην	ποιησοίμεθον	ποιησοίμεθα

संज्ञा भाव।

पर· φυλάξειν

आ· ποιήσεσθαι

विशेषण भाव।

पर· φυλαξοντ

आ· ποιησομενο

१०८। २ लङ्

ΠΡΑΓ और ΣΤΕΛ

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἔπραξε	ἐπραξάτην	ἔπραξαν
म· ἔπραξας	ἐπράξατον	ἐπράξατε
उ· ἔπραξα		ἐπράξαμεν

आत्मनेपद।

प्र· ἐστείλατο	ἐστειλάσθην	ἐστείλαντο
म· ἐστείλω	ἐστείλασθον	ἐστείλασθε
उ· ἐστειλάμην	ἐστειλάμεθον	ἐστειλάμεθα

लेट् भाव।

परस्मैपद।

वार्त्ता भाव ।

प्र·σπαρήσεται	σπαρήσεσθον	σπαρήσονται
म·σπαρήσηι σει	σπαρήσεσθον	σπαρήσεσθε
उ·σπαρήσομαι	σπαρησόμεθον	σπαρησόμεθα

लिङ्. भाव ।

प्र·σπαρήσοιτο	σπαρησοίσθην	σπαρήσοιντο
म·σπαρήσοιο	σπαρήσοισθον	σπαρήσοισθε
उ·σπαρησοίμην	σπαρησοίμεθον	σπαρησοίμεθα

संज्ञा भाव ।

σπαρήσεσθαι

विशेषणभाव ।

σπερησομενο

१११ । २ लेच

ΛΕΓ ।

वार्त्ता भाव ।

प्र· ἐλέχθη	ἐλεχθήτην	ἐλέχθησαν
म· ἐλέχθης	ἐλέχθητον	ἐλέχθητε
उ· ἐλέχθην		ἐλέχθημεν

लेट् भाव।

प्र· λεχθῇ	λεχθῆτον	λεχθῶσι
म· λεχθῇς	λεχθῆτον	λεχθῆτε
उ λεχθῶ		λεχθῶμεν

लिङ् भाव।

प्र λεχθείη	λεχθειήτην	λεχθείησαν वा χθεῖεν
म· λεχθείης	λεχθείητον	λεχθείητε वा χθεῖτε
उ· λεχθείην		λεχθείημεν वा χθεῖμεν

लोट् भाव।

प्र· λεχθήτω	λεχθήτων	λεχθήτωσαν
म· λέχθητι	λέχθητον	λέχθητε

संज्ञा भाव।

λεχθῆναι

विशेषणभाव।

λεχθεντ

२ लृट् ।

ZHTE

वार्त्ता भाव।

प्र.	ζητηθήσεται	ζητηθήσεσθον	ζητηθήσονται
म.	ζητηθήσῃ वा σει	ζητηθήσεσθον	ζητηθήσεσθε
उ.	ζητηθήσομαι	ζητηθησόμεθον	ζητηθησόμεθα

लिङ् भाव।

प्र.	ζητηθήσοιτο	ζητηθησοίσθην	ζητηθήσοιντο
म.	ζητηθήσοιο	ζητηθήσοισθον	ζητηθήσοισθε
उ.	ζητηθησοίμην	ζητηθησοίμεθον	ζητηθησοίμεθα

संज्ञा भाव।

ζητηθήσεσθαι

विशेषण भाव।

ζητηθησομενο

লিঙ্ট

ΓΡΑΦ

বার্ত্তা ভাব।

প্র· γεγράψεται	γεγράψεσθον	γεγράψονται
ম· γεγράψῃ বা ψει	γεγράψεσθον	γεγράψεσθε
উ· γεγράψομαι	γεγραψόμεθον	γεγραψόμεθα

লিঙ্ ভাব।

প্র· γεγράψοιτο	γεγραψοίσθην	γεγράψοιντο
ম· γεγράψοιο	γεγράψοισθον	γεγράψοισθε
উ· γεγραψοίμην	γεγραψοίμεθον	γεγραψοίμεθα

সংজ্ঞাভাব।

γεγράψεσθαι

বিশেষণভাব।

γεγραψόμενο

११४ ।

१लिट्

KPIN

वार्त्ता भाव।

प्र·κέκρικε	κεκρικάτην	κεκρίκασι
म·κέκρικας	κεκρίκατον	κεκρίκατε
उ κέκρικα		κεκρίκαμεν

लेट् भाव।

प्र·κεκρίκῃ	κεκρίκητον	κεκρίκωσι
म·κεκρίκῃς	κεκρίκητον	κεκρίκητε
उ·κεκρίκω		κεκρίκωμεν

लिङ् भाव।

प्र·κεκρίκοι	κεκρικοίτην	κεκρίκοιεν
म·κεκρίκοις	κεκρίκοιτον	κεκρίκοιτε
उ·κεκρίκοιμι		κεκρίκοιμε

लोट् भाव।

प्र· κεκρικέτω	κεκρικέτων	κεκρίκωσ
म·κέκρικε	κεκρίκετον	κεκρίκετ

संज्ञाभाव।

κεκρικέναι

विशेषणभाव।

κεκρικοτ

११५।

१स्तोद्र.

ΦΥ।

प्र·ἐπεφύκει	ἐπεφυκείτην	ἐπεφύκεισαν
म·ἐπεφύκεις	ἐπεφύκειτον	ἐπεφύκειτε
उ·ἐπεφύκειν		ἐπεφύκειμεν

११६।

२लिट्

ΓΕΝ।

कार्त्तृ भाव।

प्र· γέγονε	γεγόνατον	γεγόνασι
म· γέγονας	γεγόνατον	γεγόνατε
उ· γέγονα		γεγόναμεν

लेट् भाव।

प्र· γεγόνῃ	γεγόνητον	γεγόνωσι
म· γεγόνῃς	γεγόνητον	γεγόνητε
उ· γεγόνω		γεγόνωμεν

लिङ् भाव।

प्र· γεγόνοι	γεγονοίτην	γεγόνοιεν
म· γεγόνοις	γεγόνοιτον	γεγόνοιτε
उ· γεγόνοιμι		γεγόνοιμεν

लोट् भाव।

प्र· γεγονέτω	γεγονέτων	γεγονόντων वा νέτωσαν
म· γέγονε	γεγόνετον	γεγόνετε

संज्ञाभाव।

γεγονέναι

विशेषणभाव।

γεγονον

॥५॥ २ लोड़्.

ΦΘΕΡ

प्र·ἐφθόρει	ἐφθορείτην	ἐφθόρεισαν
म·ἐφθόρεις	ἐφθόρειτον	ἐφθόρειτε
उ·ἐφθάρειν		ἐφθόρειμεν

११८। लट्

ΓΝΟ और ΠΥΘ।

सार्व्वी भाव।

परस्मैपद।

प्र·γινώσκει	γινώσκετον	γινώσκουσι
म·γινώσκεις	γινώσκετον	γινώσκετε
उ·γινώσκω		γινώσκομεν

आत्मनेपद।

प्र·πυνθάνεται	πυνθάνεσθον	πυνθάνονται
म·πυνθάνῃ वा νει	πυνθάνεσθον	πυνθάνεσθε
उ·πυνθάνομαι	πυνθανόμεθον	πυνθανόμεθα

लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· γινώσκῃ	γινώσκητον	γινώσκωσι
म· γινώσκῃς	γινώσκητον	γινώσκητε
उ· γινώσκω		γινώσκωμεν

आत्मनेपद।

प्र· πυνθάνηται	πυνθάνησθον	πυνθάνωνται
म· πυνθάνῃ	πυνθάνησθον	πυνθάνησθε
उ· πυνθάνωμαι	πυνθανώμεθον	πυνθανώμεθα

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· γινώσκοι	γινωσκοίτην	γινώσκοιεν
म· γινώσκοις	γινωσκοιτόν	γινώσκοιτε
उ· γινώσκοιμι		γινώσκοιμεν

आत्मने पद।

आत्मनेपद

प्र· πυνθάνοιτο	πυνθανοίσθην	πυνθάνοιντο
म· πυνθάνοιο	πυνθάνοισθον	πυνθάνοισθε
उ· πυνθανοίμην	πυνθανοίμεθον	πυνθανοίμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· γινωσκέτω	γινωσκέτων	γινωσκόντων वा σκέτωσαν
म· γίνωσκε	γινωσκετον	γινώσκετε

आत्मनेपद।

प्र· πυνθανέσθω	πυνθανέσθων	πυνθανέσθων वा σθωσαν
म· πυνθάνου	πυνθάνεσθον	πυνθάνεσθε

संज्ञा भाव।

पर· γινώσκειν

आ· πυνθάνεσθαι

विशेषणभाव।

पर· γινωσκοντ

आ πυνθανομενο

विशेषणभाव।
ὀντ
लङ्

प्र॰ ἦν	ἤτην	ἦσαν
म॰ ἦς वा ἦσθα	ἦτον	ἦτε
उ॰ ἦν वा ἤμην		ἦμεν

१२१। हम कह आये हैं कि २ लिट और २ लोट् के प्रथम पुरुषका बहुवचन वार्त्ता भाव में और ३ लिट का कोई रूप लेट और लिङ् भावों में नहीं होता है। सो उन के अर्थ में २ लिट का विशेषण भाव ἘΣ धातु के इए रूप के साथ आता है। यथा ΛΥ से २ लिट के वार्त्ता भाव के अर्थ में λελύμενο εἰσὶ।उसी के लेट भाव के अर्थ में λελυμενο ᾖ ἦτον ὦσι इत्यादि। उसी के लिङ् भाव के अर्थ में λελυμενο εἴη εἰήτην εἶεν इत्यादि। और २ लो-

उ. के अर्थमें λελυμενο ἦσαν ।

---

१२२ २।?I ।

यह धातु केवल लट और लङ् के केवल परस्मैपदमें होता है। लट के एकवचन के वार्त्ता भाव में और लङ् के तीनों वचन में धातु ει होता है। और लङ् का आगम η है।

लट

वार्त्ता भाव।

प्र· εἶσι	ἴτον	ἴασι
म: εἶς वा εἶ	ἴτον	ἴτε
उ· εἶμι		ἴμεν

लेट भाव।

प्र· ἴῃ	ἴητον	ἴωσι	इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र· ἴοι	ἴοίτην	ἴοιεν	इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ἴτω	ἴτων	ἰόντων वा ἴτωσαν
म· ἴθι	ἴτον	ἴτε

संज्ञा भाव।
ἰέναι

विशेषण भाव।
ἰοντ

लङ्

प्र· ᾖει	ᾐείτην	ᾔεισαν
म· ᾔεις	ᾔειτον	ᾔειτε
उ· ᾔειν वा ᾖα		ᾔειμεν

इस धातु के लट् के वार्त्ता भाव का अर्थ प्राय वर्तमान के भविष्यत् का है।

१२३। ३। ΈΛΥΘ और ΕΡΧ।

ΕΡΧ लट् और लङ् में होता है। ΈΛΥΘ और सब लकारों में। ΕΛΥΘ का υ

२ लट् में εν होता है और १ लङ् में ल· म होताहै ।

१ लङ्

वार्त्ता भाव।

प्र· ἦλθε	ἠλθέτην	ἦλθον	इत्यादि

लेट् भाव।

प्र· ἔλθῃ	ἔλθητον	ἔλθωσι	इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र· ἔλθοι	ἐλθοίτην	ἔλθοιεν	इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ἐλθέτω	ἐλθέτων	ἐλθόντων वा ἐλθέτωσαν
म· ἔλθε	ἔλθετον	ἔλθετε

संज्ञा भाव।

ἐλθεῖν

विशेषणभाव।

ἐλθοντ

१ लिट्

वार्त्ता भाव।

प्र· ἐλήλυθε ἐληλύθατον ἐληλύθασι इत्यादि

लेट् भाव।

प्र· ἐληλύθῃ ἐληλύθητον ἐληλύθωσι इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र· ἐληλύθοι ἐληλυθοίτην ἐληλύθοιεν इत्या·

संज्ञाभाव।

ἐληλυθέναι

विशेषणभाव।

ἐληλυθοντ

१ लोङ्

प्र· ἐληλύθει ἐληλυθείτην ἐληλύθεισαν इ·

२ लृट्

वार्त्ता भाव।

प्र· ἐλεύσεται ἐλεύσεσθον ἐλεύσονται इत्या·

लिङ् भाव।

प्र· ἕξει ἕξετον ἕξουσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἕξεται ἕξεσθον ἕξονται इत्यादि

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἕξοι ἑξοίτην ἕξοιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἕξοιτο ἑξοίσθην ἕξοιντο इत्यादि

संज्ञा भाव।

परस्मैपद।

ἕξειν

आत्मनेपद।

ἕξεσθαι

विशेषणभाव।

पर· ἑξοντ

आ· ἑξομενο

लट्
वार्त्ता भाव।
परस्मैपद।

प्र· ἔχει ἔχτον ἔχουσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἔχεται ἔχεσθον ἔχονται इत्यादि

लेट् भाव।
परस्मैपद।

प्र· ἔχῃ ἔχητον ἔχωσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἔχηται ἔχησθον ἔχωνται इत्यादि

लिङ् भाव।
परस्मैपद।

प्र· ἔχοι ἔχοίτην ἔχοιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἔχοιτο ἔχοίσθην ἔχοιντο इत्यादि,

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἐχέτω ἐχέτων ἐχόντων वा ἐχέτωσαν इ·

आत्मनेपद।

प्र· ἐχέσθω ἐχέσθων ἐχέσθων वा σθωσαν इ·

संज्ञाभाव।

पर· ἔχειν

आ· ἔχεσθαι

विशेषणभाव।

पर· ἐχοντ

आ· ἐχομενο

लङ्।

परस्मैपद।

प्र· εἶχε εἰχέτην εἶχον इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· εἴχετο εἰχέσθην εἴχοντο इत्यादि

१२५। ५। 'OPA 'OIL 'IΔ ।

'OPA से लट् लङ् १ लिट् ३ लिट् १ लोङ् ३ लोङ् ।

'OIL से २ लिट् ३ लिट् २ लोङ् ३ लोङ् २ लुच् २ लृच् ।

'IΔ से १ लुङ् २ लिट् २ लोङ्

१ लुङ् का ८ आगम से मिलके ६८ होता है ।

'IΔ के २ लिट् का अभ्यास लेट् लिङ् संज्ञा विशेषण में ६८ से होता है । वार्त्ता भाव के एकवचन में ०८ से । और द्विवचन और बहुवचन में नहीं होता है परन्तु धातु का δ σ से बदल जाता है। ऐसाही लोट् के सब रूपों में भी ।

२ लोङ् में ६८ ही में आगम लगके ११ होताहै ।

'IΔ के २ लिट् का अर्थ जानने का है

और सब लकारों का अर्थ देखने का है।

१लङ्.

वार्त्ताभाव।

परस्मैपद।

प्र· εἶδε εἰδέτην εἶδον इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· εἴδετο εἰδέσθην εἴδοντο इत्यादि

लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἴδῃ ἴδητον ἴδωσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἴδηται ἴδησθον ἴδωνται इत्यादि

लिङ्.भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἴδοι ἰδοίτην ἴδοιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र॰ ἴδοιτο ἰδοίσθην ἴδοιντο इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ ἰδέτω ἰδέτων ἰδόντων वा ἰδέτωσαν इत्या॰

आत्मनेपद।

प्र॰ ἰδέσθω ἰδέσθων ἰδέσθων वा σθωσαν इ॰

संज्ञाभाव।

पर॰ ἰδεῖν

आ॰ ἰδέσθαι

विशेषणभाव

पर॰ ἰδοντ

आ॰ ἰδομενο

२लिट्

वार्त्ता भाव।

प्र॰ οἶδε ἴστον ἴσασι

म॰ οἶσθα वा οἶδας ἴστον ἴστε

उ॰ οἶδα ἴσμεν

संज्ञा भाव।

ὀφθῆναι

विशेषणभाव।

ὀφθεντ

२ ऌट्

वार्त्ताभाव।

प्र॰ὀφθήσεται ὀφθήσεσθον ὀφθήσονται इत्या॰

लिङ् भाव।

प्र॰ὀφθήσοιτο ὀφθησοίσθην ὀφθήσοιντο इत्या॰

संज्ञाभाव।

ὀφθήσεσθαι

विशेषणभाव।

ὀφθησομενο

३ लिट्

वार्त्ताभाव।

लिङ् भाव।

प्र· ὄψοιτο ὀψοίσθην ὄψοιντο इत्यादि

संज्ञाभाव।

ὄψεσθαι

विशेषणभाव।

ὀψομενο

२ लुङ्

वाच्यभाव।

प्र· ὤφθη ὠφθήτην ὤφθησαν इत्यादि

लेट् भाव।

प्र· ὀφθῇ ὀφθῆτον ὀφθῶσι इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र· ὀφθείη ὀφθειήτην ὀφθείησαν इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ὀφθήτω ὀφθήτων ὀφθήτωσαν इत्यादि

संज्ञा भाव।

ὀφθῆναι

विशेषणभाव।

ὀφθεντ

२लृट्

वाक्यभाव।

प्र·ὀφθήσεται ὀφθήσεσθον ὀφθήσονται इत्या·

लिङ्·भाव।

प्र·ὀφθήσοιτο ὀφθησοίσθην ὀφθήσοιντο इत्या·

संज्ञाभाव।

ὀφθήσεσθαι

विशेषणभाव।

ὀφθησομενο

३ लिट्

वाक्यभाव।

प्र· ὤπται ὤφθον इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ὤφθω ὤφθων ὤφθων वा ὤφθωσαν इ·

संज्ञाभाव।

ὤφθαι

विशेषणभाव।

ὠμμενο

इ लोट्.

प्र· ὤπτο ὤφθην इत्यादि

लट्

वार्त्ताभाव।

परस्मैपद।

प्र· ὁρᾷ ὁρᾶτον ὁρῶσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ὁρᾶται ὁρᾶσθον ὁρῶνται इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ ὁρᾷ ὁρᾶτον ὁρῶσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र॰ ὁρᾶται ὁρᾶσθον ὁρῶνται इत्यादि

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ ὁρῴη ὁρῳήτην ὁρῴησαν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र॰ ὁρῷτο ὁρῴσθην ὁρῷντο इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ ὁράτω ὁράτων ὁράτωσαν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र॰ ὁράσθω ὁράσθων ὁράσθων वा ὁράσθωσαν इत्या॰

संज्ञाभाव।

पर॰ ὁρᾷν

आ· ὁρᾶσθαι

विशेषणभाव।

पर· ὁρωντ

आ· ὁρωμενο

लङ्.

परस्मैपद।

प्र· ἑωρᾶ ἑωράτην ἑώρων इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἑωρᾶτο ἑωράσθην ἑωρᾶντο इत्यादि

१लिट्

वार्त्ता भाव।

प्र· ἑώρακε ἑωράκατον ἑωράκασι इत्या·

लेट् भाव।

प्र· ἑωράκῃ ἑωράκητον ἑωράκωσι इत्या·

लिङ् भाव।

प्र· ἑωράκοι ἑωρακοίτην ἑωράκοιεν इ·

लोट्भाव।

प्र·ἑωρακέτω ἑωρακέτων ἑωρακόντων वा κέτωσαν

संज्ञाभाव।

ἑωρακέναι

विशेषणभाव।

ἑωρακοτ

१लोङ्

प्र·ἑωράκει ἑωρακείτην ἑωράκεισαν इ·

३लिट्

वाच्याभाव।

प्र·ἑώραται ἑώρασθον इत्यादि

संज्ञाभाव।

ἑωρᾶσθαι

विशेषणभाव।

ἑωραμενο

१लोङ्

प्र·ἑώρατο ἑωράσθην इत्यादि

२लिट्

वर्त्तमान।

प्र·ὀπωπε ὀπώπατον ὀπώπασι इत्या·

लेट्‌भाव।

प्र·ὀπώπη ὀπώπητον ὀπώπωσι इत्या·

लिङ्‌भाव।

प्र·ὀπώποι ὀπωποίτην ὀπώποιεν इत्या·

लोट्‌भाव।

प्र·ὀπωπέτω ὀπωπέτων ὀπωπόντων वा πέτωσαν

संज्ञाभाव।

ὀπωπεναι

विशेषणभाव।

ὀπωποτ

२लोट्‌

प्र·ὀπώπει ὀπωπείτην ὀπώπεισαν इत्या·

१२९। ἘΡΕΝΕΚ ʼΟΙ ΦΕΡ

ʼΕΝΕΚ से १ लुङ्‌ २ लुङ्‌ १ लिट्‌ ३ लिट्‌

१ लोङ् ३ लोङ् २ लृच २ ल्रच् । परन्तु १ लङ् २ लङ् मे x के पहिले γ आताहै और १ लिट् ३ लिट् में दूना अभ्यास होता है ।

ΟΙ से २ ल्टट् ।

ΦΕΡ से लट् और लङ् ।

१लङ्

वार्त्ताभाव ।

प्र॰ ἤνεγκε ἠνεγκέτην ἤνεγκον इत्यादि

लेट्भाव ।

प्र॰ ἐνέγκῃ ἐνέγκητον ἐνέγκωσι इत्यादि

लिङ् भाव ।

प्र॰ ἐνέγκοι ἐνεγκοίτην ἐνέγκοιεν इत्यादि

लोट् भाव ।

प्र॰ ἐνεγκέτω ἐνεγκέτων ἐνεγκόντων वा ἐνεγκέτωσαν

संज्ञा भाव ।

ἐνεγκεῖν

विशेषणभाव ।

ἐνεγκοντ

२लङ्

वाली भाव।

प्र॰ἤνεγκε ἠνεγκάτην ἤνεγκαν इत्या॰

लोट् भाव।

प्र॰ἐνεγκάτω ἐνεγκάτων ἐνεγκάντων वा
χάτωσαν

संज्ञाभाव।

ἐνεγκαι

विशेषणभाव।

ἐνεγκαντ

१लिट्

वाली भाव।

प्र॰ἐνήνοχε ἐνηνόχατον ἐνηνόχασι इ॰

लेट् भाव।

प्र॰ἐνηνόχη ἐνηνόχητον ἐνηνόχωσι इ॰

लोट् भाव।

प्र॰ἐνηνοχέτω ἐνηνοχέτων ἐνηνόχον-
των वा χέτωσαν

संज्ञाभाव।

ἐνηνοχέναι

विशेषणाभाव।

ἐνηνοχοτ

१ लोट्

प्र· ἐνηνόχει ἐνηνοχείτην ἐνηνόχεισαν ३·

३ लिट्

वाच्यभाव।

प्र· ἐνήνεκται ἐνήνεχθον इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ἐνηνέχθω ἐνηνέχθων ἐνηνέχθων वा χθωσαν

संज्ञा भाव।

ἐνηνέχθαι

विशेषणाभाव।

ἐνηνεγμενο

३ लोट्

प्र· ἐνήνεκτο ἐνηνέχθην इत्यादि

वार्त्ता भाव।

प्र· ἠνέχθη ἠνεχθήτην ἠνέχθησαν इत्या·

लेट् भाव।

प्र· ἐνεχθῇ ἐνεχθῆτον ἐνεχθῶσι इत्या·

लिङ् भाव।

प्र· ἐνεχείη ἐνεχθειήτην ἐνεχθείησαν इ·

लोट् भाव।

प्र· ἐνεχθήτω ἐνεχθήτων ἐνεχθήτωσαν इ·

संज्ञा भाव।

ἐνεχθῆναι

विशेषण भाव।

ἐνεχθεντ

२ऌट्

वार्त्ता भाव।

प्र· ἐνεχθήσεται ἐνεχθήσεσθον ἐνεχθήσονται इ·

लिङ् भाव।

प्र· ἐνεχθήσοιτο ἐνεχθησοίσθην ἐνεχθήσοιντο इ·

संज्ञाभाव।

ἐνεχθήσεσθαι

विशेषणभाव।

ἐνεχθησομενο

२लृट

वार्त्ताभाव।

प्र· οἴσει οἴσετον οἴσουσι इत्यादि

लिङ्‌भाव।

प्र· οἴσοι οἰσοίτην οἴσοιεν इत्यादि

संज्ञाभाव।

οἴσειν

विशेषणभाव।

οἰσοντ

लट

वार्त्ताभाव।

परस्मैपद।

प्र· φέρει φέρετον φέρουσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र·φέρεται φέρεσθον φέρονται इत्यादि

लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र·φέρῃ φέρητον φέρωσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र·φέρηται φέρησθον φέρωνται इत्या·

लिङ्·भाव।

परस्मैपद।

प्र·φέροι φεροίτην φέροιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र·φέροιτο φεροίτην φέροιντο इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र·φερέτω φερέτων φερόντων वा φερέτωσαν इ·

आत्मनेपद।

प्र· εἰρήσθω εἰρήσθων εἰρήσθων वा σθωσαν

संज्ञाभाव।

εἰρῆσθαι

विशेषणभाव।

εἰρημενο

इत्योट्.

प्र· εἴρητο εἰρήσθην εἴρηντο इत्यादि

२लङ

वाक्षाभाव।

प्र· ἐῤῥήθη ἐῤῥήθητην ἐῤῥήθησαν इत्यादि

लेट्भाव।

प्र· ῥηθῆ ῥηθῆτον ῥηθῶσι इत्यादि

लिङ्भाव।

प्र· ῥηθείη ῥηθειήτην ῥηθείησαν इत्यादि

लोट्भाव।

प्र· ῥηθήτω ῥηθήτων ῥηθήτωσαν इत्यादि

संज्ञाभाव।

ἐρεῖν

विशेषणभाव।

ἐροῦντ

१ लिट

वाच्यभाव।

प्र॰ εἴρηκε εἰρήκατον εἰρήκασι इत्यादि

संज्ञाभाव।

εἰρηκέναι

विशेषणभाव।

εἰρηκοτ

१ लोङ्.

प्र॰ εἰρήκει εἰρηκείτην εἰρήκεισαν इत्या

२ लिट

कर्मभाव।

प्र॰ εἴρηται εἴρησθον εἴρηνται इत्यादि

संज्ञाभाव।

प्र॰ εἰρήσθω εἰρήσθων εἰρήσθων वा σθω σαν

संज्ञाभाव।

εἰρῆσθαι

विशेषणभाव।

εἰρημενο

इलोङ्.

प्र॰ εἴρητο εἰρήσθην εἴρηντο इत्यादि

२लङ्

वाक्तीभाव।

प्र॰ ἐῤῥήθη ἐῤῥήθητην ἐῤῥήθησαν इत्यादि

लेट्भाव।

प्र॰ ῥηθῇ ῥηθῆτον ῥηθῶσι इत्यादि

लिङ्भाव।

प्र॰ ῥηθείη ῥηθειήτην ῥηθείησαν इत्यादि

लोट्भाव।

प्र॰ ῥηθήτω ῥηθήτων ῥηθήτωσαν इत्यादि

१३०। BAΣTAΔ BAΣTAΓ

BAΣTAΓ से २ लुङ् ।

BAΣTAΔ से और सब लकार ।

१३१। 'EΔ ΦAΓ

ΦAΓ से १ लुङ् ।

'EΔ से और सब लकार ।

१३२। ΠI ΠO

ΠI से १ लुङ् २ लृट् लट् लङ् ।

ΠO से १ लिट् ३ लिट् २ लुङ् ।

१३३। TPAΓ TPΩΓ

TPAΓ से १ लुङ् ।

TPΩΓ से लट् लङ् २ लृट् ।

१३४। 'EΓEP

का २ लिट् । ἐγρηγορε ἐγρηγόρατον ἐγρηγόρασι

१३५। 'EΔ

का १ ऌट्। ἐδεῖται ἐδεῖσθον ἐδοῦνται इत्यादि

१३६।　　'ΕΘ

का २ लिट्। εἴωθε εἰώθατον εἰώθασι इत्यादि

१३७।　　'ΕΙΚ

का २ लिट्। वार्त्ताभाव। ἔοικε ἐοίκατον ἐοίκασι

विशेषण। εἰκοτ

१३८।　　'ΕΔ और ΠΙ

के २ ऌट् विना σ होनेहैं। यथा ἔδεται πίεται

१३९।　　ΠΕΤ (गिर)

का १ लुङ्। ἔπεσε ἐπεσέτην ἔπεσον

इसका १ ऌट्। πεσεῖται πεσεῖσθον πεσοῦνται इत्यादि

१४०।　　'ΡΑΓ

का २ लिट् । ἔῤῥωγε ἐῤῥώγατον ἐῤῥώγασι इत्यादि

१४१। ΤΑΦ

का लट् । θάπτει θάπτετον θάπτουσι इत्यादि

३ लिट् τέθαπται τέθαφθον इत्यादि

१४२। ΧΥ

का २ लृट् । पर॰ χεύσει χεύσετον χεύσουσι इत्यादि

आ॰ χέεται χέεσθον χέονται इत्यादि

२ लङ् । ἔχεε ἐχεάτην ἔχεαν इत्यादि

१४३। ΧΡΕ

केवल प्रथम पुरुष में होता है।

लट् । वार्त्ताभाव । χρή

लोट् भाव । χρῇ

लिङ् भाव । χρείη

संज्ञाभाव । χρῆναι

विशेषणाभाव। χρεωντ
लङ्. ἐχρῆν वा χρῆν
२ लट् χρήσει

अथ नामों का वर्णन।

नवम अध्याय। मूलनामपाठ।

१४४। १। संज्ञा।

ἀγαπα प्रेम ἀγρα अहेर
ἀγκαλα सिमटी हुई भुजा ἀγρο खेत
ἀγκυρα लंगर ἀγων बलप्रदर्शक युद्ध
ἀγορα हाट ἀερ वायु

ἀετο	गृध्र	ἀνθρωπο	मनुष्य
Ἀθηνα	सरस्वती	ἀντρο	गुफा
αἰδο	लज्जा	ἀπατα	कपट
αἱματ	लोहू	Ἀπολλων	आदित्य
αἰνο	प्रशंसा	ἀρα	पाप
αἰγ	बकरा	ἀργυρο	रूपा
αἰσχες	निन्दा	Ἀρες	युद्धकादेव
αἰων	आयुष	ἀρθρο	देहका गांठ
ἀκμα	नोक	ἀριθμο	गिनती
ἀλγες	दुःख	ἀριστο	प्रातःकाल का भोजन
ἁλ	लवण	ἀρκτο	भालू (ऋक्ष)
ἀλωπεκ	लोमड़ी	ἁρματ	रथ
ἀμμο	बालू	ἀρνο	मेमना
ἀμνο	मेमना	ἀρσενवा ἀρρεν	पुलिङ्ग
ἀμπελο	दाखलता	ἀσκο	मशक
ἀναγκα	आवश्यकता	ἀσπιδ	फरी
ἀνακτ	राजा	ἀστερ	तारा (ο, ω)
ἀνεμο	बहता हुआ बायु	ἀνθες	पुष्प
ἀνερ	पुरुष (नर)		

ἀστυ नगर
ἀστραπα बिजली
αὐγα ज्योति
αὐλα आंगन
ἀφρο फेन
ἀχθο भार
βασνο कसौटी
βασιλευ राजा
βια बल
βιο जीवन
βοα चीत्कार
βοϜ बैलवागाय (गो)
βορεα उत्तर दिशा वा वायु
βραβευ अङ्गीकृत न्यायी
βραχιον बाहु
βροντα गरज
βυβλο जलकासरपत
βωμο ऊंची वेदि
γα पृथिवी (गो)
γαλάκτ दूध
γαληνα नौका

γαστερ पेट
γεφυρα पुल
γηρατ वृद्धावस्था
γιγαντ दैत्य
γλωσσα जीभ
γονατ घुटना
γονυ घुटना (जानु)
γραϜ बूढ़ी
γυναικ स्त्री
γωνια कोण
δαιμον देव
δακρυ आंसू (अश्रु)
δακτυλο अङ्गुली
δανες ऋण
δαπανα व्यय
δειπνο संध्याकाल का भोजन
δελφυ योनि
δενδρο वृक्ष
δεσποτα स्वामी
δημο प्रजा

ΔιF	स्वर्गराज (द्यु)
δικο	न्याय
δικτυο	जाल
διψα	प्यास
δολο	छल
δορυ	वृक्ष (दारु)
δρακοντ	अतिभयानक सर्प
δροσο	ओस
Fεαρ	वसन्त (بہار)
ἐγω	मैं (अहम्)
ἐδαφες	तला
ἐθνες	जाति
εἰρηνα	मेल
ἐλαια	जैतूनकापेड़
ἐλεο	दया
ἐλεφαντ	हाथी (इभ)
ἐλκες	घाव
Ἑλλαδ	यवनदेश
Ἑλλην	यवन
ἐθες	रीति

ἐνο	वरस
ἐπηρεια	दुर्व्यवहार
ἐργο	कार्य
ἐριδ	झगड़ा
Ἑρμα	बुधवा गणेश
ἑσπερα	संध्याकाल
ἐτες	वरस
εὐνα	पलंग
εὐρο	पूर्वीदिशाकावायु
ζεα	जव
ζηλο	जयकी इच्छा
ζημια	हानि
ἡβα	युवावस्था
ἡλιο	सूर्य
ἡμε	हम
ἡμερα	दिन
ἡπατ	कलेजा (यकृत्)
ἡρω	आर्य
ἡχο	शब्द
ἡο	और
θαλασσα	समुद्र

θαλπες	उष्णता	καρα	सिर (शिरस्)
θαρσες	ढाढ़स	καρδια	हृदय
θεο	देव	καρπο	फल
θεμιδ	धर्म	καυχα	घमण्ड
θηρ	वन्य पशु	κεραμο	मट्टी
θορυβο	हुल्लड़	κερατ	सींग (शृङ्ग)
θρονο	आसन	κερδες	लाभ
θυγατερ	पुत्री (दुहितृ)	κεφαλη	सिर
θυμο	जीव	κηπο	वाटिका
θυρα	द्वार	κηρ	मोम
θωρακ	चपरास	κηρυκ	ढंढोरक
ἱμαντ	तसमा	κιθαρα	बीणा
ἱματιο	वस्त्र	κινδυνο	जोखिम
ἰο	विष वा मोर्चा	κλαδο	शाखा
ἱππο	घोड़ा (अश्व)	κλεες	यश
ἰσχυ	सामर्थ्य	κλειδ	कुंजी
ἰχθυ	मत्स्य	κληρο	चिट्ठी (डालनेकी)
καιρο	अवसर	κολακ	चापलूस
καλαμο	सरपत	κολπο	गोदी
καμινο	तनूर	κομα	केश
καπνο	धूआँ	κονι	धूलि

κοπρο	विष्ठा	λυκο	भेड़िया
κοραx	काक	λυπα	शोक
κορυφα	शिखा	λυχνο	दीपक
κοσμο	क्रम वा जगत्	μαρτυρ	साक्षी
κρατες	बल	μαστιγ	कोड़ा
κρεατ	मांस	μαστο	स्तन
κυδες	कीर्ति	μελες	अङ्ग.
κυκλο	चक्र	μελιτ	मधु
κυν	कुत्ता (श्वन्)	μεταλλο	खानि
κυον	कुत्ता (श्वन्)	μετρο	मात्र
κυρες	अधिकार	μην	मास
κωλο	अङ्ग.	μητερ	माता (मातृ)
κωμο	चकरवा	μηχανα	उपाय
λαο	प्रजागण	μισθο	वेतन
λεοντ	सिंह	μο	मुझे
λιθο	पत्थर	μογο	श्रम
λιμεν	बन्दर	μοιχο	परस्त्रीगामी
λιμνα	झील	μορφα	मूर्ति.
λιμο	अकाल	μουσα	सरस्वतीगण
λινο	पाश		

πολεμο युद्ध
πολι नगर (पुरि)
ποταμο नदी
πτερνα एड़ी
πυλα किवाड़
πυρ आग
πυρο आग
πυργο बुर्ज
ῥαβδο छड़ी
ῥιγες दराड़
ῥιζα जड़
ῥιν नाक
ῥοδο गुलाब
σαλο चन्द्रलता
σαρχ मांस
σεληνα चन्द्र
σηματ चिह्न
σθενες शक्ति
σιγα चुपरहना
σιδηρο लोहा
σιτο गोहूं

σιωπα चुपरहना
σχελες जांघ और पांव
σχευος पात्र वा समान
σχηνα डेरा
σχια छाया
σχοτες अन्धियारा
σπλαγχνο अन्तड़ी
σο तू
σποδο राख
σταφυλα गुच्छा
σταχυ अनाज का बाल
στηθος छाती
στοιχο पंक्ति
στοματ मुख
στρατο सेना
στρουθο चिड़िया
συχο अंजीर
σφαιρα गेंदा
σφε वे आप
σφε अपना (स्व)
σφω तुमदो (वाम

σφω	वे दो आप	ὑδατ	जल
σφραγιδ	मुद्रा	ὑδωρ	जल
σχοινο	रस्सा	ὑιο	पुत्र
σχολα	अवकाश	ὑλα	वन
σωματ	देह	ὑμε	तुम (यूयम्)
ταμια	भण्डारी	ὑμνο	गीत
ταυρο	सांड़	ὑπνο	स्वप्न
τειχες	भित्ति	ὑψες	ऊंचाई
τεκτον	बढ़ई (तक्षन्)	φαρμακο	औषध
τελες	अन्त	φεγγες	उंजियाला
τερατ	आश्चर्य की बात	φθονο	डाह
τεχνα	शिल्प	φοβο	भय
τολμα	हियाव	φοιτο	परिभ्रमण
τοξο	धनुष	φρεν	हृदय
τοπο	स्थान	φυλλο	पत्ती
τραγο	बकरा	φωνα	वाणी
τριχ	केश	φωρ	चोर
τυραννο	स्वच्छन्द स्वामी	χαλκο	ताम्बा
		χαριτ	कृपा
ὑ	सूकर	χειλες	ओंठ
ὑβρι	बलात्कार	χειματ	जाड़ा (हिम)

χειρ	हाथ (कर)	ὠτ	कान
χην	हंस		
χθον	भूमि		२। विशेषण।
χιον	हिम		
χλευα	ठट्ठा	ἀγαθο	भला
χολα	पित्त	ἁγιο	पवित्र
χορο	नाच	ἁγνο	निर्मल
χορτο	घास	ἀθροο	घन
χρονο	समय	ἀκολουθο	अनुगामी
χρυσο	सोना	ἀκριβες	ठीक
χρωτ	चमड़ा	ἀκρο	उत्तम
χωρα	देश	ἀληθες	सत्य
ψηφο	कङ्कर	ἀλλο	अन्य
ψοφο	रव	ἀμεινον	बहतर
ψυχα	प्राण	ἀμφο	दोनों (उभ)
ψωμο	टुकड़ा	ἀξιο	योग्य
ὠμο	कन्धा	ἁπαλο	कोमल
ὠνο	मोल	ἀριστερο	बायाँ
ὠο	अण्डा	αὐτο	वही वा यही
ὠρα	कोई परिमित समय	αὐτο	यह
		βαθυ	गहिरा

βαρβαρο म्लेच्छ	ἐγγυ निकट
βαρυ भारी(गुरु)	εἰκοσι बीस(विंशति)
βελτο अच्छा	ἑκα एक
βεβαιο स्थिर	ἑκατον सौ (शतम्)
βοηθο उपकारक	ἐκεινο वह
βραδυ धीरा	ἑκοντ स्ववशीभूत
βραχυ अदीर्घ	ἐλαφρο हलका
γειτον प्रतिवासी	ἐλαχυ छोटा (लघु)
γεροντ वृद्ध	ἐλευθερο निर्बन्ध
γλυκυ मीठा	ἑν एक
γυμνο नंगा	ἐννεFα नौ (नव)
δειν अमुक	ἑξ छः (षष्)
δεκα दस (दश)	ἑπτα सात(सप्त)
δεξιο दहिना(दक्षिण)	ἐρημο शून्य
δηλο प्रगट	ἐρυθρο लाल
διακονο परिचारक	ἑταιρο संगी
δουλο सेवक	ἑτοιμο सिद्ध
δυο दो (द्वौ)	εὐθυ सीधा
ἑ यह (इ)	εὐρυ चौड़ा

ἡμερο	नम्रस्वभाव	λευκο	श्वेत
ἠπιο	कोमलस्वभाव	μακαρ	धन्य
ἡσσον वा ἡττον	न्यून	μακρο	लम्बा
ἡσυχο	निश्चल	μαλακο	कोमल
θερμο	उष्ण	μεγα	बड़ा (महत्)
θηλυ	स्त्रीलिङ्ग	μεγαλο	बड़ा
θρασυ	ढीठ	μελαν	काला
ἰδιο	निज	μεσο	मध्य
ἱερο	दैव	μιο	एक
ἱκανο	शक्त	μικρο	छोटा
ἰσο	तुल्य	μονο	अकेला
καθαρο	निर्मल	μυριο	दससहस्र
καινο	नया	μωρο	मूर्ख
κακο	बुरा	νεϝο	नया (नव)
καλο	सुन्दर	νεκρο	मृतक
κενο	शून्य	ξανθο	पीला
κοιλο	खोखला	ξενο	परदेशी
κοινο	साधारण	ξηρο	सूखा
κουφο	हलका	ὁ	जो (यत्)
κωφο	गूंगा वा बहिरा	ὁ	सो (स)

ὀκτω	आठ (अष्टौ)	πυκνο	घन
ὀλιγο	थोड़ा	ῥαδιο	सहज
ὁλο	समूचा (सर्व)	σαφες	स्पष्ट
ὀξυ	तीखा	σκληρο	कठोर
ὀρθο	सीधा	σκολιο	टेढ़ा
ὀρφανο	हीन	σοφο	ज्ञानी
ὁσιο	धर्मी	στειρο	ऊसर
οὑτο	यह	στερεο	दृढ़(स्थिर)
παντ	सब	στενο	सकेत
παχυ	मोटा	σφοδρο	अत्यन्त
πεντε	पांच (पञ्च)	ταυτο	वही
πικρο	कड़ुआ	ταπεινο	नीचा
πιον	चरबी से मोटा (पीवन्)	ταχυ	शीघ्र
		τερεν	कोमल
πλατυ	चौड़ा	τετταρ	चार (चतुर्)
ποικιλο	चित्र	τιν	कौन वा कोई (किम्)
πολλο	बहुत	το	सो (तद्)
πολυ	बहुत	τουτο	यह
πραο	कोमलस्वभाव	τραχυ	ऊबड़
πραυ	कोमलस्वभाव	τρι	तीन (त्रि)
πρεσβυ	बूढ़ा	τυφλο	अन्धा

ὑγιες स्वस्थ
ὑγρο ओदा
φαυλο निकम्मा
φιλο प्यारा
χαλεπο कठिन
χειρον: दुष्टतर
χηρο हीन
χιλιο सहस्र
χλωρο हरा
χωλο लंगड़ा
ψιλο पतला
ὠκυ शीघ्र (आशु)
ὠμο कच्चा

३। अव्यय।

ἄγαν अत्यन्त
+ἀγχι: निकट
ἀεὶ सर्वदा
ἅλις बस (अलम्)

ἀλλὰ वरन
+ἀμφὶ दोनों ओर
ἂν संदेहवाचक शब्द
+ἀνὰ ऊपरकी ओर (अनु)
ἄνευ विना
+ἀντὶ सम्मुख
+ἀπὸ दूरकी ओर
ἄρα इस कारण
ἆρα प्रश्नवाचक शब्द
+ἄρτι तत्क्षण
αὖ पीछेकी ओर
αὔριον आनेवाला कल (श्वः)
ἄχρι तक
γὰρ क्योंकि
γε निश्चयवाचक शब्द
δὲ परन्तु (तु)
δεῦρο इधर
δὴ दृढतावाचक शब्द
+διὰ विभागवाचक शब्द (वि)
εἰ यदि

+εἰς	भीतरकी ओर	μέχρι	तक
+ἐκ	बाहरकी ओर(उत्)	μὴ	मतवान (मा)
ἐκεῖ	वहां	νῦν	अब
+ἐν,	भीतर (नि)	οὐ	नहीं
ἕνεκα	निमित्त	ναὶ	हां
ἐπεὶ	इसलिये कि	+ὀψὲ	विलम्बमें
+ἐπὶ	ऊपर (अभि)	+πάλαι	पूर्वकालमें(परा)
εἶτα	तदनन्तर	+πάλιν	फिर(पुनर्)
ἔτι	अबभी	+παρὰ	पास (परा)
+εὖ	अच्छीरीतिसे	πέλας	निकट
ἤ	वा	+περ	आधिक्यवाचकशब्द
ἤ	से(आधिक्यवाचकशब्द)	πέρα	पार
ἤδη	अबतक	+περὶ	चारों ओर(परि)
ἵνα	जिस्तें	+πρὸ	आगे की ओर(प्र)
καὶ	औरवाभी (च)	+πρὸς	पास (प्रति)
+κατὰ	नीचेकी ओर	πω	अबतक
λίαν	अधिककरके	+σὺν	संग (सम्)
μάλιστα	अत्यन्त	τάχα	कदाचित्
μάτην	निष्कारण	τε	और (च)
μὲν	तो,	+ὑπὲρ	ऊपर (उपरि)
+μετὰ	मध्यमें	+ὑπὸ	नीचे (उप)

φεῦ वाह		-βλα दूषणवाचकशब्द
χαμαί भूमिपर		-δι दो (द्वि)
χωρίς अलग		-δυσ दुःखवाचकशब्द (दुस्)
χθές गतकाल(ह्यः)		
ὦ आह		-ἡμι आधा (सामि)
-ἀ वा ἁ ऐक्यवाचकशब्द		-νη अभाववाचकशब्द (न)
-ἀν अभाववाचकशब्द		-τηλε दूर

१४५। इन अव्ययों में से जिन के पहिले — यह चिह्न हम ने लिखा सो अलग कभी नहीं मिलते हैं केवल समासों के आदि में। और जिन के पहिले हमने + यह चिह्न लिखा है सो अलग भी और समासों में भी मिलते हैं। अवशिष्ट सब अव्यय केवल अलगही मिलतेहैं।

दशम अध्याय — नामोंकानिर्माण।

१४६। ऊपरिलिखित मूलनामों से अधिक और

बहुत नाम हैं जो क्रियाओं वा और २ नामों से बनते है। इन के बनने की रीतियां अवलिखते हैं।

१। संज्ञाओं का निर्माण।

१। कितनी संज्ञाएं धातुओं से ठीक मिलतीहैं यथा ΦΥΛΑΚ से φυλακ रक्षक। २। कितनी केवल धातु के स्वर को बदल देतीहैं यथा ΦΛΕΓ से φλογ ज्वाला। ३ कितनी ο वा α लगादेतीहैं यथा ΕΥΧ से εὐχα प्रार्थना ΔΙΔΑΧ से διδαχα शिक्षा ΧΑΡ से χαρα आनन्द ΛΕΓ से λογο वचन ΤΥΠ से τυπο मार वा मूर्ति जो मारने से बनती है ΤΡΕΠ से τροπο फेरवा रीति। ये संज्ञाएं प्राय क्रियाही बतातीहैं परन्तु कभी २ कर्त्ता को यथा ΤΡΕΦ से τροφο पालक ἀνθρωπο और

φεῦ वाह		-δυσ दुःखवाचकशब्द
χαμαί भूंईपर		-δι दो (द्वि)
χωρίς अलग		-ἐρι } अतिशयवाचकशब्द (उरु)
χθές गयाकल (ह्यः)		
ὦ आह		-ἡμι आधा (सामि)
-ἀ वा ἁ ऐक्यवाचकशब्द		-νη अभाववाचकशब्द (न)
-ἀν अभाववाचकशब्द		-τηλε दूर

१४५। इन अव्ययों में से जिन के पहिले — यह चिह्न हम ने लिखा सो अलग कभी नहीं मिलते हैं केवल समासों के आदि में। और जिन के पहिले हमने + यह चिह्न लिखा है सो अलग भी और समासों में भी मिलते हैं। अवशिष्ट सब अव्यय केवल अलगही मिलतेहैं।

दशम अध्याय — नामोंकानिर्माण।

१४६। ऊपरिलिखित मूलनामों से अधिक और

बहुत नाम हैं जो क्रियाओं वा और २ नामों से बनते हैं। इन के बनने की रीतियां अवलि-खते हैं।

१। संज्ञाओं का निर्माण।

१। कितनी संज्ञाएं धातुओं से ठीक मिलतीहैं यथा ΦΥΛΑΚ से φυλακ रक्षक।
२। कितनी केवल धातु के स्वर को बदल देतीहैं यथा ΦΛΕΓ से φλογ ज्वाला।
३ कितनी ο वा α लगादेतीहैं यथा ΈΥΧ से εὐχα प्रार्थना ΔΙΔΑΧ से διδαχα शिक्षा ΧΑΡ से χαρα आनन्द ΛΕΓ से λογο वचन ΤΥΠ से τυπο मार वा मूर्त्ति जो मारने से बनती है ΤΡΕΠ से τροπο फेरवा रीति। ये संज्ञाएं प्राय क्रियाही बतातीहैं परन्तु कभी २ कर्त्ता को यथा ΤΡΕΦ से τροφο पालक ἀνθρωπο और

KIEN से ἀνθρωποκτονο मनुष्य-घाती।

४। कितनी σα लगातीहैं यथा ΔOK से δοξα मतवामहिमा।

५। कितनी σι वा σια लगातीहैं यथा λεξι उक्ति βασι गति φυσι भूति अर्थात् स्वभाव वा प्रकृति πραξι कृति θυσια हुति अर्थात् यज्ञ ἀκρασια अशक्ति। ये प्रत्यय संस्कृत ति से ठीक मिलते हैं और सदा क्रियाही को बनाते हैं।

६। कितनी μο वा σμο लगातीहैं यथा ΔE से δεσμο बन्धन ΣEI से σεισμο भूईकांप ὀδυρμο रोदन। ये भी सदा क्रियाही को बनातेहैं।

७। कितनी μα लगातीहैं यथा MNA से μνημα स्मृति ΓNO से γνωμα ज्ञान TI से τιμα मोल वा आदर। ये कभी क्रिया और कभी २ कर्म बनातेहैं।

८। कितनी μαr लगातीहैं यथा πραγματ कर्म γραμματ जो लिखा हुआहै σπεϱματबोयाहुआ बीज। ये संस्कृत मनसे ठीक मिलनेहैं और सदा कर्म्म को बतातेहैं।

९। कितनी ες लगातीहैं यथा ΓΕΝ से γενες जाति।

१०। कितनी το वा ετο वा ατο लगातीहैं यथा ΠΟ से ποτο पानीय से υετο वृष्टि ΘΑΝ से θανατο मृत्यु।

११। कितनी τα वा τηρ वा τορ लगातीहैं यथा ΜΑΘ से μαθητα शिष्य ΚΡΙΝ से χριτα विचारक ΣΩ से σωτηρ त्राता ΡΕ से ῥητορ वक्ता। ये संस्कृत तृ से ठीक मिलते हैं और सदा कर्त्ता को बताते हैं।

१२। कितनी उसी अर्थमें ευ लगातीहैं यथा γραφευ लेखक।

१३। कितनी τρο वा τρα वा τηριο लगाती

है यथा λουτρο स्नानपात्र δικαστηριο (जो δικαδ क्रियासे बनाहै और यह δικα से) न्यायालय। ये संस्कृत त्र से ठीक मिलतेहैं और क्रिया के स्थान वा पात्र को बनाते हैं।

१४। कितनी संज्ञायें विशेषणों वा और २ संज्ञाओं से ια के लगाने से बनती हैं यथा ἀνερ से ἀνδρια पौरुष। इसके पहिले विशेषण का अन्त्य स्वर लुप्त होताहै यथा σοφο से σοφια पाण्डित्य κακο से κακια बुराई ἀνοο से ἀνοια मूढ़ता। और विशेषण के अन्त का το σια होताहै यथा ἀθανατο से ἀθανασια अमरता। और ες और ευ प्राय εια होतेहैं यथा ἀληθες से ἀληθεια सत्यता βασιλευ से βασιλεια राज्य। किन्तु ἀμαθες से ἀμαθια शिक्षाहीनता और πενητ दरिद्र से

πενια दरिद्रता होतेहैं ।

१५। कितनी τητ लगातीहैं यथा ἰσο से ἰσοτητ तुल्यता θεο से θεοτητ देवता। यह संस्कृत ता से मिलताहै।

१६। कितनी συνα लगातीहैं यथा δικαιο निर्दोष से δικαιοσυνα निर्दोषता। इसके पहिले से विशेषण का अन्त्य ν लुप्त होताहै यथा σωφρον जितेन्द्रिय से σωφροσυνα जितेन्द्रियता। और जब ο-अन्त विशेषणों के ο के पहिले ह्रस्व स्वर है तब अन्त्य ο ω होता है यथा ἁγιο से ἁγιωσυνα पवित्रता।

१७। कितनी ες लगाती हैं और इस से पहिले से विशेषण का अन्त्य υ लुप्त होता है यथा βαθυ से βαθες गम्भीरता ταχυ से ταχες शीघ्रता।

१८। संख्यावाचक विशेषणों से संज्ञाएं बनती है जिनका अर्थ है संख्याका समूह। यथा

μοναδ ऐक्य δυαδ द्वय τριαδ त्रय τετραδ चतुष्टय ἑβδομαδ सप्तक् δεχαδ दशक् ἑχατονταδ सौका समूह ।

१९। कितनी संज्ञाएं और २ संज्ञाओं से τα के लगाने से बनती हैं यथा πολι से πολιτα नगरवासी ।

२०। कितनी ευ वा ιευ लगाती हैं यथा ἱερο से ἱερευ याजक ἁλ से ἁλιευ मछुवा ।

२१। कितनी ων लगाती हैं यथा ἐλαια से ἐλαιων ज़ैतून के पेड़ों की बारी ἀμπελο से ἀμπελων द्राक्षालता ।

२२। स्त्रीलिङ्ग के बनाने के लिये α-अन्त पुंलिङ्ग संज्ञाएं ιδ लगाती हैं यथा δεσποτα से δεσποτιδ स्वामिनी । οντ-अन्त संज्ञाएं αινα लगाती हैं यथा λεοντ से λεαινα सिंहकी स्त्री । ευ-अन्त

संज्ञासे εια वा ισσα लगाती हैं यथा βασιλεια वा βασιλεσσα राज्ञी।

२३। देशवासी के बनाने के लिये कितने देशों के नाम ιο वा αιο लगाते हैं यथा Ἀθηνα से Ἀθηναιο Κορινθοσे Κορινθιο कितने ανο ηνο ινο लगाते हैं यथा Ἀσια से Ἀσιανο कितने ιτα ητα ατα ιωτα लगाते हैं यथा Ἱεροσολυμα से Ἱεροσολυμιτα Ἰσκαρα Ἰσκαριωτα और कितने ευ लगाते हैं।

२४। पुलिङ्ग सन्तान के बनाने के लिये पितरों के नाम ιδα αδα ιαδα और स्त्रीसन्तान के बनाने के लिये ιδ αδ लगाते हैं।

२५। लघुता के बनाने के लिये कितनी संज्ञाएं ιο ιδιο αριο ισκο ισκα लगाती हैं यथा παιδ से παιδιο छोटा

लड़का θηρ से θηριο छोटा पशु πλοιο नावसे πλοιαριο छोटी नाव πιναχ से πιναχιδιο छोटी पाटी παιδ से παιδισχα छोटी लड़की।

२। विशेषणों का निर्म्माण।

२४७। MO से ἐμο मेरा σο से σο मेरा ἡμε से ἡμετερο हमारा ὑμε से ὑμετερο तुम्हारा ὁ(वह आप) से ὁ उस· का अपना σφε से σφετερο उनका अपना बनते हैं।

२४८। १। कितने विशेषण और २ नामों से ιο वा αιο वा ειο के लगाने से बनते हैं और इन के पहिले से अन्त्य स्वर कभी २ निकलता है कभी २ नहीं और कभी २ अ· न्त्य ες भी निकलता है। यथा οὐρανο से οὐρανιο स्वर्गीय φιλο से φιλιο

प्यारकरनेवाला κυρες से κυριο अधिकारी वा प्रभु θεο से θειο दैव ἀγορα से ἀγοραιο हाटवाला πατερ से πατριο पैत्र γυναικ से γυναικειο स्त्रीसम्बन्धी। το σιο होता है यथा πλουτο से πλουσιο धनी।

२। कितने εο लगाते हैं यथा χρυσο से χρυσεο सोनहला। ये विशेषण उस वस्तु को बताते हैं जिससे कोई पदार्थ बना है।

३। कितने ικο वा τικο वा ακο लगाते हैं यथा ΚΡΙΝ से κριτικο विचारक σωματ से σωματικ शारीरिक Ἑλλην से ἑλληνικ। ये प्रत्यय संस्कृत इक से मिलते हैं।

४। कितने ινο लगाते हैं यथा ἀνθρωπο से ἀνθρωπινο मानुष λιθο से λιθινο पत्थर का πεδο से πεδινο

चोड़स ὀρες से (ὀρεσινο कोसन्ती)
ὀρεινο पहाड़ी ।

५। कितने λο वा ηλο वा ωλο लगाते हैं यथा ΔΙ से δειλο भीरु ἉΜΑΡΤ से ἁμαρτωλο पापी ।

६। कितने ιμο वा σιμο लगाते हैं यथा ὀφελες से ὠφελιμο लाभदायक ΧΡΑ से χρησιμο काम के योग्य ।

७। कितने ρο वा ερο लगाते हैं यथा οἰκτο से οἰκτρο करुणायोग्य ΣΑΠ से σαπρο सड़ा νοσο से νοσερο रोगी ΦΑΝ से φανερο प्रकाशित ।

८। कितने εντ वा οεντ लगाते हैं यथा χαριτ से χαριέντ शोभायमान αἱματ से αἱματοεντ लहूलुहान।

९। कितने ωδες लगाते हैं यथा γυναικωδες स्त्रीयोग्य ।

१०। कितने μον लगाते हैं यथा ἐπι और ΣΤΑ से ἐπιστημον बुद्धिमान ἐλεο से ἐλεημον दयावान ΜΝΑ से μνημον स्मरण करनेवाला। यह संस्कृत मत् वत् से मिलताहै।

११। कितने υ लगाते हैं यथा ἩΔ से ἡδυ सुखदायक।

१२। कितने αν लगाते हैं यथा ΤΛΑ से τα-λαν, दुःखी।

१३। कितने τιο लगाते हैं यथा ἈΡ(जोड़) से ἀρτιο ठीक।

४४। सब क्रियाओं से दो प्रकार के विशेषण बन सकते हैं। दोनों क्रिया के उस रूप से बनते हैं जो २ सब में उसका होताहै। १। पहला τεο के लगाने से बनताहै। इस का अर्थ ठीक संस्कृत तव्य से मिलताहै यथा ποιητεο कर्तव्य λεκτεο वक्तव्य

φερτεο भर्तव्य।

२। दूसरा प्राय τo के लगाने से परन्तु थोड़ी क्रियाओं से νo के लगाने से बनता है। इस का अर्थ ठीक संस्कृत त वा न से मिलता है यथा βατο गत γραπτο लिखित δοτο दत्त θετο हित κλυτο श्रुत ἰτο इत ληπτο लब्ध στυγνο हिष्ट ΔΙ से δεινο भीत अर्थात् डरावना ΣΕΒ से σεμνο रमित।

अथ तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक विशेषणों का वर्णन।

१५०। सब गुणवाचक विशेषणों और बहुत अव्ययों के तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक रूप होते हैं।

१५१। तरवर्थवाचक का अर्थ यह है कि जिस गुण वा गुण के अभाव का चर्चा है सो एक में दूसरे से वा कितने विशिष्ट दूसरों

से अधिक मिलताहै।

१५२। समवर्थवाचक का अर्थ यह है कि जिस गुण वा गुण के अभाव का वही है सो एक में और सभों से अधिक मिलताहै।

१५३। तरवर्थवाचक और समवर्थवाचक दो प्रकार से बनते हैं। कितने विशेषण तरवर्थवाचक के लिये τερο (तर) और समवर्थवाचक के लिये τατο (तम) लगाते हैं और कितने विशेषण तरवर्थवाचक के लिये ιον (ईयस) औरतमवर्थवाचक के लिये ιστο (इष्ठ) लगाते हैं।

१५४। जो विशेषण τερο और τατο लगाते हैं उनमें से जिनके अन्तमें ς को छोड़के और कोई व्यंजन है सो अपने और τερο τατο के बीचमें εσ लगाते हैं यथा σωφρον से σωφρονεστερο σωφρονεστατο। और जितने ο-अन्त विशेषण हैं यदि इस ο से पहिले जो स्वर है

के नरवर्णवाचक के अर्थ में ἐλασσον वा ἐλαττον और ἡσσον वा ἡττον का और μικρο ही केतमवर्णवाचक के अर्थ में ἐλαχιστο का प्रयोग होताहै।

३। κακο के नरवर्णवाचक और तमवर्णवाचक के अर्थ में न केवल κακιον κακιστο वरन χειρον χειριστο और ἡσσον वा ἡττον ἡκιστο का प्रयोग होताहै।

१५९। ἑκα के केवल नरवर्णवाचक और तमवर्णवाचक का प्रयोग होताहै। ἑκατερο का अर्थ है दोनों में प्रत्येक। ἑκαστο का अर्थ है बहुत में प्रत्येक।

१६०। ἑ (यह) के नरवर्णवाचक ही का प्रयोग होता है। ἑτερο का अर्थ है इतर अर्थात दोनों में दूसरा।

अथ संख्यावाचक विशेषणों का वर्ग

१८१। ऊपरिलिखित संख्यावाचक विशेषणों से ये भी बनते हैं।

१। ἑνδεκα ग्यारह δωδεκα बारह τρισκαιδεκα तेरह τεσσαρες καιδεκα चौदह πεντε καιδεκα पन्द्रह ἑκκαιδεκα सोलह इत्यादि।

२। τριακοντα तीस τεσσαρακοντα चालीस πεντηκοντα पचास ἑξηκοντα साठ ἑβδομηκοντα सत्तर ὀγδοηκοντα अस्सी ἐνενηκοντα नब्बे।

३। διακοσιο दोसौ τριακοσιο तीनसौ τετρακοσιο चारसौ πεντακοσιο पांच सौ इत्यादि।

१८२। क्रमप्रकाशक संख्यावाचक विशेषण ऊपरिलिखित संख्यावाचक विशेषणों से प्रायः το के लगाने से बनते हैं यथा τριτο तीसरा τεταρτο चौथा πεμπτο पांचवां

ἕκτο छठवां ἔνατο नौवां δέκατο दस-
वां εἰκοστο बीसवां τριακοστο ती-
सवां πεντηκοστο पचासवां ἑκατο-
στο सौवां διακοσιοστο दो सौवां
χιλιοστο हज़ारवां μυριοστο दस-
हज़ारवां इत्यादि ।

१९३ । परन्तु प्रथम का नाम ἕν से नहीं ब-
ना है कारन προ कालमर्थवाचक है। और
द्वितीय का नाम δυο कालान्तरार्थवाचक है
अर्थात् δευτερο । और सप्तम का नाम
ἑβδομο और अष्टम का नाम ὀγδ-
οο है ।

१९४ । πλοο के लगाने से गुणन वाचक
विशेषण होते हैं यथा-ἁπλοο एकगु-
णा διπλοο दोगुणा τετραπλοο
चारगुणा इत्यादि ।

३। अव्ययों का निर्माण।

१८५। १। कितने अव्यय क्रियाओं से δην के लगाने से बनते हैं यथा ΚΡΥΒ से κρύβδην छलरीतिसे ΑΜΕΙΒ से ἀμοιβδην पारी पारी।

२। कितने क्रियाओं से τι लगाने से बनते हैं यथा ὀνοματ से (ὀνοματτιकी सन्धी) ονομαστι नाम लेके Ἑλλην से ἑλληνιδ यवनभाषाबोलना और इस से ἑλληνιστι यवनभाषामें।

३। कितने संज्ञाओं से ι वा ει के लगाने से बनते हैं यथा πανοικι समस्त घ र सं.न πανδημει समस्त लोगसमेत।

४। कितने ις लगाते हैं यथा μογο से μογις वा μολις श्रम वा कठिनता से।

५। कितने अव्यय और २ अव्ययों से बनते हैं। यथा

αὖ से αὖθις फिर। ἀνά से ἄνω ऊपर।
δι से δίχα दो टुकड़े में।
ἐν से ἔνδον भीतर।
ἐκ से ἔξω और ἐκτός बाहर।
εἰς से ἔσω भीतर।
κατά से κάτω नीचे।
μετά से μεταξύ मध्यमें।
περί से πέριξ चारों ओर।
πέρα से πέραν पार।
πρό से πρωΐ भोरको πρώην
गया परसों πρίν पहिले।
εἰ और ἄν मिलके ἐάν यदि होताहै।
१९९। το और ἡμέρα मिलके σήμερον
आज होताहै।
१९७। Δεῦρο का अर्थ क्रिया के मध्यमपु·
रुष के एकवचन के लोट भाव सरीखा
है अर्थात् इधर आ। इस कारण से उसका

बहुवचन δεῦτε अर्थात् इधर आओ भीहोताहै।

१९८। सब नरवर्णवाचक विशेषणों के क्लीवलिङ्ग के कर्त्ता वा कर्म्म के एकवचन और सब नमवर्णवाचक विशेषणों के उसी लिङ्ग के उन्हीं कारकों के बहुवचन का प्रकारवाचक अव्यय के अर्थ में प्रयोग होताहै यथा κρεῖττον और अच्छीरीतिसे ἥκιστα सबसे न्यूनरीति से अर्थात् किसी रीतिसेनहीं ।

१९९। आवृत्तिबोधक संख्यावाचक अव्यय प्राय मूल संख्यावाचक विशेषणों से κις के लगाने से बनते हैं यथा τετράκις चार वार ἑκατοντάκις सौ वार । परन्तु तीनवार का नाम τρι से केवल ς के लगाने से बना है । दोवार δίς एकवार ἅπαξ है ।

१७०। Οὐ अल्पप्राणान्वित स्वरों के पहिले οὐκ और महाप्राणान्वित स्वरों के पहिले οὐχ होताहै ।

१७१। Ἀ का ᾳ संस्कृत स से ठीक मिलता

५) एकट्ठा निकले
एक साथ और।
और $6\mu 0 \iota 0$ समान
व्यंजनके पहिले α होता
ंत में आन् व्यंजनके पहिले
$\acute{\alpha}\nu$

एकादश अध्याय — संज्ञाओं के रूप।

१७६। संज्ञा और विशेषणों के रूप लिङ्ग वचन कारक के अन्तर को प्रगट करते हैं संज्ञा और विशेषण का अन्तर यह है कि प्रत्येक संज्ञा किसी विशेष लिङ्ग की है और प्रत्येक विशेषण तीनों लिङ्ग का हो सकताहै। जब हम नामों के रूपों का नाम लेंगे तब संज्ञा और विशेषणों के रूप समझना चाहिये क्यों कि अव्ययों के रूप नहीं हैं।

१७७। कारक तो मन की भावना में अति बहुत वरन कदाचित् अगण्य हो सकते हैं परन्तु यवन भाषा में इन के पांचही पृथक् २ रूप हैं अर्थात् कर्त्ता कर्म्म सम्बन्ध अधिकरण सम्बोधन।

१७८। सम्बन्ध कारक में अपादान का भी अर्थ है वरन जानपड़ता है कि यही इस

१८५। कर्म्म का एकवचन प्राय α से होता है ν से बहुत नहीं।

१८६। $\sigma\iota$ प्रत्यय स्वरादिक शब्दों के पहिले आ के $\sigma\iota\nu$ होताहै।

१८७। क्लीवलिङ्ग नामों के विषयमें दो बातें स्मरण रखो।

१। कर्त्ता कर्म्म सम्बोधन प्रत्येक वचनमें समान होतेहैं।

२। बहुवचन में इन तीन कारकों के अन्तमें α है।

अथ उदाहरण।

१८८। पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग संज्ञा $\ddot{\alpha}\lambda$।

कर्त्ता	ἅλς	ἅλε	ἅλες
कर्म्म	ἅλα	ἅλε	ἅλας
सम्ब·	ἁλός	ἁλοῖν	ἁλῶν
अधि·	ἁλί	ἁλοῖν	ἁλσί
सम्बो·	ἅλς	ἅλε	ἅλες

१८९। पुलिङ्ग संज्ञा κοραχ।

क·	κόραξ	κόραχε	κόραχες
क·	κόραχα	κόραχε	κόραχας
स·	κόραχος	κόραχαιν	κόραχων
स्र·	κόραχι	κόραχοιν	κόραξι
स·	κόραξ	κόραχε	κόραχες

१९०। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा σαρχ।

क·	σάρξ	σάρχε	σάρχες
क·	σάρχα	σάρχε	σάρχας
स·	σαρχὸς	σαρχοῖν	σαρχῶν
स्र·	σάρχι	σαρχοῖν	σαρξὶ
स·	σάρξ	σάρχε	σάρχες

१९१। क्लीव लिङ्ग संज्ञा ναπυ।

क·	νᾶπυ	νάπυε	νάπυα
क·	νᾶπυ	νάπυε	νάπυα
स·	νάπυος	ναπύοιν	ναπύων
स्र·	νάπυϊ	ναπύοιν	νάπυσι
स·	νᾶπυ	νάπυε	νάπυα

१९२। कर्त्ता के एकवचन और अधिकरण के बहुवचन को छोड़के और सब रूपों में वे प्रत्यय प्रायः इसी नियम के अनुसार लगते हैं परन्तु इनके रूपों में आगन्तुक कुछ नियमविरुद्धता होतीहै। इस के तीन कारण हैं।

१। इनके प्रत्ययों के आदि में σ है और यह अक्षर थोड़े ही व्यंजनों से मिलसकता है प्राय व्यंजनों के उपरान्त आवे चाहे वह आप लुप्तहोताहै चाहे वहरहके दूसरे व्यंजन को लुप्ताताहै। अधिकरण के बहुवचन में सदा यही दशा होतीहै पर कर्त्ता के एकवचन में किसीनाम की यह दशा होती है किसी की वह।

२। यवन भाषा में व्यंजनों में से केवल σ ν ρ शब्द के अन्त में रह सकते हैं इसकारण से जब नाम के अन्त में चाहे प्रत्यय के

अभाव के कारण से चाहे ς के लुप्तहोने से और कोई व्यंजन है तब चाहे लुप्तहोताहै चाहे इन तीनों में से एक बन जाता है।

३। पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग नामों के कर्त्ता के एकवचन का स्वर प्रायः दीर्घ होताहै।

११३। पुलिङ्ग संज्ञा θηρ का ς प्रत्यय कर्त्ता के एकवचन में लुप्तहोताहै।

क॰ θὴρ	θῆρε	θῆρες
क॰ θῆρα	θῆρε	θῆρας
स॰ θηρὸς	θηροῖν	θηρῶν
अ॰ θηρὶ	θηροῖν	θηρσὶ
स॰ θὴρ	θῆρε	θῆρες

११४। क्लीबलिङ्ग संज्ञा σωματ का अन्त व्यंजन कर्त्ता और कर्म्म के एकवचन में और अधिकरण के बहुवचन में लुप्त होताहै।

क॰ σῶμα	σώματε	σώματα
क॰ σῶμα	σώματε	σώματα
स॰ σώματος	σωμάτοιν	σωμάτων

अ· σώματι σωμάτοιν σώμασι
स· σῶμα σώματι σώματα

१९५। पुलिङ्ग. संज्ञा δαιμον का स्वर दीर्घ होताहै।

क· δαίμων δαίμονε δαίμονες
क· δαίμονα δαίμονε δαίμονας
स· δαίμονος δαιμόνοιν δαιμόνων
अ· δαίμονι δαιμόνοιν δαίμοσι
स· δαῖμον δαίμονε δαίμονες

१९६। स्त्रीलिङ्ग. संज्ञा φρεν की वही दशा होतीहै।

क· φρὴν φρένε φρένες
क· φρένα φρένε φρένας
स· φρενὸς φρενοῖν φρενῶν
अ· φρενὶ φρενοῖν φρεσὶ
स· φρὲν φρένε φρένες

१९७। क्लीवलिङ्ग. संज्ञा φωτ τ को जब अन्त्य होता है तब ς से बदल देता है।

क॰	φῶς	φῶτε	φῶτα
क॰	φῶς	φῶτε	φῶτα
स॰	φωτὸς	φώτοιν	φώτων
अ॰	φωτὶ	φώτοιν	φώσι
स॰	φῶς	φῶτε	φῶτα

१९८। पुलिङ्ग संज्ञा λεοντ कर्त्ता के एकवचन में τ को छुड़ाता है और अधिकरण के बहुवचन में οντ को ουσ करदेता है।

क॰	λέων	λέοντε	λέοντες
क॰	λέοντα	λέοντε	λέοντας
स॰	λέοντος	λεόντοιν	λεόντων
अ॰	λέοντι	λεόντοιν	λέουσι
स॰	λέον	λέοντε	λέοντες

१९९। पुलिङ्ग संज्ञा ὀδοντ दोनों रूप में οντ को ους करदेता है।

क॰	ὀδοὺς	ὀδόντε	ὀδόντες
क॰	ὀδόντα	ὀδόντε	ὀδόντας
स॰	ὀδόντος	ὀδόντοιν	ὀδόντων

अ· ὀδόντι ὀδόντοιν ὀδόυσι
स· ὀδὸν ὀδόντε ὀδόντες

२०० । पुलिङ्ग संज्ञा ἱμαντ ντ को छुड़ानीहै ।

क· ἱμὰς ἱμάντε ἱμάντες
क· ἱμάντα ἱμάντε ἱμάντας
स· ἱμάντος ἱμάντοιν ἱμάντων
अ· ἱμάντι ἱμάντοιν ἱμᾶσι
स· ἱμὰν ἱμάντε ἱμάντες

२०१ । स्त्रीलिङ्ग संज्ञा νυχτ इनदो रूपों में τ को छुड़ानीहै ।

क· νὺξ νύχτε νύχτες
क· νύχτα νύχτε νύχτας
स· νυχτὸς νυχτοῖν νυχτῶν
अ· νυχτὶ νυχτοῖν νυξὶ
स· νὺξ νύχτε νύχτες

२०२ । क्लीवलिङ्ग संज्ञा γαλαχτ कर्त्ता और कर्म्म के एकवचन में χτ को छुड़ानीहै ।

क· γάλα γάλακτε γάλακτα
क· γάλα γάλακτε γάλακτα
स· γάλακτος γαλάκτοιν γαλάκτων
अ· γάλακτι γαλάκτοιν γάλαξι
स· γάλα γάλακτε γάλακτα

१७३ । पुलिङ्ग संज्ञा παιδ कर्ता और सम्बोधन के एकवचन और अधिकरण के बहुवचन में δ को छोड़ती है ।

क· παῖς παῖδε παῖδες
क· παῖδα παῖδε παῖδας
स· παιδὸς παιδοῖν παιδῶν
अ· παιδὶ παιδοῖν παισὶ
स· παῖ παῖδε παῖδες

१७४ । पुलिङ्ग संज्ञा ποδ कर्ता और सम्बोधन के एकवचन में οδ को ου करदेती है ।

क· ποὺς πόδε πόδες
क· πόδα πόδε πόδας
स· ποδὸς ποδοῖν ποδῶν

अ· ποδί ποδοῖν ποσί

स· ποῦ πόδε πόδες

२०५। पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ὀρνιθ इ-
न दो रूपों मे θ को छुड़ाती है।

क· ὄρνις ὄρνῖθε ὄρνῖθες

क· ὄρνῖθα ὄρνῖθε ὄρνῖθας

स· ὄρνῖθος ὀρνίθοιν ὀρνίθων

अ· ὄρνῖθι ὀρνίθοιν ὄρνῖσι

स· ὄρνις ὄρνῖθε ὄρνῖθες

२०६। बहुत δ-अन्त और θ-अन्त नामों के कर्म के एकवचन में δα θα की सन्ती ν भी होसकता है। यथा

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ἐριδ।

क· ἔρις ἔριδε ἔριδες

क· ἔριν वा ἔριδα ἔριδε ἔριδας

स· ἔριδος ἐρίδοιν ἐρίδων

अ· ἔριδι ἐρίδοιν ἔρισι

स· ἔρις ἔριδε ἔριδες

२०७। πατερ μητερ θυγατερ γαστερ सम्बन्ध और अधिकरण के एकवचन में ε को छुड़ाते हैं और अधिकरण के बहुवचन में न केवल ऐसा करते हैं बरन ρ के पीछे α भी ले लेते हैं। यथा

क॰ πατήρ	πατέρε	πατέρες
क॰ πατέρα	πατέρε	πατέρας
स॰ πατρὸς	πατέροιν	πατέρων
अ॰ πατρὶ	πατέροιν	πατράσι
स॰ πατὲρ	πατέρε	πατέρες

२०८। बहुत नामों का अन्त्य व्यंजन स्वरादिक प्रत्यय के पहिले लुप्त होता है और तब प्राय दोनों स्वर संधि के नियमानुसार मिल जाते हैं।

२०९। क्लीवलिङ्ग संज्ञाएं χερατ χρεατ γηρατ τερατ τ को छुड़ाती हैं। यथा

स· ἐθνοῦς ἐθνοῖν ἐθνῶν
म्र· ἔθνει ἐθνοῖν ἔθνεσι
स· ἔθνος ἔθνη ἔθνη

२१३। स्त्रीलिङ्ग संज्ञाएं αἰδο φειδο केवल एकवचन की होती हैं स्वरादिक प्रत्ययों में संधि होता है और सम्बोधन में οι होता हैं। यथा

क· αἰδώς क· αἰδώ स· αἰδοῦς
म्र· αἰδοῖ स· αἰδοῖ

२१४। जिन नामों के अन्त में ι वा υ है उन के केवल कर्त्ता कर्म सम्बोधन के बहुवचन में संधि होता है। और उन के कर्म के एकवचन में प्राय ν प्रत्यय लगता है यथा

पुलिङ्ग संज्ञा ἰχθυ।

क· ἰχθὺς ἰχθύε ἰχθῦς
क· ἰχθὺν ἰχθύε ἰχθῦς
स· ἰχθύος ἰχθύοιν ἰχθύων

अ· ἰχθύι	ἰχθύοιν	ἰχθύσι
स· ἰχθύ	ἰχθύε	ἰχθύς

२२५। परन्तु साधारण भाषा में इन नामों का ι और υ कर्त्ता कर्म्म सम्बोधन के एकवचन को छोड़के और सब रूपों में ε बन जाता है और तब अधिकरण के एकवचन में भी संधि होता है। और पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग नामों के सम्बन्ध के ος और οιν का ο दीर्घ होता है। यथा

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा πολι।

क· πόλις	πόλεε	πόλεις
क· πόλιν	πόλεε	πόλεις
स· πόλεως	πόλεων	πόλεων
अ· πόλει	πόλεων	πόλεσι
स· πόλι	πόλεε	πόλεις

वर्ज्जसंज्ञा ἄστυ।

क· ἄστυ	ἄστεε	ἄστη
क· ἄστυ	ἄστεε	ἄστη
स ἄστεος	ἀστέοιν	ἀστέων

अ·ἄστει ἀστέοιν ἄστεσι
स·ἄστυ ἄστεε ἄστη

२१६। जिन नामों के अन्त में ευ है उन का ευ वैसाही अधिकरण के बहुवचन को छोड़के और सब उक्त रूपों में ε होता है। किन्तु सम्बन्ध के केवल एकहीवचन के प्रत्यय का ο दीर्घ होताहै। और कर्म्म के बहुवचन में प्राय सन्धि नहीं होता है। और कर्म्म के एकवचन का प्रत्यय α है। यथा

क·βασιλεύς βασιλέε βασιλεῖς
क·βασιλέα βασιλέε βασιλεῖς वा βασιλέας
स·βασιλέως βασιλέοιν βασιλέων
अ·βασιλεῖ βασιλέοιν βασιλεῦσι
स·βασιλεῦ βασιλέε βασιλεῖς

अथ द्वितीय प्रकार के प्रत्यय।

२१७। द्वितीयप्रकार की सब संज्ञाओं के अन्तमें ο है और उन के प्रत्यय ο से मि·

लके ऐसे होतेहैं।

	एकवचन		द्विवचन	बहुवचन	
	पुरुष और स्त्री क्लीब		तीनों लिङ्ग	पुरुष और स्त्री	क्लीब
कर्त्ता	oς	oν	ω	oι	α
कर्म्म		oν	ω	ooς	α
सम्ब		ou	oιν		ων
कृदि		ω	oιν	oις	
सम्बो	ε	oν	ω	oι	α

२१८। और विचार करने से देख पड़ता है कि oς ω ω oιν ooς α ων oις और कर्म्म का oν ये प्रत्यय पहिले प्रकार के प्रत्ययों के साथ o मिलने से बने हैं। परन्तु क्लीव लिङ्ग का oν और ou ε oι ये प्रत्यय कहां से आये हैं सो स्पष्ट नहीं है। केवल ou के विषय में जान पड़ता है कि मूल रूप oσιo था और पीछे σι लय हुआ।

अथ उदाहरण।

२१९। पुल्लिङ्ग संज्ञा ἀνθρωπό।

क॰ ἄνθρωπος	ἀνθρώπω	ἄνθρωποι
क॰ ἄνθρωπον	ἀνθρώπω	ἀνθρώπους
स॰ ἀνθρώπου	ἀνθρώποιν	ἀνθρώπων
सं॰ ἀνθρώπῳ	ἀνθρώποιν	ἀνθρώποις
स॰ ἄνθρωπε	ἀνθρώπω	ἄνθρωποι

२२०। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ὁδό।

क॰ ὁδὸς	ὁδὼ	ὁδοὶ
क॰ ὁδὸν	ὁδὼ	ὁδοὺς
स॰ ὁδοῦ	ὁδοῖν	ὁδῶν
सं॰ ὁδῷ	ὁδοῖν	ὁδοῖς
स॰ ὁδὲ	ὁδὼ	ὁδοὶ

२२१। क्लीबलिङ्ग संज्ञा φυλλο।

क॰ φύλλον	φύλλω	φύλλα
क॰ φύλλον	φύλλω	φύλλα
स॰ φύλλου	φύλλοιν	φύλλων
सं॰ φυλλῷ	φύλλοιν	φύλλοις
स॰ φύλλον	φύλλω	φύλλα

२२२। $\theta\varepsilon o$ का सम्बोधन $\theta\varepsilon\varepsilon$ नहीं वरन $\theta\varepsilon o\acute{s}$ है।

२२३। जिन नामों के अन्तमें εo और oo है उन में से बहुतों में नियमानुसार संधि होता है किन्तु क्लीवलिङ्ग के कर्त्ता आदि के बहुवचन के $\varepsilon\alpha$ और $o\alpha$ दोनों α होतेहैं।

पुलिङ्ग संज्ञा νoo।

क॰	νοῦς	νῶ	νοῖ
क॰	νοῦν	νῶ	νοῦς
स॰	νοῦ	νοῖν	νῶν
सं॰	νῷ	νοῖν	νοῖς
स॰	νοῦ	νῶ	νοῖ

क्लीवलिङ्ग संज्ञा ὀστεο।

क॰	ὀστοῦν	ὀστῶ	ὀστᾶ
क॰	ὀστοῦν	ὀστῶ	ὀστᾶ
स॰	ὀστοῦ	ὀστοῖν	ὀστῶν
सं॰	ὀστῷ	ὀστοῖν	ὀστοῖς
स॰	ὀστοῦν	ὀστῶ	ὀστᾶ

क. μαθητὴν μαθητὰ μαθητὰς
स. μαθητοῦ μαθηταῖν μαθητῶν
अ. μαθητᾷ μαθηταῖν μαθηταῖς
स. μαθητὰ μαθητὰ μαθηταὶ

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ψυχα।

क. ψυχὴ φυχὰ φυχαὶ
क. ψυχὴν φυχὰ φυχὰς
स. ψυχῆς φυχαῖν φυχῶν
अ. ψυχῇ φυχαῖν φυχαῖς
स. ψυχὴ φυχὰ φυχαὶ

२२९। और थोड़ी स्त्रीलिङ्ग α– अन्त संज्ञाएं केवल सम्बन्ध और अधि करण के एकव-चन में α को η कर देते हैं और किसी रूप में नहीं। यथा

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा δοξα

क. δόξα δόξα δόξαι
λόξαν δόξα δόξας

स॰ δόξῃς	δόξαιν	δοξῶν
अ॰ δόξῃ	δόξαιν	δόξαις
स॰ δόξα	δόξα	δόξαι

द्वादश अध्याय। नियमविरुद्ध संज्ञापद।

२३०। ἐγω—μο—νω—ἡμε।

क॰ ἐγω	νῶι वा νὼ	ἡμεῖς
क॰ με वा ἐμὲ	νῶι वा νὼ	ἡμᾶς
स॰ μου वा ἐμοῦ	νῶϊν वा νῷν	ἡμῶν
अ॰ μοι वा ἐμοῖ	νῶϊν वा νῷν	ἡμῖν

२३१। σο—σφω—ὑμε।

क॰ σὺ	σφῶϊ वा σφὼ	ὑμεῖς
क॰ σε	σφῶϊ वा σφὼ	ὑμᾶς
स॰ σου	σφῶϊν वा σφῷν	ὑμῶν
अ॰ σοι	σφῶϊν वा σφῷν	ὑμῖν

२३२। ὁ (सो)—σφω—σφε।

		पु॰ बा॰ स्त्री॰	क्लीव-
क॰	σφωέ	σφεῖς	σφέα
क॰ ἑ	σφωέ	σφᾶς	σφέα
स॰ οὗ	σφωῖν	σφῶν	
अ॰ οἷ	σφωῖν	σφίσι	

कर्त्ता का एकवचन नहीं है ।

२३३ । ἀνερ ।

सब स्वरादिक प्रत्ययों के पहिले ε के स्थाने δ रखना है और अधिकरण के बहुवचन में न केवल ऐसा करना है बरन ρ के पीछे α भी लेना है । यथा

क॰ ἀνήρ	ἄνδρε	ἄνδρες
क॰ ἄνδρα	ἄνδρε	ἄνδρας
स॰ ἀνδρός	ἀνδροῖν	ἀνδρῶν
अ॰ ἀνδρί	ἀνδροῖν	ἀνδράσι
सं॰ ἄνερ	ἄνδρε	ἄνδρες

२३४ । क्लीवलिङ्ग संज्ञाएं γονατ—γονυ । δορατ—δορυ । γονύ और δορυ निष्प॰

न्यप रूपों में होताहै ।

γονατ और δοραϲ और सब रूपों में ।

२३५ । γυναιχ

कर्त्ता के एकवचन में न केवल ς प्रत्यय को छुड़ाताहै वरन χ को भी छुड़ाके αι को η से बदल देताहै ।

२३६ । Δ ι F

एकही वचन में होताहै और कर्त्ता और सम्बोधन में Ζ ευ बन जाता है ।

२३७ । स्त्रीलिङ्ग संज्ञा χλειδ

के कर्म्म के बहुवचनमें δ छूटके χλειϲ भी हो सकताहै ।

२३८ χυν – χυον ।

χυον कर्त्ता और सम्बोधन के एकवचन में होताहै ।

χυν और सब रूपों में ।

२३९ । μαρτυρ ।

कर्त्ता के एकवचन में μαρτυς होताहै और कर्म्म के एकवचन में μαρτυν भी हो सकताहै।

२४०। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ναF के रूप ऐसे होते हैं।

क॰ ναῦς	νῆε	νῆες
क॰ ναῦν	νῆε	ναῦς
स॰ νεώς	νεοῖν	νεῶν
अ॰ νηΐ	νεοῖν	ναυσί
स॰ ναῦ	νῆε	νῆες

२४१। क्लीवलिङ्ग संज्ञा πυρ—πυρο।

πυρ एकवचन में और द्विवचन में होता है।

πυρο बहुवचन में।

२४२। क्लीवलिङ्ग संज्ञा ὑδατ—ὑδωρ

ὑδωρ मिश्रान्त रूपों में होताहै।

ὑδατ और सब रूपों में।

२४३। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा χεερ

सम्बन्ध और अधिकरण के द्विवचन और अधि-करण के बहुवचन में χεο होता है।

२४४। क्लीवलिङ्ग संज्ञा ωτ

निष्प्रत्यय रूपों में ०ʊ̄ς होता है।

त्रयोदश अध्याय–विशेषणों के रूप।

२४५। प्रत्येक विशेषण मानों तीन संज्ञाओं का समूह है। कितने विशेषण केवल पहिले प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं कितने केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं कितने दूसरे और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं और कितने पहिले और तीसरे प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं।

प्रथम भाग।

अथ उन विशेषणों का वर्णन जो केवल पहिले प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं।

२४६। अथ उदाहरण।

२४८। जिन तरवर्थवाचक विशेषणों के अन्तमें ον है वे कर्म के एकवचन और कर्त्ता कर्म सम्बोधन के बहुवचन में ν को छुड़ा सकते हैं तब संधि होताहै। यथा

χρειττον।

	पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग क्लीव		तीनों लिङ्ग
क.	χρείττων	-ττον	χρείττονε
क.	χρείττονα वा χρείττω	-ττον	χρείττονε
स.	χρείττονος		χρειττόνοιν
ग्र.	χρείττονι		χρειττόνοιν
स.	χρείττον		χρείττονε

पु वा स्त्री	क्लीव
χρείττονες वा χρείττους	-ττονα वा ττω
χρείττονας वा χρείττους	-ττονα वा ττω
χρειττόνων	
χρείττοσι	
χρείττονες वा χρείττους	-ττονα वा ττω

द्वितीय भाग।

अथ अन्तविशेषणों का वर्णन जो केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं

२४९। वस्तुतः o-अन्त विशेषण ऐसे होते हैं। यथा ἡσυχο।

	उभा स्त्री	क्लीव	तीनों लि०	उभास्त्री	क्लीव
क०	ἥσυχος	ἥσυχον	ἡσύχω	ἥσυχοι	ἥσυχα
क०	ἥσυχον		ἡσύχω	ἡσύχους	ἥσυχα
स०	ἡσύχου		ἡσύχοιν	ἡσύχων	
अ०	ἡσύχῳ		ἡσύχοιν	ἡσύχοις	
स०	ἥσυχε	ἥσυχον	ἡσύχω	ἥσυχοι	ἥσυχα

२५०। थोड़े विशेषण o-अन्त नहीं वरन o को दीर्घ करके ω-अन्त होते हैं। यथा ἵλεω प्रसन्न।

	उभास्त्री	क्लीव	तीनों लि०	उभास्त्री	क्लीव लिङ्ग
क०	ἵλεως	ἵλεων	ἵλεω		ἵλεω
क०	ἵλεων		ἵλεω	ἵλεως	ἵλεω

स· ἵλεω ἱλεῷν ἵλεων
ग्र· ἱλεῷ ἱλεῷν ἵλεως.
स· ἵλεως ἵλεων ἵλεω ἵλεω

तृतीय भाग।

ग्रथ उन विशेषणों का वर्णन जो दूसरे और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं।

२५१। ये सब विशेषण पुलिङ्ग और क्लीव· लिङ्ग में दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं और स्त्रीलिङ्ग में तीसरे प्रकार के प्रत्यय।

२५२। इन सब विशेषणों को हम सुबीता के निमित्त ο- ग्रन्त तो कहते हैं परन्तु सच पूछो तो उन के पुलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग ο- ग्रन्त हैं और उन के स्त्रीलिङ्ग α- ग्रन्त। यथा सचपूछो तो दो विशेषण हैं καλο और καλα किन्तु सुबीता के लिये हम दोनों को καλο कहते हैं मानों एकही होता।

२५३ । इन विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग यदि α के पहिले ρ वा ο को छोड़के और कोई स्वर हो तो α को नहीं बदल देताहै पर यदि ο वा ρ को छोड़के और कोई व्यंजन हो तो समस्त एकवचन में α को η से बदल देता है । यथा

ο – अतिरिक्तस्वरान्वित विशेषण νεο ।

	पुंलिङ्ग	क्लीव	स्त्री॰	पुं॰क्लीव	स्त्री॰
क॰	νέος	νέον	νέα	νέω	νέα
क॰		νέον	νέαν	νέω	νέα
स॰		νέου	νέας	νέοιν	νέαιν
अ		νέῳ	νέᾳ	νέοιν	νέαιν
स॰	νέε	νέον	νέα	νέω	νέα

पुलिङ्ग	क्लीव	स्त्री
νέοι	νέα	νέαι
νέους	νέα	νέας
νέων		νέων
νέοις		νέαις
νέοι	νέα	νέαι

स॰	ἵλεω	ἱλεῷν	ἵλεων
अ॰	ἱλεῴ	ἱλεῷν	ἵλεως
स॰	ἵλεως	ἵλεων ἵλεω	ἵλεω

तृतीय भाग।

अथ उन विशेषणों का वर्णन जो दूसरे और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं।

२५१। ये सब विशेषण पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग में दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं और स्त्रीलिङ्ग में तीसरे प्रकार के प्रत्यय।

२५२। इन सब विशेषणों को हम सुबीता के निमित्त ο–अन्त तो कहते हैं परन्तु सच पूछो तो उन के पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग ο–अन्त हैं और उन के स्त्रीलिङ्ग α–अन्त। यथा सच पूछो तो दो विशेषण हैं καλο और καλα किन्तु सुबीता के लिये हम दोनों को καλο कहते हैं मानों एकही होता।

२५३। इन विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग यदि α के पहिले ρ वा ο को छोड़के और कोई स्वर हो तो α को नहीं बदल देना है पर यदि ο वा ρ को छोड़के और कोई व्यंजन हो तो समस्त एकवचन में α को η से बदल देता है। यथा

ο - अतिरिक्तस्वरान्वित विशेषण νεο।

	पुंलिङ्ग	क्लीव	स्त्री॰	पुंवाक्लीव	स्त्री॰
क॰	νέος	νέον	νέα	νέω	νέα
क॰	νέον		νέαν	νέω	νέα
स॰	νέου		νέας	νέοιν	νέαιν
स॰	νέῳ		νέᾳ	νέοιν	νέαιν
स॰	νέε	νέον	νέα	νέω	νέα

पुंलिङ्ग	क्लीव	स्त्री
νέοι	νέα	νέαι
νέους	νέα	νέας
νέων		νέων
νέοις		νέαις
νέοι	νέα	νέαι

बहुवचन

क॰ χρύσεοι χρυσοῖ χρύσεα χρυσᾶ χρύσεαι χρυσαῖ इत्यादि

चतुर्थ भाग।

अथ उनविशेषणों का वर्णन जो पहिले औ-र तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं।

२५६। इनसभों के पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग पहिले प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं और स्त्रीलिङ्ग तीसरे प्रकार के प्रत्यय। और स्त्रीलिङ्ग अपने धातुभाग को कुछ न कुछ बदलके ये प्रत्यय लगाता है।

२५७। υ-अन्त विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग υ के ει करदेता है। यथा

ἡδύ स्वादवाचक।

	पु	क्ली	स्त्री	पु॰क्ली॰	स्त्री
क॰	ἡδύς	ἡδύ	ἡδεῖα	ἡδέε	ἡδεία
क॰	ἡδύν	ἡδύ	ἡδεῖαν	ἡδέε	ἡδεία
स॰	ἡδέος		ἡδείας	ἡδέοιν	ἡδείαιν

अ· ἡδεῖ ἡδείᾳ ἡδέοιν ἡδείαιν

स· ἡδὺ ἡδεῖα ἡδέε ἡδεία

पु क्ली स्त्री

ἡδεῖς ἡδέα ἡδεῖαι

ἡδεῖς ἡδέα ἡδείας

ἡδέων ἡδειῶν

ἡδέσι ἡδείαις

ἡδεῖς ἡδέα ἡδεῖαι

२५८। सब ντ-अन्त क्रिया के विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग ντ को σ बनाके पूर्व्वगतस्वर को बढ़ाना है अर्थात् αντ को ασ εντ को εισ οντ को ουσ करदेताहै। और उस के सम्बन्ध और अधिकरण के एकवचन में α η से बदल जाताहै। यथा

२ लड़ के विशेषण अ·३ का प्रयोग πραξαντ।

पु	क्ली·	स्त्री·	द्विवचन	
πράξας	-ξαν	-ξασα	-ξαντε	-ξασα
πράξαντα	-ξαν	-ξασαν	-ξαντε	-ξασα

बहुवचन

क. χρύσεοι χρυσοῖ χρύσεα χρυσᾶ
χρύσεαι χρυσαῖ इत्यादि

चतुर्थ भाग।

अथ उनविशेषणों का वर्णन जो पहिले और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं।

२५६। इनसभों के पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग पहिले प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं और स्त्रीलिङ्ग तीसरे प्रकार के प्रत्यय। और स्त्रीलिङ्ग अपने अन्तभाग को कुछ न कुछ बदलके ये प्रत्यय लगाताहै।

२५७। υ-अन्त विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग υ को ει करदेताहै। यथा

ἡδυ स्वादवाचक।

	पु	क्ली	स्त्री	पु.क्ली.	स्त्री
क.	ἡδύς	ἡδύ	ἡδεῖα	ἡδέε	ἡδεία
क.	ἡδύν	ἡδύ	ἡδεῖαν	ἡδέε	ἡδεία
स.	ἡδέος		ἡδείας	ἡδέ[illegible]	

सं॰ ἡδεῖ ἡδείᾳ ἡδέοιν ἡδείαιν

स॰ ἡδὺ ἡδεῖα ἡδέε ἡδεία

पु	क्ली	स्त्री
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδεῖαι
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδείας
ἡδέων		ἡδειῶν
ἡδέσι		ἡδείαις
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδεῖαι

२५८। सब ντ-अन्त क्रिया के विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग ντ को σ बनाके पूर्वगनन्तर को बढ़ाना है अर्थात् αντ को ασ εντ को εισ οντ को ουσ करदेते हैं। और उन के सम्बन्ध और अधिकरण के एकवचन में α η से बदल जाता है। यथा,

१ लङ् के विशेषण आत्मने॰ परस्मैपद πραξαντ।

पु	क्ली॰	स्त्री॰	पु॰ क्ली॰	स्त्री
πράξας	-ξαν	-ξασα	-ξαντε	-ξασα
πράξαντα	-ξαν	-ξασαν	-ξαντε	-ξασα

ष·	πράξαντος -ξάσης	-ξάντοιν -ξάσαιν
ञ·	πράξαντι -ξάση	-ξάντοιν -ξάσαιν
स·	πράξαν -ξασα	-ξαντε ξασα

पु·	क्लीव	स्त्री·
-ξαντες	-ξαντα	-ξάσαι
-ξαντας	-ξαντα	-ξάσας
-ξάντων		-ξασῶν
-ξασι		-ξάσαις
-ξαντες	-ξαντα	-ξάσαι

२ लुङ् का विशेषण भाव λεχθεντ ।

	पु·	क्लीव	स्त्री·	पु·पा·क्ली·	स्त्री·
प्र·	λεχθεὶς	-θὲν	-θεῖσα	-θέντε	-θείσα
द्वि·	λεχθέντα	-θὲν	-θεῖσαν	-θέντε	-θείσα
ष	λεχθέντος		-θείσης	-θέντοιν	-θείσαιν
ञ·	λεχθέντι		-θείση	-θέντοιν	-θείσαιν
स·	λεχθὲν		-θεῖσα	-θέντε	-θείσα

पु·	क्लीव·	स्त्री
-θέντες	-θέντα	-θεῖσαι

-θεντας -θέντα -θείσαις

θέντων θεισῶν

θεῖσι -θείσαις

-θέντες -θέντα -θεῖσαι

लट् के विशेषणभावका पश्चेयद् βαινοντ

क॰ βαίνων -νον -νουσα	-νοντε -νούσα
क॰ βαίνοντα -νον -νουσαν	-νοντε -νούσα
स॰ βαίνοντος -νούσης	-νόντοιν -νούσαιν
अ॰ βαίνοντι -νούσῃ	-νόντοιν -νούσαιν
स॰ βαίνον -νουσα	-νοντε -νούσα

-νοντες -νοντα -νουσαι

-νοντας -νοντα -νούσας

-νόντων -νουσῶν

-νουσι -νούσαις

-νοντες -νοντα -νουσαι

२५५। αντ-अन्त विशेषण παντ भी वैसाही होता है। यथा

प्र·	πᾶς πᾶν πᾶσα	πάντε πάσα
द्वि·	πάντα πᾶν πᾶσαν	πάντε πάσα
तृ·	παντός πάσης	πάντοιν πάσαιν
च·	παντί πάσῃ	πάντοιν πάσαιν
सं·	πᾶν πάσα	πάντε πάσα

πάντες πάντα πάσαι
πάντας πάντα πάσας
πάντων πασῶν
πᾶσι πάσαις
πάντες πάντα πάσαι

२६० । और ουτ-अन्त विशेषण ἑκοντ भी वैसाही होताहै । यथा

प्र· ἑκων ἑκὸν ἑκοῦσα | ἑκὸντε ἑκοῦσα |
ἑκὸντες ἑκοντα ἑκοῦσαι इत्यादि

२६१ । परन्तु εντ-अन्त विशेषणों का जो क्रिया के विशेषण नहीं हैं स्त्रीलिङ्ग εντ को εσσ से बदल देताहै ।

यथा αἱματοεντ ।

क॰ αἱματόεις -τόεν-τόεσσα|τόεντε-τοέσσα|-τόεντες-τόεντα-τόεσσαι इत्यादि ।

२९२ । μελαν ταλαν τερεν का स्त्रीलिङ्ग α को αι और ε को ει करदेते हैं । यथा

क॰	μέλας - λαν - λαινα	-λανε -λαίνα
क॰	μέλανα-λαν-λαιναν	-λανε -λαίνα
तृ॰	μέλανος - λαίνης	-λάνοιν-λαίνοιν
ग॰	μέλανι - λαίνῃ	-λάνοιν-λαίναιν
सं॰	μέλαν - λαινα	- λανε -λαίνα

-λανες - λανα - λαιναι
-λανας - λανα -λαίνας
-λανων -λαινῶν
-λασι - λαίναις
-λανες -λανα - λαιναι

२९३ । οτ-अन्त क्रिया के विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग οτ के स्थाने υι बना होताहै । यथा

२ लिङ्ग का विशेषण भाव εἰδοτ।

क॰	εἰδώς	εἰδός	εἰδυῖα	εἰδότε	εἰδυία
क॰	εἰδότα	εἰδός	εἰδυῖαν	εἰδότε	εἰδυία
स॰	εἰδότος		εἰδυίας	εἰδότοιν	εἰδυίαιν
स॰	εἰδότι		εἰδυίᾳ	εἰδότοιν	εἰδυίαιν
सं॰	εἰδός		εἰδυῖα	εἰδότε	εἰδυία

εἰδότες εἰδότα εἰδυῖαι
εἰδότας εἰδότα εἰδυίας
εἰδότων εἰδυιῶν
εἰδόσι εἰδυίαις
εἰδότες εἰδότα εἰδυῖαι

चउदवां अध्याय — नियमविरुद्ध विशेषण।

२६५। πολυ——πολλο। μεγα——μεγαλο।

πολυ और μεγα पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग के कर्त्ता और कर्म्म के एकवचन में होतेहैं। πολλο और μεγαλο

और सब रूपों में । यथा

क॰ πολύς πολὺ πολλή | πολλώ πολλά
कृ॰ πολύν πολὺ πολλήν | πολλώ πολλά

πολλοί πολλά πολλαί
πολλους πολλά πολλάς इत्यादि

क॰ μέγας μέγα μεγάλη | μεγάλω μεγάλα
कृ॰ μέγαν μέγα μεγάλην | μεγάλω μεγάλα

μεγαλοι -λα -λαι इत्यादि
- λους -λα -λας

२८५ । ἕν — μιο ।

ἕν पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग में होता है ।
μιο स्त्रीलिङ्ग में । यथा

क॰	εἷς	ἕν	μια
कृ॰	ἕνα	ἕν	μίαν
स॰	ἑνός		μίας
भ॰	ἑνί		μίᾳ
स॰	ἕν		μία

२९९ δυο और ἀμφο

द्विवचनमें केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं। परन्तु इस से अधिक δυο कर्ता और कर्म्म में वैसाही रह भी सकता है अर्थात् δύο। और सम्बन्ध और अधिकरण में बहुवचन के पहिले प्रकार के प्रत्यय भी लग सकता है अर्थात् δυῶν δυσί।

२९७। τρι

के पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग कर्त्ता के ιε और कर्म्म के ια दोनों को ει बनाते हैं। यथा

	पु और स्त्री	क्लीब
क॰	τρεῖς	τρία
क॰	τρεῖς	τρία
स॰	τριῶν	
अ॰	τρισί	
स॰	τρεῖς	τρία

२९८ τετταρ

समासों में τετρα होता है और जब समा

स में नहीं आता है तब साधारण भाषा में τεσσαρ होता है ।

२६९ । τιν

का ν क्लीवलिङ्ग के निष्प्रत्यय रूपों में लुप्त होता है । यथा

	पु० और स्त्री	क्ली	तीनों लिङ्ग	पु० और स्त्री०	क्लीव
क०	τις	τι	τινε	τινες	τινα
क०	τινα	τι	τινε	τινας	τινα
स	τινος		τινοιν	τινων	
अ	τινι		τινοιν	τισι	

२७० । αὐτο ἐκεινο ὁ (जो) το τουτο ἀλλο के क्लीव लिङ्ग के कर्त्ता और कर्म के एकवचन में चाहता था कि ν के स्थाने τ प्रत्यय लगे जैसा बहुत संस्कृत सर्वनामों में त् लगता है । परन्तु यह τ लुप्त हुआ है । यथा

क० ἄλλος ἄλλο ἄλλη ἄλλω ἄλλα
क० ἄλλον ἄλλο ἄλλην ἄλλω ἄλλα

ἄλλοι ἄλλα ἄλλαι
ἄλλους ἄλλα ἄλλας इत्यादि

२७१ । το——ὁ (तो) ।

ὁ पुलिङ्ग ओर स्त्रीलिङ्ग के कर्त्ता के एकवचन ओर बहुवचन में होता है । το ओर सब रूपों में । ओर इस से अधिक पुलिङ्ग का प्रत्यय ς लुप्त होताहै जैसा संस्कृत में सः नहीं आन स होता है। यथा

क॰	ὁ	τὸ	ἡ	τώ	τά	οἱ	τά	αἱ
क॰	τον	τὸ	τὴν	τω	τὰ	τοὺς	τὰ	τὰς
स॰	τοῦ		τῆς	τοῖν	ταῖν	τῶν		τῶν
स॰	τῷ		τῇ	τοῖν	ταῖν	τοῖς		ταῖς

२७२ । αὐτο—οὑτο—ταυτο—τουτο ।

αὐτο स्त्रीलिङ्ग के कर्त्ता के एकवचन ओर बहुवचन में होताहै ।

ταυτο स्त्रीलिङ्ग के इन रूपों ओर सम्बन्ध के बहुवचन को छोड़के ओर सब

रूपों में और क्लीवलिङ्ग के कर्त्ता और कर्म्म के बहुवचन में होता है।

οὕτο पुलिङ्ग के कर्त्ता के एकवचन और बहुवचन में होता है।

τουτο पुलिङ्ग के और सब रूपों में और स्त्रीलिङ्ग के सम्बन्ध के बहुवचन में होता है और क्लीवलिङ्ग के उन सब रूपों में जिनमें ταυτο नहीं होता है। यथा

क॰ οὗτος τοῦτο αὕτη		τούτω ταύτα	
क॰ τοῦτον τοῦτό ταύτην		τούτω ταύτα	
स॰ τούτου ταύτης		τούτοιν ταύταιν	
अ॰ τούτῳ ταύτῃ		τούτοιν ταύταιν	

οὗτοι ταῦτα αὗται
τούτους ταῦτα ταύτας
τούτων τούτων
τούτοις ταύταις

६७३। δειν

के तीनों लिङ्ग के कर्त्ता और कर्म्म के एक॰

वचन में α प्रत्यय लगता है। यथा

क॰ δεῖνα	δεῖνε	δεῖνες δεῖνα
क॰ δεῖνα	δεῖνε	δεῖνας δεῖνα
स॰ δεῖνος	δείνοιν	δείνων
अ॰ δεῖνι	δείνοιν	δεῖσι

२७४। πέντε से ले के ἑκατόν तक सब संख्यावाचक विशेषण और जितने संख्यावाचक विशेषण इन के मिलाने से बने हुए हैं उन सभों के वेही रूप रहते हैं और कोई रूप उन का नहीं होता है।

पञ्चदश अध्याय— उपसर्गों का वर्णन।

२७५। उपसर्गों का मूल अर्थ प्रायः समासों में मिलता है परन्तु समासों में भी और जब सुलग आते हैं तब भी यह अर्थान्तराधिक बदल जाता है।

२७६। ἀμφί

का मूल अर्थ दोनों ओर है यथा ἀμφιλο-
γο जिस की दोनों ओर बात हो सकती है
अर्थात् सन्दिग्ध । परन्तु बहुत शब्दों में उ-
सका अर्थ चारों ओर है यथा ἀμφι और
ἕ (पहिन) मिलके ἀμφιε होता
है जिसका अर्थ है अपनी चारों ओर पहिन-
ना अर्थात् ओढ़ना ।

ἀμφί अलग होके प्राय कर्म्म के साथ
आताहै और उस का अर्थ है पास वा लग-
भग यथा οἱ ἀμφὶ τὸν Παῦλον जो
लोग पौल के संग थे वा हैं ।

७७ । ἀνά

का मूल अर्थ है ऊपर की ओर यथा
ἀναστα उठना ἀναβα चढ़ना ἀνα-
τελ उगना । इस से फिरने का अर्थ
निकला है क्योंकि इस संसार की दशा
नदी के समान है जो सदा नीचे की ओर

चली जाती है यथा ἀναζα फिर जीना ἀναγεννα फिर से जन्माना । इससे फिर २ करने और इससे अच्छी रीति से करने का अर्थ निकलताहै । यथा ἀνακριν ठीक २ विचार करना ἀναγνο फिर २ जानलेना अर्थात् पढ़ना ।

ἀνα अलग होके प्राय कर्म्म के साथ आताहै और उसका अर्थ प्राय नीचे से लेके ऊपरतक अर्थात् सम्पूर्ण किसी देश वा काल में होताहै यथा ἀνὰ χώραν समस्त देश में ἀνα νύκτα समस्त रात में इस से प्रत्येकता का अर्थ निकलता है यथा ἀνὰ ἑκατὸν सौ २ करके ।

२७८। ἀντι

का मूल अर्थ सम्मुख है यथा ἀντι παρερχ साम्हने सेचला जाना । इस से बदले का अर्थ निकलता है यथा ἀντι

λυτρο अर्थात् छूटने का मोल । और सादृश्य का अर्थ यथा ἀντιτυπο जो तुल्य मूर्ति का है । परन्तु प्राय उस का अर्थ विरोध का है यथा ἀντιλεγ अर्थात् विरुद्ध कहना ἀντιταγ अर्थात् विरोध में रहना। ἀντι अलग होके केवल सम्बन्ध के साथ आता है और उस के उक्त सब अर्थ होते हैं यथा χαριν αντι χαριτος कृपा के तुल्य कृपा ।

२७१ । ἀπό

का मूल अर्थ दूर की ओर है यथा ἀπο-βαλ दूर फेंकदेना ἀποτεμ काटनिकालना । इससे काम को समाप्त करके छोड़ने का अर्थ निकलता है यथा ἀπολαβ पूरा पाना । और फेरने का भी अर्थ यथा ἀπ-οδο फेरदेना । ἀπο अलगहोके सम्बन्धाही के साथ आता है और उस का अर्थ से है यथा ἀπ' ἐμοῦ मुझसे ।

ले आना। कभी २ सम्पूर्णता का अर्थ उस
में है यथा εἰσακοῦ ऐसा सुनना कि
उसके अनुसार करे भी।

εἰς अलग होके कर्म्महि के साथ आता
है और उसके दो अर्थ हैं

१। स्थान में प्रवेश करना यथा εἰς τὴν
οἰκίαν ἦλθεν घरमें गया।

२। काल तक यथा εἰς τὸν αἰῶνα
सदा तक।

३। और यथा βλέφον εἰς ἡμᾶς
हमारी ओर देख।

४। अभिप्राय यथा εἰς τί, किस लिये
εἰς τὸ καταβαίνειν उतरने के
लिये।

२८२। ἐκ

स्वर के पहिले ἐξ होता है और उस
का मूल अर्थ εἰς के विरुद्ध अर्थात्

निकलने का है। प्राय यही अर्थ मिलता है यथा ἐxβαλ निकालडालना ἐxxαλε औरों में से बुलाना ἐξoδo निकलने की यात्रा। कभी २ उस का अर्थ सम्पूर्णता का है यथा ἐξαιτε मांगके प्राप्त करना।

ἐx अलग होके सम्बन्धही के साथ आता है और उस के ये अर्थ होते हैं

१। से यथा ἐξ οὐρανοῦ स्वर्ग से ἐξ ἀρχῆς आदि से ἐξ ἀγάπης प्रेम से।

२। सम्बन्ध यथा ἐx τῆς ἀληθείας ἐστι सत्यता की ओर का है।

२८३। ἐν

का मूल अर्थ भीतर का है और समासों में प्राय यही अर्थ मिलता है यथा

ἐννυχόν रात को ἐνθε भीतर रखना ἐμβλεπ भीतर देखना ἐνυπνιο जो स्वप्न में देखा जाता है ἐντιμο जो प्रतिष्ठा में है अर्थात् प्रतिष्ठित ἐντυχ मिलके संगति करना ἐνδειχ जो भीतर है सो दिखाना ।

ἐν अलग होके अधिकरणादी के साथ आता है और उस के दो अर्थ हैं ।

१। में यथा ἐν τῷ τόπῳ उस स्थान में ἐν πολλοῖς ἀδελφοῖς बहुत भाईयों में ἐν τιμῇ εἶναι प्रतिष्ठा में हो रहना ।

२। उपाय वा द्वारा यथा ἐν πυρὶ आगसे।

२८४ । ἐπί

कामल अर्थ ऊपर का है और समासों में प्राय यही अर्थ मिलता है यथा ἐπισκ-οπο जो ऊपर होके देखता है ἐπιγειο

पृथिवी परका ἐπιχει किसी के ऊपर पड़े रहना ἐπιτρεπ किसी के ऊपर फेरना अर्थात् उसको सोंपना ἐπιφαν किसी के ऊपर दिखाई देना ἐπιθανατιο जो मारे जाने परहै ।

ἐπι अलग होके कर्म्म सम्बन्ध और अधिकरण के साथ आता है ।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस के ये अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἐπὶ τὴν θαλάσσαν περιπατεῖ वह समुद्र के ऊपर चलता है ।

२। और यथा ἐπὶ τὸν ποταμὸν ἰέναι नदी के पास जाना ।

३। विरोध यथा ἐπαναστῆναι ἐπὶ γονεῖς पितरों के विरुद्ध उठना ।

४। तक यथा ἐφ᾽ ὅσον जहां तक ἐπὶ

χρόνον कुछ काल तक ।

५। ἐπί साथ ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἐπὶ χειρῶν αἴρειν हाथों पर उठाना ἐπὶ τῆς γῆς पृथ्वी पर ἐπὶ τῆς πόλεως ἄρχειν नगर का अधिकार रखना ।

२। साम्हने यथा ἐπ' ἐμοῦ κρίνεσθαι मेरे साम्हने विचारित होना ।

३। समय में यथा ἐπὶ Ποντίου Πιλάτου पन्तय पीलात के समयमें ।

४। रीति यथा ἐπ' ἀληθείας सचमुच ।

जब अधिकरण के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἐφ' ἱματίῳ कपड़े पर ।

२। पास यथा ἐπ' αὐτοῖς उनके पास ।

३। अधिक यथा ἐπὶ πᾶσι τούτοις इनसबसे अधिक।

४। कारण यथा ἐφ' ᾧ जिसके कारणसे।

२८५। κατα

का मूल अर्थ नीचे की ओर है यथा καταβα उतरना καταγ उतारलेआना। इससे प्रभुत्व का अर्थ निकलताहै यथा κατακαυχα किसी के ऊपर घमण्ड करना। और विरोध काभी अर्थ κατα में बहुतमिलता है यथा κατακριν विरोधमें विचार करना अर्थात् दण्ड के योग्य ठहराना καταμαρτυρε विरोधमें साक्षी देना। और बहुत शब्दों में κατα केवल शब्द के अर्थ को दृढ़ कर देताहै यथा καταλυ नाश करना καταρτιδ सम्पूर्ण रूपसे जोड़ना κατασθηλο अतिस्पष्ट।

κατα अलग होके कर्म्म और सम्बन्ध के

साथ आता है। जब कर्म्म के साथ आता है तब उस के ये अर्थ हैं

१। नीचे और साथ यथा κατὰ ῥόον πλέειν धारा के साथ नावचलाना।

२। ऊपर से नीचे तक अर्थात् समस्त देश में यथा καθ' ὅλην τὴν πόλιν समस्त नगर में।

३। लगभग यथा κατ' ἐκεῖνον τὸν καιρὸν उस समयके लगभग κατὰ τὸν τοπὸν उसस्थान के पास।

४। में यथा κατ' οἶκον αὐτῶν उनके घरमें।

५। और यथा κατὰ μεσημβρίαν दक्षिणकी ओर।

६। प्रत्येक यथा καθ' ἡμέραν प्रतिदिन κατ' οἶκον घर घर κατὰ δύο दो दो।

७। अनुसार यथा κατὰ φύσιν स्वभाव के अनुसार। τὰ κατ' ἐμὲ

८। विषय यथा τὰ κατ' ἐμὲ मेरी दशा।

९। भाव यथा κατὰ σάρκα शारीरके भावसे।

१०। क्रियाका साक्षी यथा κατὰ τὸν θεὸν ईश्वर की क्रिया।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उस के ये अर्थ हैं

१। से और नीचे यथा κατὰ τοῦ κρημνοῦ ἔδραμον वे कड़ाड़े से नीचे दौड़े।

२। नीचे और पर यथा κατὰ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ ἔχεε उसने उसके सिर पर डाला।

३। एक ओर से दूसरी ओर तक यथा καθ'

ὅλης τῆς χώρας समस्त देश में।

४। विरोध यथा κατ' ἐμοῦ मेरे विरुद्ध।

५। किरिया का साक्षी। यथा ὤμοσε καθ' ἑαυτοῦ उसने अपनी किरियाखाई।

२८९। μετά

कामूल अर्थ मध्य है जिससे μεσο विशेषणभी निकलाहै। समासों में उस के ये अर्थ हैं

१। संगित्व। μεταδο सम्भागी करना।

२। पीछे। μεταμελ पश्चात्ताप करना।

३। बदलना। μετανοε मन बदलना μεταμορφο मूर्त्ति को बदलना।

μετά अलग होके प्राय कर्म्म और सम्बन्ध के साथ आताहै।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस का अर्थ प्राय पीछे है यथा μεθ' ἑξ ἡμέ-

ρας छः दिन के पीछे μετὰ τὸ ἐγερθῆναι με मेरे जगाये जाने के पीछे। जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उस का अर्थ साथ साथ है यथा μετὰ τῶν νεκρῶν मृतकों के साथ μετ᾽ ἐμοῦ मेरे साथ वा मेरी ओर।

२८०। παρά

का मूल अर्थ पास है यथा παραστα पास खड़ा होना παραῤῥυ पास से बह जाना παρακλητο जो किसी के पास बुलायागया। इससे सौंपदेने का अर्थ निकलता है यथा παραθε वा παραδο सौंप देना παραλαβ किसी के पास से पाना। और उसी मूल अर्थ से सीमा के उधर जाने का भी अर्थ निकलता है यथा παραβα वा παραπετ अपरा-

य करना παραχου आज्ञा लङ्घन करना। इस से विरोध का भी अर्थ निकलता है यथा παραιτε विरोध में मांगना वा अनङ्गीकार करना।

παρα अलग होके कर्म सम्बन्ध और अधिकरण के साथ आता है।

जब कर्म के साथ आता है तब उस के ४ अर्थ हैं

१। पास जाना। ἔρριψαν παρὰ τοὺς πόδας αὐτοῦ उन्हों ने उस के पांवों पर डाल दिया।

२। पास पास। यथा παρὰ θάλασσαν ἦλθε वह समुद्र के तीरे २ गया।

३। अधिक। ἁμαρτωλοὶ παρὰ πάντας सबसे बड़े पापी।

४। छोड़के। यथा παρ' ὃ παρελάβετε उस को छोड़के जो तुम ने पाया।

५। विरोध। παρὰ φύσιν स्वभाव के विरुद्ध।

६। कारण। παρὰ τοῦτο इस कारण से। जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं

१। पास से। παρ' αὐτοῦ ἀκηκόαμεν हमने उस से सुना है।

२। पास। οἱ παρ' αὐτοῦ उसके पास के अर्थात् घरकेलोग। जब अधिकरण के साथ आता है तब उस का अर्थ केवल निकट ही है यथा παρ' ἐμοί मेरे निकट वा मेरी समझमे।

२८८। περί

का मूल अर्थ चारों ओर है यथा περιβλεπ चारों ओर देखना περιχωρο चारों ओर का देश। इस से अधिकत्व का अर्थ निकलता है यथा περιεργο जो अधिक·

काम करनाहै περιλυπο अतिशोकित περιχλυτο अतिश्रुत अर्थात् बड़त की-र्तिमान् ।

περι अलग होके कर्म और सम्बन्ध और अधिकरण के साथ आता है ।

जब कर्म वा अधिकरण के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं ।

१। चारों ओर । τοὺς περὶ αὐτὸν καθημένους उन को जो उसकी चारों ओर बैठे थे οἱ περὶ ἐμὲ मेरे संगी लोग τὸ περὶ ἐμὲ मेरी दशा ।

२। लगभग । περὶ τὴν τρίτην ὥραν तीसरे घराटे के लगभग ।

३। विषय में । περὶ πάντα सब बातों के विषय में ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसका अर्थ प्राय विषय में है यथा περὶ οὗ γε-

γραπται जिसके विषय में लिखा है।

२८९।   προ

का मूल अर्थ आगे है। अब उस का अर्थ है आगे की ओर यथा προβα आगे जाना (इससे προβατο भेड़ निकलता है) προφα कह निकालना। कभी २ अगले समय का अर्थ उस मे है यथा προεπ आगे से कहना। कभी २ अधिक का अर्थ है यथा προαιρε एकवस्तु को दूसरे से अधिक लेना अर्थात् चुनना। कभी २ साम्हने का अर्थ है यथा προφαι को साम्हने दिखाई देता है। इस से उपकार का भी अर्थ निकलता है यथा προμαχ किसी के लिये लड़ना।

προ अलग होके सम्बन्धी के साथ आता है और उसका अर्थ आगे है चाहे देश में यथा προ προσωπου σου और कु

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके प्रायये अर्थ हैं

१। निमित्त। ὑπέρ τινος προσεύχεσθαι किसी के लिये प्रार्थना करना।

२। स्थाने। ὑπέρ τινος ἀποθνήσκειν किसी की सन्ती मरना।

२५३। ὑπο

का मूल अर्थ नीचे है यथा ὑποταγ नीचे ठहराना वा वशीभूत करना ὑπομεν नीचे रह जाना अर्थात् भार को सह लेना। इससे गोपन का अर्थ निकलता है यथा ὑποκριν कपट करना ὑποβαλ गुप्त में उभाड़ना। इस से धीरे २ करने का अर्थ निकलता है यथा ὑποπνευ धीरे २ बहना।

ὑπο अलग होके कर्म और सम्बन्ध और अधिकरण के साथ आता है।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस का अर्थ प्राय नीचे है यथा ὑπὸ τὴν συκῆν अंजीर के पेड़ तले। कभी २ समय यथा ὑπὸ τὸν ὄρθρον भोर को।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब प्राय परकर्त्तृक और अकर्म्मक क्रियाओं के कर्त्ता के साथ आता है यथा τὰ εἰρημένα ὑπό σου जो बातें तुझ से कही गयी हैं πάσχω ὑπ᾽ αὐτοῦ मैं उस से दुःख उठाता हूं।

जब अधिकरण के साथ आता है तब उस का अर्थ नीचे है।

२९४। उपसर्गान्वित क्रियाओं का आगम प्राय उपसर्ग और क्रिया के मध्य ही में आता है यथा ὑπετάγη वह वशीभूत किया गया। केवल जब निरे धातु का प्रयोग नहीं होता है तब आगम उपसर्ग

के पहिले ही आता है यथा ἐκάθευδον वे सोते थे ।
अभ्यास सदा उपसर्ग और क्रिया के मध्य में आता है यथा διαμεμενηκότες लगातार रहे हुए ।

षोडश अध्याय — और कितने अव्ययों का वर्णन ।

२९५ । १ । ἅμα अधिकरण के साथ आता है ।
२ । ἄνευ ἄχρι μέχρι πέρα सम्बन्ध के साथ आते हैं ।
३ । ἄγχι πέλας सम्बन्ध वा अधिकरण के साथ आते हैं ।
२९६ । γάρ γέ δέ δή μέν τε वाक्य या उस के किसी अङ्ग के आदि में नहीं रहा

सकते हैं। प्राय उस के पहिलेही शब्द के पीछे आते हैं।

२१७। Ἄν के विशेषकरके दो प्रकारके प्रयोग हैं।

१। वह सम्बन्धवाचक शब्दों के साथ आके उन को अधिक सन्देह वा अनिश्चयता का अर्थ देता है। यथा ὅς ἄν ἔχῃ वा ὅστις ἄν ἔχῃ जिस किसी के पास हो ὅταν ἔρχῃ जब कभी तू आवे οὗ ἄν ᾦ जहां कहीं मैं होऊं ὡς ἄν βουλεύωμεν जिस किसी प्रकार से हम चाहें। इस प्रकार से ἐάν का भी कभी २ प्रयोग होताहै।

२। वह लङ् वा १ वा २ लुङ् वा लोट् के कालभाव के साथ आके यह बताता है कि उक्त क्रिया होती वा हुईतो नहीं

परन्तु यदि और कुछ होता तो वह भी होती यथा εἰ χθὲς ἤκουον τοῦτο, οὐκ ἂν ἐποίουν οὕτως यदि मैं कल यह सुनता तो ऐसा न करता ।

२१८। Ἤ सदा तरवर्थवाचक विशेषणों के पीछे आता है यथा οὐδὲν ἕτερον ἢ λέγειν τι कुछ कहने से कुछ भिन्न नहीं अर्थात् केवल कुछ कहना । इसी अर्थ में संज्ञा के सम्बन्धकारक का भी प्रयोग हो सकता है यथा σὺ εἶ δικαιότερος ἢ ἐγὼ वा σὺ εἶ δικαιότερος ἐμοῦ तू मुझसे अधिक धर्मी है।

२१९। Καὶ के दो अर्थ हैं अर्थात् और। भी। जब उसका अर्थ है भी तब सदा उस शब्द के पहिलेही आता है जिससे विशेष सम्बन्ध रखता है यथा ἦμεν γάρ ποτε καὶ ἡμεῖς ἀνόητοι क्योंकि हम भी

इसी लिंग्लिखो ।
जब दो καί पास २ आते हैं तब उन का अर्थ है दोनों यथा καὶ ἡμεῖς καὶ ὑμεῖς हमभी और तुमभी।

३०० । Μέν का प्रयोग केवल तबही होता है जब पीछे δέ आता है वा उस्का के मन में है यथा τότε μὲν ἐδουλεύσατε εἰδώλοις· νῦν δὲ γνόντες Θεὸν κ. τ. λ. तब तो तुमने मूर्त्तिन की सेवा किई परन्तु अब ईश्वरको पहिचानके इत्यादि ।

३०१ । Μή और οὐ का केवल यही अन्तर नहीं है जो मत और नहीं के बीच में है अर्थात् μη न केवल लोट् भाव के साथ नहीं आता है वरन जहां कहीं अङ्गीकार का निश्चय नहीं है जहां

μὴ का प्रयोग होता है। यथा εἰ μὴ ἦλθον यदि मैं न आता ἵνα μὴ ἄκαρπος γένεται जिसे निष्फल न होवे।

सत्रहवां अध्याय — कितने विशेषणों का वर्णन।

३०२। Αὐτο जब समास में आता है तब उसका अर्थ आप है यथा αὐτοχειρ आपने हाथ से करनेवाला αὐτοπτα अपनी आंख से देखनेवाला। जब अलग आता है तब विशेष करके उसके कर्त्ता कारक में आप वही अर्थ है यथा αὐτὸς ἐγὼ मैं आप αὐτοὶ ὑμεῖς तुम आप αυτὸς ᾔδει τί ἤμελλε ποιεῖν वह

पहिले आताहै जहां नाम अकेला होता
है परन्तु उसके पीछे जहां कहीं आवे
तहां यह विशेषण उसके साथ आवेगा।
फिर जब तात्पर्य है कि कोई पदार्थ एक
ही है अथवा बहुतों में विशिष्ट है तब
यह विशेषण उसके साथ आता है यथा
ὁ ἥλιος सूर्य क्योंकि सूर्य एकही है
θεός कोई देव परन्तु ὁ θεός मुख्य
देव अर्थात ईश्वर। और जब विशेषण
या क्रिया के विशेषणभाव के साथ आ·
ता है तब उस का अनुवाद हिन्दी में
जो से होना आवश्यक है यथा ὁ ἐλεή-
μων यह जो दयावान है οἱ εὖ πρά-
ξαντες वे जिन्हों ने अच्छा काम
किया।

१०७। इस विशेषण के अन्त में जब

δε आता है तब उस का अर्थ है यह। यथा τάδε ये बातें।

परिशिष्ट धातु।

KTIΔ बना।

ΛΕΠ छिलका निकाल। इसी से λεπτο पतला λεπρο' कोढ़ी।

ΠΕΝ श्रमकर। इस से πονο श्रम πενητ श्रमी व दरिद्र।

॥ समाप्तम् ॥

लिखितं पंडितजनार्दनकाश्मीरी